श्री चौबीसी

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा० ब्र० संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री चौबीसी दीप अर्चना-ऋद्धि विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	151/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्यासुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	1. बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना मोबाइल-9425128817 2. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

पूज्य अम्माजी स्व. श्रीमती सूरजदेवी जैन
पूज्य बापूजी स्व. श्री चौधरी सुनीतकुमार जैन
की पावन स्मृति में
राजीवकुमार जैन ''कार्यपालन यंत्री''
श्रीमती सरिता जैन, यशराज जैन एवं
समस्त मूड़ी परिवार विदिशा (म.प्र.)
ऋतिका-अर्पित, अद्वैत जैन पुणे
ऋतु-अखिल जैन, खरगौन

अन्तर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

जिस तरह भक्तामर स्तोत्र के द्वारा श्री वृषभदेव की भक्ति दीप अर्चना के माध्यम से की जाती है उसी तरह चैतन्य चमत्कारी श्री नमिनाथ भगवान की भक्ति करने का यह नया सोपान **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य **अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज** ने प्रस्तुत कृति **'श्री चौबीसी दीप अर्चना-ऋद्धिविधान'** की रचना करके हम सबको दिया है जो कि भक्त को जन्म-जरा और मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाला एवं अतिशय पुण्य को बढ़ाने वाला है। श्रद्धा के साथ भक्ति की भावना से ४८ दीपों/अर्घ्यों के साथ अथवा एक दीप के साथ यह आराधना करने से सभी इष्ट कार्य की सिद्धि होती है।

इस कृति का प्रकाशन पूज्य मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज के स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष के उपलक्ष में किया जा रहा है। जिन लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

— बा० ब्र० संजय, मुरैना

विषय सूची (INDEX)

क्र०	विषय	पृ० क्र०
01.	मंगल मंत्र-मंगल भावना	06
02.	मंगलाचरण विनयपाठ	07
03.	पूजन पीठिका	09
04.	श्री नवदेवता पूजन	15
05.	श्री सिद्धभक्ति	19
06.	विधान स्तुति	21
07.	श्री चौबीसी दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	22
08.	श्री वृषभनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	35
09.	श्री अजितनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	50
10.	श्री शम्भवनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	65
11.	श्री अभिनन्दननाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	79
12.	श्री सुमतिनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	93
13.	श्री पद्मप्रभ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	108
14.	श्री सुपार्श्वनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	123
15.	श्री चन्द्रप्रभ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	138
16.	श्री सुविधिनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	152
17.	श्री शीतलनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	167
18.	श्री श्रेयांसनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	180
19.	श्री वासुपूज्य दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	195

क्र०	विषय	पृ० क्र०
20.	श्री विमलनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	209
21.	श्री अनन्तनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	223
22.	श्री धर्मनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	237
23.	श्री शान्तिनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	252
24.	श्री कुन्थुनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	267
25.	श्री अरनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	281
26.	श्री मल्लिनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	295
27.	श्री मुनिसुव्रतनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	310
28.	श्री नमिनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	324
29.	श्री नेमिनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	338
30.	श्री पार्श्वनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	355
31.	श्री महावीर दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	370
32.	श्री बाहुबली दीप अर्चना-ऋद्धि विधान	385
33.	महासमुच्चय जयमाला	399
34.	आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य	404
35.	मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य	404
36.	महार्घ्य	405
37.	शान्तिपाठ	406
38.	विसर्जन	407
39.	जाकर आते हैं (भजन-स्तुति)	408

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥ १॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥ २॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥ ३॥ तेरा...

===

मंगलाचरण

मंगलं भगवान्नर्हन् मंगलं सुसिद्धेश्वरः,
मंगलं श्रमणाचार्यो मंगलं साधुपाठकौ।
मंगलं जिननामानि मंगलं नवदेवता,
मंगलं शाश्वतमंत्रं मंगलं जिनशासनं॥

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधु के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग-भूप॥५॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल॥८॥

तुम पद-पंकज पूजतैं , विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय॥९॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किए, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय! जय! जय! जिनदेव॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥१८॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ॥१९॥

जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार॥२०॥

वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥

चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय ॥२२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥२३॥

मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव॥२४॥

मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय॥२५॥

मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म॥२६॥

या विधि मंगल करन तें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत॥२७॥

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)

पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्व-पापैः प्रमुच्यते॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥२॥
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु , प्रथमं मंगलं मतः॥३॥
एसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्प-णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलम्॥४॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥५॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रम् नमाम्यहं॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥७॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणकमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं...।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनइष्ट(नाथ)महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन-अष्टोत्तरसहस्र-नामेभ्यो अर्घ्यं...।

तत्त्वार्थसूत्र जी अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी-विरचित-तत्त्वार्थसूत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनस्तोत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री मानतुंगाचार्य-विरचित भक्तामरस्तोत्राय एवं समस्त जिन-स्तोत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे मुनिराजमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद्-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुः,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥ १॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्-भुत-वैभवाय॥ २॥
स्वस्त्युच् छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद् गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥ ३॥
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्य-वलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥ ४॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून् यनून मखिलान्य-यमेक एव।
अस्मिञ्ज्वलद् विमल-केवल-बोध-वह्नौ,
पुण्यं समग्र मह मेक मना जुहोमि॥ ५॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीशम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

(इति जिनेन्द्र स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

नित्या-प्रकंपाद्-भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनःपर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ १॥
कोष्ठस्थ-धान्योपम-मेकबीजं, संभिन्नसंश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ २॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद-नघ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान्-मतिज्ञान-बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ३॥
प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ४॥

जंघानलश्रेणि-फलांबु-तंतु - प्रसून - बीजांकुर - चारणाह्वाः।
नभोऽगणस्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ५॥
अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपु-र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ६॥
सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धि-मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ७॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर-पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ८॥
आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी-र्विषाविषा, दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ९॥
क्षीरं स्त्रवंतोऽत्र घृतं स्त्रवंतो, मधुस्त्रवंतोऽप्यमृतं स्त्रवंतः।
अक्षीणसंवासमहानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

(इति परमर्षिस्वस्ति मंगल विधानं परि पुष्पांजलिं...)

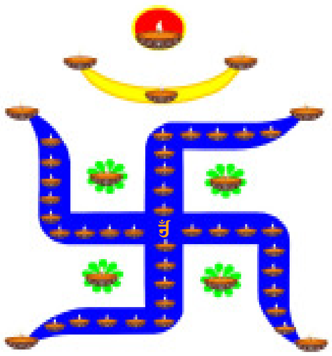

दीप अर्चना करने के लिए

स्वस्तिक बनाकर प्रत्येक बिन्दु पर एक-एक दीपक सजाते हुए ४८ मंत्रों के साथ दीप अर्चना करना चाहिए।

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिए हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥

यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं---।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री सिद्धभक्ति (प्राकृत गाथा)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥
मूलोत्तर पयडीणं, बंधोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडारया सव्वे॥
गमणागमण विमुक्के, विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं, णमो सया सव्व सिद्धाणं॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु मव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्त-सिद्धाणं अतीदाणागद-वट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्व-सिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहि-मरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

अपने परम उपकारी गुरुवर

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज

के कर कमलों में सादर समर्पित

जय बोलिए

आस्था के ईश्वर-प्रार्थना के परमेश्वर,
पूजा के प्रभु-भावना के विभु,
विश्वास के वैभव-गरिमा के गौरव,
आराधना के आराध्य-साधना के साध्य,
समाधि के सम्राट्-सम्राटों के सम्राट्,
ज्ञानी के ज्ञान-ध्यानी के ध्यान,
श्रद्धा के श्रद्धान-भक्त के भगवान्,
परम पिता परमात्मा- पंचम युग के त्राता,
ज्ञानी, ध्यानी, तपस्वी,
परम वीतरागी-परम उपकारी,
परम हितकारी, परम कल्याणी,
परम कृपालु-परम दयालु,
परम श्रद्धालु-परम धर्मालु,
प्रातः स्मरणीय-संत शिरोमणि,
चारित्र शिरोमणि-युग शिरोमणि,
सिद्धान्त शिरोमणि-अध्यात्म शिरोमणि,
ऋषियों के ऋषिराज-मुनियों के मुनिराज,
योगियों के योगीराज-श्रमणों के श्रमणराज,
आचार्यों के सरताज

परम पूज्य श्री १०८ विद्यासागरजी महाराज की जय॥

विधान स्तुति

(चौपाई)

नमो-नमो, नमो-नमो[२]
नमो-नमो चउबीस जिनम्, वृषभनाथ से वीर जिनम्॥
पावन परम वृषभभगवान्, जिनवर अजितशील गुणखान।
श्रेष्ठ जिनेश्वर शम्भवनाथ, अभिनन्दित अभिनन्दननाथ॥
नमो-नमो चउबीस जिनम् ....॥१॥
निर्मलता दें सुमति जिनेन्द्र, निर्मलतामय पद्म जिनेन्द्र
सुपार्श्वप्रभु की जय-जयकार, जिनवर चन्द्र दोष भयहार॥
नमो-नमो चउबीस जिनम् ....॥२॥
पुष्पदन्त जिनवर तीर्थेश, शीतलजिन अघहर निश्शेष।
शील सहित श्रेयांस जिनेन्द्र, वासुपूज्य जग पूजित इन्द्र॥
नमो-नमो चउबीस जिनम् ....॥३॥
हे परमेश! विमलभगवान्, अनन्तप्रभु अनन्त गुणखान।
केवलज्ञानी धर्म जिनेन्द्र, शान्ति-विनायक शान्ति जिनेन्द्र॥
नमो-नमो चउबीस जिनम् ....॥४॥
हरें कुन्थुप्रभु मायाचार, अरहनाथ सब दोष निवार।
मल्लिनाथ जिन गुणभण्डार, मुनिसुव्रत प्रभु परम उदार॥
नमो-नमो चउबीस जिनम् ....॥५॥
श्री नमिनाथ जिनेश्वरधाम, नेमिनाथ हरते अज्ञान।
पारसनाथ परमप्रभु धीर, शासन नायक जय महावीर॥
नमो-नमो चउबीस जिनम् ....॥६॥
वर्तमान के प्रभु चौबीस, इन्हें नवाएँ हम भी शीश।
जब चाहा इनका सम्मान, जिनचक्र तब रचा विधान॥
नमो-नमो चउबीस जिनम् ....॥७॥
संकट ग्रह भय चक्र विनाश, जीवन का ये करें विकास।
अतः भक्ति से करो विधान, ऋद्धि-सिद्धि पाओ वरदान॥
नमो-नमो चउबीस जिनम् ....॥८॥

===

श्री चौबीसी दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. चौथा काल जहाँ जब आए, हों चौबीसों ज्ञानी।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के स्वामी॥
सो जिनशासन के अनुयायी, सुमरें चौबीसों को।
प्रभु को सादर करके नमोऽस्तु, झुका रहे शीशों को॥ओम्...
२. नगर अयोध्या सभी जन्म लें, महापुरुष सब होते।
लेकिन काल दोष के कारण, चमत्कार कुछ होते॥
रोग शोक दुख दर्द मिटा के, होते आतम ज्ञानी।
'सुव्रत' विद्या के वरदानी, हों चौबीसों स्वामी॥ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
चौबीसी को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री चौबीसी पूजन (मात्रिक सवैया)

वृषभ अजित शम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिन चन्द्र।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य श्री विमल अनन्त॥
धर्म शान्ति कुन्थु अर मल्लि, मुनिसुव्रत नमि नेमि महान।
पार्श्व वीर प्रभु चौबीसों को, सादर पूजें करें प्रणाम॥

(दोहा)

हृदय कमल आसीन हों, तीर्थंकर चौबीस।
आतम परमातम बने, अतः झुकाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय - चौबीसी पूजनवत्)

हम लाए प्रासुक नीर, प्रभु पूजा करने॥
पाने भव सागर तीर, मुनि मन सम बनने॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

चंदन सम प्रभु के धाम, चंदन दिला रहे।
पाने चैतन्य विराम, चंदन चढ़ा रहे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

जो दे दुनियाँ के भोग, आतम स्वस्थ करें।
वो हैं पूजन के योग्य, जिनको पुंज धरें॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

आतम का शील स्वभाव, फूलों सा महके।
वह प्रकटे प्रभु की छाँव, पुष्प चढ़ा चहके॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

करके भोजन का त्याग, प्रभु का भजन करो॥
तब ही अर्पित नैवेद्य, निज का स्वाद चखो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

हम करें आरती आज, प्रभु की भली-भली।
पाने निज का साम्राज्य, आतम ज्योति जली॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

आतम पुद्गल का बन्ध, सारे द्वन्द्व करे।
प्रभु पद में खेकर गंध, ले निज गंध अरे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

तप के फल हों रसदार, मिलें विरागी को॥
हम फल लाए जिनद्वार, निज के रागी हो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

वर्तमान में गर्भ के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में जन्म के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में तपों के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में ज्ञान के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

वर्तमान में मोक्ष के, पाए जो कल्याण।
जिनवर प्रभु चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(अर्द्ध जोगीरासा)

इन्द्री कर्म विजेता नेता, मोक्षमार्ग दें आहा।
वृषभ वीर चौबीसों जिन को, करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ १॥

अवधिज्ञान के धारी देते, मन चाहा फल आहा।
वृषभ वीर चौबीसों जिन को, करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि ज्ञानी-ध्यानी, जय परमेष्ठी आहा॥
वृषभ वीर चौबीसों जिन को, करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि ज्ञानी ऋद्धीश्वर, हों तीर्थंकर आहा।
वृषभ वीर चौबीसों जिन को, करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

ऋद्धि अनंतावधि के स्वामी, बने केवली आहा।
वृषभ वीर चौबीसों जिन को, करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

कोष्टबुद्धि से कमलासन पर, हुए विराजित आहा।
वृषभ वीर चौबीसों जिन को, करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

बीजबुद्धि के बने हिमालय, धर्म दान दें आहा।
वृषभ वीर चौबीसों जिन को, करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी दीपक होते, तीर्थंकर जी आहा।
वृषभ वीर चौबीसों जिन को, करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

(सखी)

संभिन्नश्रोतृ गुण धर्त्ता, वो मोक्ष महासुख कर्त्ता।
श्री वृषभ-वीर अरिहंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

हैं स्वयंबुद्ध ऋषिराजे, प्रभु हृदय जिनेन्द्र विराजे।
श्री वृषभ-वीर अरिहंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

प्रत्येकबुद्ध परमेश्वर, नित हुई वंदना घर-घर।
श्री वृषभ-वीर अरिहंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

प्रभु बोधितबुद्ध स्वभावी, हैं सदा सुखों की चाबी।
श्री वृषभ-वीर अरिहंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

प्रभु ऋजुमति ज्ञान प्रदाता, झुक रहे उन्हीं को माथा।
श्री वृषभ-वीर अरिहंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

प्रभु ज्ञान विपुलमति पाए, आदर्श वही कहलाए।
श्री वृषभ-वीर अरिहंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

प्रभु दसपूर्वों के धारी, चौंतीस अतिशयकारी।
श्री वृषभ-वीर अरिहंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

जो चौदह पूर्व विजेता, अध्यात्म विषय के नेता।
श्री वृषभ-वीर अरिहंता, जय धण्णा ते भगवंता॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

(चौपाई)

प्रभु अष्टांगनिमित्त धारते, भक्त अनंतानंत तारते।
वृषभ-वीर चौबीसों ज्ञानी, हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

ऋद्धि विक्रिया भगवन धारें, भक्तों को भव पार उतारें।
वृषभ-वीर चौबीसों ज्ञानी, हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

नर विद्याधर बने तपस्वी, निज बल प्रकटाए तेजस्वी।
वृषभ-वीर चौबीसों ज्ञानी, हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

चारणऋद्धि उन्हें पुकारे, जिन्हें भेद विज्ञान हुआ रे।
वृषभ-वीर चौबीसों ज्ञानी, हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

जिनवर प्रज्ञाश्रमणी संता, बन बैठे प्रभु सिद्ध महंता।
वृषभ-वीर चौबीसों ज्ञानी, हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

सिंहासन कमलासन धारी, तीर्थंकर हों गगन विहारी।
वृषभ-वीर चौबीसों ज्ञानी, हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

आशीर्विष की आस्था देते, मोक्षमहल का रास्ता देते।
वृषभ-वीर चौबीसों ज्ञानी, हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

दृष्टिर्विष का परम दान दें, भगवन हमको आत्मज्ञान दें।
वृषभ-वीर चौबीसों ज्ञानी, हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(दोहा)

साधु करें जो उग्र तप, करें जगत उद्धार।
वृषभ-वीर चौबीस को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

दीप्ततपों के देव हैं, तीर्थंकर जिनराज।
वृषभ-वीर चौबीस को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥

तप्ततपों के तीर्थ हैं, वीतराग सरकार।
वृषभ-वीर चौबीस को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

(अर्द्ध शंभू)

प्रभु महातपों से मोह हरें, भय मोह पाप दुख दूर करें।
प्रभु वृषभ-वीर चौबीस जिन्हें, हम नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

जिन घोरतपों के घाट रहे, संसार सिंधु से पार करें।
प्रभु वृषभ-वीर चौबीस जिन्हें, हम नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

खुद घोरगुणों की घाटी चढ़, भक्तों के हृदय विहार करें।
प्रभु वृषभ-वीर चौबीस जिन्हें, हम नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

निज घोरपराक्रम ऋद्धि धरें, चैतन्य गुणों की वृद्धि करें।
प्रभु वृषभ-वीर चौबीस जिन्हें, हम नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

शुभ घोरब्रह्मगुण ऋद्धि धरें, फिर भव से अपनी सिद्धि करें।
प्रभु वृषभ-वीर चौबीस जिन्हें, हम नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

आमर्ष-औषधि ऋद्धि धरें, सो रोग शोक दुख शान्ति करें।
प्रभु वृषभ-वीर चौबीस जिन्हें, हम नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

(हाकलिका)

खेल्ल-औषधि ऋद्धि धरें, निर्मल निर्मल तीर्थ करें।
नमो नमो चौबीस जिनं, वृषभनाथ से वीर जिनं॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

जल्ल-औषधी ऋद्धि धरें, भक्त हृदय की शुद्धि करें।
नमो नमो चौबीस जिनं, वृषभनाथ से वीर जिनं॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

विप्रुष-औषधि ऋद्धि धरें, धर्म हितैषी युक्ति करें।
नमो नमो चौबीस जिनं, वृषभनाथ से वीर जिनं॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

सर्व-औषधी नाथ धरें, आतम सुख दिन रात करें।
नमो नमो चौबीस जिनं, वृषभनाथ से वीर जिनं॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

सफल मनोबल धार रहे, धर्मों के आधार रहे।
नमो नमो चौबीस जिनं, वृषभनाथ से वीर जिनं॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

सत्य वचनबल की सिद्धि, धरकर प्रभु दें समृद्धि।
नमो नमो चौबीस जिनं, वृषभनाथ से वीर जिनं॥

ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

चौबीसों ने कायबली बन, कर्म हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्री चौबीस जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

उत्तम क्षमा क्षीरस्त्रावि धर, क्षेमंकर आहा।
ओम् ह्रीं श्री चौबीस जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

श्री सर्वज्ञ सर्पिस्त्रावि से, सिद्ध हुए आहा।
ओम् ह्रीं श्री चौबीस जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

हुए महात्मा मधुरस्रावि से, मधुर-मधुर आहा।
ओम् ह्रीं श्री चौबीस जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥
अमृतस्रावि से आगम रस, चखे आत्म आहा।
ओम् ह्रीं श्री चौबीस जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥
पा अक्षीण महानस-आलय, शरण दिए आहा।
ओम् ह्रीं श्री चौबीस जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥
वर्धमान चारित्र गुणी हों, तीर्थंकर आहा।
ओम् ह्रीं श्री चौबीस जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥
सिद्धक्षेत्र सम सिद्ध-आयतन, जिनवर हों आहा।
ओम् ह्रीं श्री चौबीस जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥
तीर्थंकर ही णमोकार हों, परमेष्ठी आहा।
ओम् ह्रीं श्री चौबीस जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

तीर्थकरों के रूप जिन, चौबीस गणधर नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

वृषभ-वीर स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

तीर्थंकर चौबीस की, जयमाला के नाम।
करें नमोऽस्तु आज हम, सफल होंय सब काम॥

(त्रिभंगी)

जय-जय तीर्थंकर, आत्म हितंकर, वर्तमान के चौबीसों।
हैं कर्म विजेता, शिवमग नेता, जाएँ मिलें निज मुक्ति सों॥
भव चक्र निवारी, परिग्रह हारी, मंगलकारी, निज भोगी।
जो शीश नवाकर, प्रभु गुण गाकर, कार्य करें तो जय होगी॥

(पद्धरि)

जय धर्म धुरन्धर वृषभनाथ, जय मृत्युंजय प्रभु अजितनाथ।
जय शम्भव सम्भव करें काम, जय अभिनन्दन आनन्द धाम॥ १॥
जय सुमति विधायक सुमतिनाथ, जय शत्रु विजेता पद्मनाथ।
जय-जय सुपार्श्व सुन्दर सुभोर, जय चन्द्रनाथ प्रभु चित्तचोर॥२॥
जय सुविधिनाथ दें सुविधिनाँव, जय शीतल प्रभु दें आत्मछाँव।
जय-जय श्रेयांस प्रभु कष्ट नाश, जय वासुपूज्य ब्रह्मा-विलास॥३॥
जय विमलनाथ हो चित बसंत, जयजय अनन्त प्रभु हो अनन्त।
जय कर्म भर्म हर धर्मनाथ, जय शान्तिप्रदाता शान्तिनाथ॥४॥

जय कुन्थुनाथ करुणा निधान, जय अरहनाथ दें मुक्ति यान।
जय मल्लिनाथ हर मद विकार, जय सुव्रतप्रभु संकट निवार॥५॥
जय दुख हर्त्ता नमिनाथ नाथ, जय वीतराग प्रभु नेमिनाथ।
जय विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ, जय ऋद्धि-सिद्धि दें वीरनाथ॥६॥

(त्रिभंगी)

हे ज्ञानप्रकाशी, ब्रह्मविलासी, हम पर भी प्रभु, दया करो॥
सबको तो तारो, भाग्य सँवारो, 'सुव्रत' को प्रभु, क्यों विसरो॥
प्रभु नाम तुम्हारे, तारण हारे, बिगड़े काम, बना जाएँ।
प्रभु अपनी जोड़ी, किसने तोड़ी, वही बनाने, गुण गाएँ॥

(सोरठा)

भोग मोक्ष दें दान, तीर्थंकर चौबीस जी।
सादर करें प्रणाम, हम तो टेकें शीश भी॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

चौबीसों जिनवर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

महिमा

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री वृषभ–वीर का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
१. श्री वृषभ वीर तीर्थंकर जी, भगवन चौबीस जिनेश्वर जी।
हो धार्मिक नेता मुक्तिवधू मंगेता, हो सबके हृदय विजेता॥श्री..
२. हों पाँच–पाँच कल्याणक जी, सो हुए पाँच जिन तीरथ भी।
दो मोक्षमार्ग हम भक्तों को कल्याणी, सो हम तो करें नमामि॥श्री..
३. चौबीसों विघ्न विनाशक हैं, भय दोष नवग्रह नाशक हैं।
दुख कालसर्प का काम रहा क्या स्वामी, बारात सजे शिव धामी॥श्री..
४. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..
५. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी–ध्यानी॥श्री..

आरती (छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
१. अष्टापद सम्मेदशिखर जी, श्री चंपापुर पावापुर जी।–२
गिरिनारी के बाबा, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
२.पुण्य धर्म से संचित ज्ञानी, तत्त्व प्रदाता केवलज्ञानी।–२
श्रद्धा के वरदानी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।–२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४.दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि–सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

१. श्री वृषभनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. वृषभनाथ पहले तीर्थंकर, धर्म प्रदाता स्वामी।
षट्कर्मों के दाता जिनवर, मोक्षमार्ग के दानी॥
इक्ष्वाकु कुल के श्री नंदन, देह सुनहरी धारी।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, मिलती मोक्ष सवारी॥ ओम्...
२. नाभिराय के राज दुलारे, मरुदेवी के नंदा।
वृषभ चिह्न पहचान आपकी, देते परमानंदा॥
अष्टापद का सर्व सिद्धवर, कूट त्याग के स्वामी।
मोक्ष गए सो करें नमोऽस्तु, 'सुव्रत' विद्या धामी॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
वृषभनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री वृषभनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

भूत भविष्यत् आज भी, आदिप्रभु का नाम।
खुशियाँ दे कमियाँ हरे, अतः नमन अविराम॥

(शुद्ध गीता)

जिन्हें सुर नर सभी पूजें, जिन्हें ऋषि संत ध्याते हैं।
जिन्हें मन में वसा करके, भगत भव पार जाते हैं॥
जिन्होंने एक झटके में, कथा संसार की त्यागी।
उन्हीं की अर्चना करने, विनत हम हैं चरण रागी॥

मरुदेवी के नन्दन वो, वही नाभि के लाला हैं।
प्रथम जिनका मिला दर्शन, जिन्होंने धर्म पाला है॥
पतित भव्यों के जो स्वामी, जिन्होंने कर्म तोड़े हैं।
उन्हीं की वन्दना करने, भगत ने हाथ जोड़े हैं॥

(दोहा)

आदि ब्रह्म आदीश हैं, आदिनाथ भगवान्।
हृदय हमारे आइए, हम पूजें धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

सभी मानव यहाँ रोगी, दुखी संसार के जल से।
करो नीरोग हम सबको, तुम्हें हम पूजते जल से॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

जलाता ताप भव का फिर, नमक भी घाव पर छिड़के।
तुम्हारी भक्ति का चंदन, हरे भव ताप बढ़-चढ़ के॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय संसार-तापविनाशनाय चंदनं...।

सभी संसार के पद तो, दिए आपद घुमाते हैं।
मिटें आपद बनें अक्षय, तुम्हें तंदुल चढ़ाते हैं॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

सुगंधी काम की पाके, भ्रमर बन मर रहे प्राणी।
तुम्हारे चरण का सौरभ, हरे दुर्वेदना-कामी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सभी पापों की जड़ रसना, रिसाने की तमन्ना है।
तुम्हें नैवेद्य कर अर्पण, हमें तुमसा ही बनना है॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

अँधेरा टिक नहीं सकता, तुम्हारा नाम सुनकर के।
करो रोशन हमारा मन, उतारें आरती झुक के॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

जलाएँ धूप कर्मों की, चढ़ाएँ धूप जो स्वामी।
वही चमकें वही महकें, वसो जिसके हृदय स्वामी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत् जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

विषैले फल सभी जग के, सुधा कह खा रहे हम तो।
प्रभु! विष वेदना हर लो, चढ़ा हम फल रहे तुमको॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवीं भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दोज कृष्ण आषाढ़ को, सर्वारथ सुर त्याग।
गर्भ वसे मरुमात के, 'जिन' से है अनुराग॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नाभिराय के आँगने, जन्म लिए भगवान्।
चैत्र कृष्ण नवमी हुई, जग में पूज्य महान्॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र श्याम नवमी दिना, बने दिगम्बर नाथ।
मोह तजा आतम भजा, जिन्हें नमें नत माथ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण में, घातिकर्म सब नाश।
बने केवली लोक ये, नम्र हुआ बन दास॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण चौदस दिना, हरे कर्म का भार।
हिमगिरि से शिवपुर गए, हम पाए त्यौहार॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(हाकलिका)

इन्द्री कर्म विजेता हैं, मोक्षमार्ग के नेता हैं।
वृषभनाथ जिनवर आदीश, हम नमोऽस्तु कर टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १॥

अवधिज्ञान के स्वामी हैं, सुंदर अंतरयामी हैं।
वृषभनाथ जिनवर आदीश, हम नमोऽस्तु कर टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि के धारी हो, बाबा अतिशयकारी हो।
वृषभनाथ जिनवर आदीश, हम नमोऽस्तु कर टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि के ईश रहे, देते आशीर्वाद रहे।
वृषभनाथ जिनवर आदीश, हम नमोऽस्तु कर टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

ज्ञान अनन्तावधि ज्ञाता, मुक्तिवधू के विख्याता।
वृषभनाथ जिनवर आदीश, हम नमोऽस्तु कर टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

कोष्टबुद्धि को धार रहे, भक्तों को भी तार रहे।
वृषभनाथ जिनवर आदीश, हम नमोऽस्तु कर टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

बीजबुद्धि के भण्डारी, श्रद्धालु के हितकारी।
वृषभनाथ जिनवर आदीश, हम नमोऽस्तु कर टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी मंत्र दिए, जिनशासन जयवंत किए।
वृषभनाथ जिनवर आदीश, हम नमोऽस्तु कर टेकें शीश॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

(जोगीरासा)

सदा-सदा संभिन्नश्रोतृ से, हरें हमारी पीड़ा।
वो संग्राम महा सेनानी, हमको लगते हीरा॥
सुनो! प्रार्थनापत्र हमारा, हम हैं भक्त तुम्हारे।
प्रथम जिनेश्वर वृषभनाथ जी, तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

आप हमें संसार मोह से, सदा सुरक्षा देते।
आप स्वयंभू आप स्वयं ही, जिनवर दीक्षा लेते॥
सुनो! प्रार्थनापत्र हमारा, हम हैं भक्त तुम्हारे।
प्रथम जिनेश्वर वृषभनाथ जी, तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

जगत कष्ट पीडा हरने को, पूज्य महाव्रत धारे।
वृषभनाथ प्रत्येकबुद्ध जी, श्री ऋषिराज हमारे॥
सुनो! प्रार्थनापत्र हमारा, हम हैं भक्त तुम्हारे।
प्रथम जिनेश्वर वृषभनाथ जी, तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

देकर साथ थामकर उँगली, चलना हमें सिखाया।
बोधितबुद्ध निरंजन हैं वो, उनमें धर्म समाया॥
सुनो! प्रार्थनापत्र हमारा, हम हैं भक्त तुम्हारे।
प्रथम जिनेश्वर वृषभनाथ जी, तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

(चौपाई)

ऋजुमति ज्ञान मनःपर्यय जो, विघ्न विनाशक देता जय को।
वृषभनाथ की जय-जय बोलो, करके नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय जो, उच्चासन दे आत्म निलय को।
वृषभनाथ की जय-जय बोलो, करके नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥
ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

दसपूर्वों के धारक योगी, योग धरो जग करो निरोगी।
वृषभनाथ की जय-जय बोलो, करके नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥
ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

चौदहपूर्वी हो विज्ञानी, सबके भाग्य विधाता स्वामी।
वृषभनाथ की जय-जय बोलो, करके नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥
ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

प्रभु अष्टांगनिमित्त निखारे, सबकी नैया पार उतारे।
वृषभनाथ की जय-जय बोलो, करके नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥
ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

ऋद्धि विक्रिया जो धर लेते, हमको मोक्ष सवारी देते।
वृषभनाथ की जय-जय बोलो, करके नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥
ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

विद्याधर नर संयमधारी, सबके भगवन अतिशयकारी।
वृषभनाथ की जय-जय बोलो, करके नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥
ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

चारणऋद्धि धरो तुम स्वामी, हमें सिद्धि सुख दो आगामी।
वृषभनाथ की जय-जय बोलो, करके नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥
ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

प्रज्ञाश्रमण जिनेश्वर राजा, हम सबके परमेश्वर बाबा।
वृषभनाथ की जय-जय बोलो, करके नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥
ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

कमलविहारी गगनविहारी, मोक्षमार्ग दो अतिशयकारी।
वृषभनाथ की जय-जय बोलो, करके नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥
ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

आशीर्विष के तुम धारी हो, दे सुख शांति संसारी को।
वृषभनाथ की जय-जय बोलो, करके नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥
ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

दृष्टिर्विष के हो भण्डारी, आगम के हो आज्ञाकारी।
वृषभनाथ की जय-जय बोलो, करके नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥
ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(दोहा)

उग्रतपों को धारकर, तार रहे संसार।
वृषभनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

दीप्ततपों को धारकर, करो जगत श्रृंगार।
वृषभनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥

तप्ततपों को धारकर, मोक्षनगर उजयार।
वृषभनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

महातपों को धारकर, सबका करो सुधार।
वृषभनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

घोरतपों को धारकर, दूर करो संहार।
वृषभनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

घोरगुणों को धारकर, घोर वेदना टार।
वृषभनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

घोरपराक्रम धारकर, चित् चैतन्य निखार।
वृषभनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

घोरब्रह्मगुण धारकर, सबको पार उतार।
वृषभनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

(सखी)

आमर्ष-औषधी ऋद्धि, दे करो स्वयं की शुद्धि।
आदीश्वर अंतर्यामी, हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

प्रभु खेल्ल-औषधी धारी, शाश्वत सुख के भण्डारी।
आदीश्वर अंतर्यामी, हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

प्रभु जल्ल-औषधी धारी, तुम रत्नों के व्यापारी।
आदीश्वर अंतर्यामी, हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

प्रभु विप्रुष-औषधि धारी, हो निज आहार विहारी।
आदीश्वर अंतर्यामी, हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

प्रभु सर्व-औषधी धारी, तुम तार रहे नर नारी।
आदीश्वर अंतर्यामी, हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

प्रभु सकल मनोबल धारी, बल साहस के दातारी।
आदीश्वर अंतर्यामी, हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

प्रभु वचन दोष हर्त्तारी, हो वचनबली उपकारी।
आदीश्वर अंतर्यामी, हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

बाहुबली सा ध्यान लगाएँ, कायबली आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

नीर-क्षीर का भेद सिखाएँ, क्षीरस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

चिदानंद घृत जैसा देते, सर्पिस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

मधुर-मधुर सा रस झलकाएँ, मधुरस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

विष जैसी विषबेल नशाएँ, अमृतस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

दें अक्षीण-महानस-आलय, महा ऋद्धि आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

वर्धमान सर्वोच्च सफल गुण, देते हो आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

सिद्ध-आयतन सिद्ध शिला दें, सिद्धालय आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

णमोकारमय साधु जनों को, नमस्कार आहा।
ओम् ह्रीं वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

तीर्थकरों के रूप आदि, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

वृषभनाथ स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥
ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

वृषभनाथ भगवान् की, महिमा अपरंपार।
पूजे जो धर ध्यान वह, राग-द्वेष से पार॥

(ज्ञानोदय)

वृषभदेव या आदिदेव जो, ब्रह्मदेव पुरुदेव रहे।
मरुदेवी या नाभिराय सुत, प्रथमदेव जिनदेव कहे॥
जिनके सहस्रनाम हुए जो, आदि प्रवर्तक कहलाए।
ऐसे पहले तीर्थंकर के, गुण गाने हम भी आए॥१॥
वृषभनाथ दसवें भव में नृप, रहे महाबल विद्याधर।
एक माह जब उम्र शेष तब, नन्दीश्वर का उत्सव कर॥
बाइस दिन की कर सल्लेखन, प्रथम स्वर्ग ललितांग हुए।
धर्मसहित ललितांग मरण कर, वज्रजंघ प्रिय पुत्र हुए॥ २॥
वज्रजंघ श्रीमति रानी ने, दो चारण मुनि सत्कारे।
जो उनके ही अंतिम सुत थे, दिए पूजकर आहारे॥
इसी समय चारों मंत्री भी, नकुल व्याघ्र वानर शूकर।
मुनि से सुनकर जनम कथा सब, खुश थे मुनि चरणा छूकर॥ ३॥
आप आठवें भव तीर्थंकर, बन जब मोक्ष विराजेंगे।
तब श्रीमति श्रेयांस बनेगी, आठों भी शिव पाएंगे॥
वज्रजंघ श्रीमति इक रात्रि, दम घुटने से मरण किए।
पात्रदान से भोगभूमि में, दोनों आर्या आर्य हुए॥४॥
पात्रदान के अनुमोदन से, वहीं चार उत्पन्न हुए।
पात्रदान की महिमा सुनकर, हम सब भक्त प्रसन्न हुए॥
आर्य गया ऐशान स्वर्ग में, देव हुआ श्रीधर नामी।
उसी स्वर्ग में चारों जन्मे, उसी स्वर्ग आर्या जन्मी॥ ५॥
श्रीधर हुआ सुविधि केशव फिर, वज्रनाभि चक्रेश हुआ।
आठों जीव वहीं फिर जन्मे, श्रीमति तब धनदेव हुआ॥
वज्रनाभि मुनि बन गुरु पद में, भावनाएँ सोलह भाए।
तीर्थंकर पद बाँध मरण कर, सुर सर्वार्थसिद्धि पाए॥६॥

तज सर्वार्थसिद्धि सुर आलय, वह अहमिन्द्र यहाँ आए।
भरत क्षेत्र के अंतिम कुलकर, नाभिराय सुत बन भाए॥
हुण्डा अवसर्पिणी काल में, माँ को सोलह स्वप्न दिए।
रत्नवृष्टि देवों ने की तब, नगर अयोध्या जन्म लिए॥७॥
तीन लोक के जीवों को तब, मिली शान्ति केवल पल भर।
इन्द्राज्ञा से शचि ने तब ही, मरुदेवी को मूर्च्छित कर॥
लिया गोद में ज्यों जिन बालक, तब सम्यग्दर्शन पाके।
दिए इन्द्र को भावी भगवन्, 'पुण्यफला' के गुण गाके॥ ८॥
ऐरावत हाथी पर लेकर, चला इन्द्र सौधर्म वहाँ।
सुमेरु पर्वत पाण्डुक वन में, मणिमय पाण्डुकशिला जहाँ॥
एक हजार आठ कलशों में, क्षीर सिन्धु का जल भर के।
किया जन्म अभिषेक वहाँ पर, पूर्व दिशा में मुख करके॥ ९॥
फिर सौधर्म इन्द्र ताण्डव कर, 'वृषभ' नाम रक्खा उनका।
हुआ सुनन्दा यशस्वती से, विवाह बन्धन फिर जिनका॥
ब्राह्मी भरत सहित सौ सुत को, यशस्वती ने फिर जन्मा।
और सुन्दरी बाहुबली को, सुनो! सुनन्दा ने जन्मा॥१०॥
ब्राह्मी तथा सुन्दरी को दे, अंक तथा लिपि विद्याएँ।
पुत्र भरत वा बाहुबली को, दी बाकी सब शिक्षाएँ॥
वर्णाश्रम षट्कर्म बनाकर, पूज्य जिनालय बनवाए।
पिता राज्य अभिषेक करा के, तुमको राजा बनवाए॥ ११॥
नीलांजना अप्सरा का जब, नृत्य देख वैराग्य हुआ।
दिया भरत को राज्य तथा फिर, लौकान्तिक आगमन हुआ॥
देवों ने वैराग्य सराहा, फिर दीक्षा अभिषेक हुआ।
बैठ सुदर्शन नाम पालकी, सिद्धार्थक वन गमन हुआ॥ १२॥

अहो! नमः सिद्धेभ्यः कहकर, पंचमुष्टि केशलौंच किए।
संग चार हजार राजा के, जिन दीक्षा ले धन्य हुए॥
ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा तब, छह माहों का योग धरा।
मरीचि ने मत कपिल बनाया, सभी भ्रष्ट थे हाल बुरा॥ १३॥
अन्तराय जब हुआ वर्ष भर, तो श्रेयांस सोम राया।
अक्षय तृतीया को इक्षु रस, देकर दानतीर्थ पाया॥
पंचाश्चर्य हुए दाता घर, सबने जय-जयघोष किए।
एक हजार वर्ष तप करके, घातिकर्म प्रभु नाश दिए॥ १४॥
समवसरण में तीर्थंकर प्रभु, केवलज्ञानी धरम दिए।
रत्न त्याग तब प्रथम भरत जी, जिन अर्चन कर नमन किए॥
भव्य पुण्य से विहार करके, धर्मचक्र को चला दिया।
फिर कैलाश धाम पर जाकर, मोक्ष स्वयं को दिला दिया॥ १५॥
काल दोष से समय पूर्व में, लेकर जन्म मोक्ष पाए।
करके उत्सव भक्त आपकी, पदवी पाने ललचाए॥
हम भी नाथ! आपके गुण गा, मना रहे आनन्द अहो।
रागद्वेष भी मंद हुआ है, मुखर भक्ति का छन्द प्रभो॥ १६॥
हे स्वामी! बस नाम आपका, हरता संकट द्वन्द्व यहाँ।
हरे दुराग्रह संग्रह परिग्रह, दे चैतन्यानन्द महा॥
पर स्वार्थी तव नाम बाँधते, गुरु ग्रह के परिहारों से।
वे क्या जाने गुरु ग्रह टलता, बस तेरे जयकारों से॥ १७॥
गुण गाने का मात्र प्रयोजन, आपस में वात्सल्य फले।
तत्त्व स्वरूप विचारें सब जन, राग-द्वेष की शल्य टले॥
'विद्या-सुव्रत' सब स्वीकारें, रहे सभी का मन चंगा।
विश्व शान्ति हो, सभी मुक्त हों, बहती रहे धर्म गंगा॥ १८॥

(दोहा)

आदिनाथ भगवान् सम, उतरे कार्मिक भार।
यह पाने वरदान हम, बोलें जय जयकार॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

वृषभनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, वृषभनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री वृषभनाथ का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥

१. श्री वृषभनाथ आदीश जिनं, हे! करुणाकर हे! जैन धरम।
सो श्रद्धालु को परम दयालु स्वामी, बस कर दो केवलज्ञानी॥श्री..

२. जो नगर अयोध्या जन्म लिए, श्री अष्टापद से मोक्ष गए।
श्री नाभिराय मरुदेवी माँ के प्यारे, हो बाबा बड़े हमारे॥श्री..

३. प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता हैं, संसार मोक्षसुख कर्त्ता हैं।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥श्री..

४. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..

५. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी–ध्यानी॥श्री..

आरती

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
१. वृषभनाथ प्रभु पहले स्वामी, धर्मालु हो अंतर्यामी।-२
हम सबके बड़ेबाबा, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
२. नाभिराय के राज दुलारे, मरुदेवी के नयन सितारे।-२
अयोध्या में अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. नृत्य नाच देखे वैरागे, अष्टापद से भव सुख त्यागे।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ-२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

श्री अजितनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. चौबीसी में अजितनाथ जी, तीर्थंकर हैं दूजे।
सकल विश्व भी सादर जिनके, चरण कमल को पूजे॥
सो श्रद्धालु भाव भक्ति से, जिनकी जपते माला।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, भगवन करें उजाला॥ ओम्...
२. नगर अयोध्या जन्म लिए तो, जितशत्रु हर्षाए।
विजयादेवी की गोदी में, अजितनाथ जब आए॥
'सुव्रत' को प्रभु दिए सफलता, कर्म शत्रु भी हारे।
अजितनाथ के भक्त अजित हों, गूँजें जय-जयकारे॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
अजितनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री अजितनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

अजितनाथ भगवान् को, मन मंदिर में धार।
करें भक्ति आराधना, सुखी बने संसार॥

(हरिगीतिका)

दूजे जिनेश्वर प्रभु अजितजी, नाथ! भक्तों के रहे।
काया सुनहरी सी चमकती, स्वर्ग के त्यागी रहे॥
हो मोह शत्रु के विजेता, धर्म के नेता रहे।
हम भी बनें रिपु कर्मजेता, मोक्ष पर ललचा रहे॥

(दोहा)

अजितनाथ तीर्थेश का, हाथी चिह्न महान्।
जिनकी अर्चा हम करें, हाथ जोड़ धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं....)

मिथ्यात्व के विष नीर से तो, हम सदा मरते रहे।
फिर जन्म मृत्यु की व्यथाएँ, रोज हम सहते रहे॥
सम्यक्त्व श्रद्धा जल मिले भव, -रोग का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

क्या मूल्य चंदन का रहा जब, चरण चंदन पा गए।
फिर भी करें हम अर्चना तो, शरण प्रभु की आ गए॥
हमको मिले निर्मल चिदातम, ताप का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

पर्याय पुद्‌गल की विनश्वर, में फँसा अज्ञान है।
जिन भक्ति से शिव मुक्ति हो, इस भक्त का अरमान है॥
उज्ज्वल धवल अक्षत चढ़ा, भव-चक्र का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

कामांध से व्याकुल हमें तो, गालियाँ पल-पल मिलीं।
ना भक्ति की कलियाँ खिलीं ना, मुक्ति की गलियाँ मिलीं॥
चारित्र से चेतन सजे अब, काम का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

तन की तनिक सी भूख से हम, रात-दिन व्याकुल हुए।
कब भूख मन की दूर हो यह, सोच हम आकुल हुए॥
संयम मिले नैवेद्य अर्पण, से क्षुधा परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

अज्ञान मिथ्या मोह तम से, रो रही है आतमा।
साँची क्रिया प्रभु अर्चना, खोयी कहाँ परमातमा॥
जिन-दीप से निज-दीप उजले, मोह का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं...।

हम आज तक तो जल न पाए, किन्तु फिर भी जल रहे।
रत्नत्रयों के बिन तपस्या, ज्ञान तप निष्फल रहे॥
अब धूप खे जिन रूप पाएँ, कर्म का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

क्या राग के क्या द्वेष के क्या, मोह के फल मिल रहे।
भूले तुम्हें भूले हमें हम, हाय! किस काबिल रहे॥
जिन-भक्ति फल वैराग्य पाएँ, राग का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वन्दन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

पर के कभी कर्त्ता बने, भोक्ता बने स्वामी बने।
अभिमान के ऊँचे हिमालय, पर वसे ऊँचे तने॥
कैसे चढ़ायें अर्घ्य स्वामी, अर्चना कैसे करें।
हे जिन! करो तुम भक्त निज सम, प्रार्थना इससे करें॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

कृष्णा ज्येष्ठ अमास को, छोड़ा विजय विमान।
विजया माँ के गर्भ में, वसे अजित भगवान्॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्ण-अमावस्यायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ला दशमी माघ को, जन्मे अजितकुमार।
जितशत्रु के आँगने, जय-जय हो त्यौहार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ला नवमी माघ को, तजे अजित दुख धाम।
संत बने अंतरमुखी, सुर-नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस शुक्ला पौष को, पाकर केवलज्ञान।
अजित बने भगवन अजित, जिन्हें नमन अविराम॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ल-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ल पंचमी चैत्र को, मधुवन से कर ध्यान।
गए अजितप्रभु मोक्ष को, जिन को नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल पंचम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(अर्द्ध शंभु)

जो इन्द्री कर्म विजय करके, जो रत्नत्रय के प्राण रहे।
हम करें नमोऽस्तु जिनवर को, वो अजितनाथ भगवान रहे॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १॥

जो अवधिज्ञान के हैं स्वामी, वो मृत्युंजय वरदान रहे।
हम करें नमोऽस्तु जिनवर को, वो अजितनाथ भगवान रहे॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

जो परमावधि के अधिकारी, अतिशयकारी विज्ञान रहे।
हम करें नमोऽस्तु जिनवर को, वो अजितनाथ भगवान रहे॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

जो सर्वावधि सर्वज्ञ रहे, जो हरते दुख अज्ञान रहे।
हम करें नमोऽस्तु जिनवर को, वो अजितनाथ भगवान रहे॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

जो ज्ञान अनन्तावधि ज्ञाता, जो मुक्तिवधू की शान रहे।
हम करें नमोऽस्तु जिनवर को, वो अजितनाथ भगवान रहे॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

जो कोष्टबुद्धि के भण्डारी, जो तारण तरण जहाज रहे।
हम करें नमोऽस्तु जिनवर को, वो अजितनाथ भगवान रहे॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

(हाकलिका)

बीजबुद्धि के आसामी, हम उन सम होंगे आगामी।
अजितनाथ जी जिनदेवा, करें नमोऽस्तु हम सेवा॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी शिक्षा दो, जिनदीक्षा की भिक्षा दो।
अजितनाथ जी जिनदेवा, करें नमोऽस्तु हम सेवा॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

संभिन्नश्रोतृ की मणियाँ, मिलें ज्ञान की फुलझड़ियाँ।
अजितनाथ जी जिनदेवा, करें नमोऽस्तु हम सेवा॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

स्वयंबुद्ध सरताज रहे, सम्यक् धर्म जहाज रहे।
अजितनाथ जी जिनदेवा, करें नमोऽस्तु हम सेवा॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

भय प्रत्येकबुद्ध नाशो, भक्त कुटी में आवासो।
अजितनाथ जी जिनदेवा, करें नमोऽस्तु हम सेवा॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

बोधितबुद्ध वीतरागी, हम चरणों के अनुरागी।
अजितनाथ जी जिनदेवा, करें नमोऽस्तु हम सेवा॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१२॥

(अर्द्ध ज्ञानोदय)

ऋजुमति ज्ञान मनःपर्यय जो, छल कपटों को नास रहा।
अजितनाथ को करके नमोऽस्तु, स्वस्थ मस्त संन्यास रहा॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय की, महिमा का जग दास रहा।
अजितनाथ को करके नमोऽस्तु, स्वस्थ मस्त संन्यास रहा॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

दसपूर्वों के ज्ञायक जी का, दस-दस दिशा प्रकाश रहा।
अजितनाथ को करके नमोऽस्तु, स्वस्थ मस्त संन्यास रहा॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

चौदहपूर्वों के ज्ञाता का, आतम मोक्ष निवास रहा।
अजितनाथ को करके नमोऽस्तु, स्वस्थ मस्त संन्यास रहा॥
ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

जो अष्टांगनिमित्तक होते, जग उनका यश बाँच रहा।
अजितनाथ को करके नमोऽस्तु, स्वस्थ मस्त संन्यास रहा॥
ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

ऋद्धि विक्रिया से ऋषियों का, जग उद्धार प्रयास रहा।
अजितनाथ को करके नमोऽस्तु, स्वस्थ मस्त संन्यास रहा॥
ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

(सखी)

व्रतधारी नर विद्याधर, सुख दें संयम धारण कर।
प्रभु अजितनाथ को ध्याकर, हम करें नमोऽस्तु सादर॥
ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

जो चारण ऋद्धीश्वर हैं, वह विघ्न विनाशक वर है।
प्रभु अजितनाथ को ध्याकर, हम करें नमोऽस्तु सादर॥
ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

जो प्रज्ञाश्रमण महंता, वो हमें बना दें संता।
प्रभु अजितनाथ को ध्याकर, हम करें नमोऽस्तु सादर॥
ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

जो नभ में कमलविहारी, हैं समवसरण अधिकारी।
प्रभु अजितनाथ को ध्याकर, हम करें नमोऽस्तु सादर॥
ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

जो धारें आशीर्विष को, वो मुक्त करें हर दिश को।
प्रभु अजितनाथ को ध्याकर, हम करें नमोऽस्तु सादर॥
ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

जो दृष्टिर्विष अवलोकें, वो हमें पाप से रोकें।
प्रभु अजितनाथ को ध्याकर, हम करें नमोऽस्तु सादर॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(चौपाई)

उग्रतपस्या ऋषि आचारें, कर्म हरें स्वामी जग तारें।
अजितनाथ को नमोऽस्तु अपने, पूर्ण करो भक्तों के सपने॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

दीप्ततपों की करें तपस्या, भक्तों की जो हरें समस्या।
अजितनाथ को नमोऽस्तु अपने, पूर्ण करो भक्तों के सपने॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥

तप्ततपों की करें साधना, हम भक्तों की सुनें प्रार्थना।
अजितनाथ को नमोऽस्तु अपने, पूर्ण करो भक्तों के सपने॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

महातपों से देह सजाते, सुख शांति अध्यात्म लुटाते।
अजितनाथ को नमोऽस्तु अपने, पूर्ण करो भक्तों के सपने॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

घोरतपों की करते वर्षा, जिनके दर्शन कर जग हर्षा।
अजितनाथ को नमोऽस्तु अपने, पूर्ण करो भक्तों के सपने॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

घोरगुणों के आप खजाने, हम आए शुद्धात्म सजाने।
अजितनाथ को नमोऽस्तु अपने, पूर्ण करो भक्तों के सपने॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(दोहा)

घोरपराक्रम जो धरें, भजते आतम राम।
नमोऽस्तु प्रभु स्वीकारिए, अजितनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

घोरब्रह्मगुण जो धरें, खोज करें अध्यात्म।
नमोऽस्तु प्रभु स्वीकारिए, अजितनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३२॥

आमर्ष-औषध जो धरें, फूकें सब में प्राण।
नमोऽस्तु प्रभु स्वीकारिए, अजितनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

खेल्ल-औषधि जो धरें, शरण प्रदाता आत्म।
नमोऽस्तु प्रभु स्वीकारिए, अजितनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

जल्ल-औषधी जो धरें, धर्म रत्न के काम।
नमोऽस्तु प्रभु स्वीकारिए, अजितनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

विप्रुष-औषध जो धरें, वो होते धनवान।
नमोऽस्तु प्रभु स्वीकारिए, अजितनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

(अर्द्ध जोगीरासा)

सर्व-औषधी धार रहे जो, जग की हरते पीड़ा।
अजितनाथ को करके नमोऽस्तु, भक्त बनें खुद हीरा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

स्वामी सकल मनोबल धारी, मृत्युंजय के तीरा।
अजितनाथ को करके नमोऽस्तु, भक्त बनें खुद हीरा॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

भगवन महा वचनबल धारी, धीरों के जो धीरा।
अजितनाथ को करके नमोऽस्तु, भक्त बनें खुद हीरा॥

ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

मिले कायबल से कर्मों को, जीत लिए आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

क्षीरस्त्रावि से कर्म कालिमा, उज्जवल हो आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

सर्पिस्त्रावि से सुंदर मिलती, शुद्धातम आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

मधुरस्त्रावि से मधुर बनें सब, मैल हरें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

अमृतस्त्रावी करे अमरता, मरण हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

पा अक्षीण-महानस-आलय, भ्रमण हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

वर्धमान गुण दायक साधन, बाँट रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

सिद्ध-आयतन सिद्ध धाम को, सिद्ध करें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

णमो लोए सव्वसाहूणं को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

तीर्थकरों के रूप जिनवर, अजित स्वामी नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

अजितनाथ स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अजितनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

अजितनाथ प्रभु की कथा, भक्त सुनाएँ आज।
कर्मशत्रु को जीतने, दो चरणों का राज॥

(ज्ञानोदय)

वत्स देश का नगर सुसीमा, वहाँ विमलवाहन राजा।
सुन्दर चतुर गुणी उत्साही, करे धर्ममय हित काजा॥
सदा धर्म से पुण्य, पुण्य से, अर्थ भोग हो प्राप्त यहाँ।
इसीलिए वह जैनधर्म का, धर्मात्मा हो गया अहा॥ १॥
किसी समय वह हो वैरागी, रत्नत्रय धर संत बना।
जिनदीक्षा ले आत्म ज्ञानमय, निर्मोही निर्ग्रन्थ बना॥

तीव्र तपस्या करके उसने, ग्यारह अंगों को जाना।
भावनाएँ फिर सोलह भाकर, तीर्थंकर का पद बाँधा॥ २॥
और अन्त में णमोकार को, जप-जप समाधिमरण किया।
विजय अनुत्तर स्वर्ग पहुँचकर, स्वर्ग सुखों को वरण किया॥
पन्द्रह माहों तक देवों ने, दिव्य रत्न सुर बरसाए।
फिर सोलह सपनों को देकर, सुर से भू पर प्रभु आए॥ ३॥
जन्म समय सौधर्म इन्द्र ने, मेरु पर अभिषेक किया।
अजितनाथ शुभ नामकरण कर, न्यारा ताण्डव नृत्य किया॥
जन्म हुआ तो बन्धु वर्ग भी, रिपुओं पर जय विजय किए।
सभी शत्रुओं पर जय पाकर, अजितनाथ साम्राज्य किए॥ ४॥
आयु बहत्तर लाख पूर्व की, देह सुनहरी सी पाई।
साढ़े चार सौ धनुष ऊँचाई, सुख सामग्री सब पाई॥
कभी महल की छत पर बैठे, उल्कापात तभी देखा।
भव-भोगों से विरक्त हो तब, फिर वैराग्य पाठ सीखा॥ ५॥
लौकान्तिक देवों ने आकर, तब वैराग्य सराहा था।
जिससे प्रभु ने जूठन जैसा, राज्य पाठ सब त्यागा था॥
किया राज्य-अभिषेक पुत्र का, उसे राज्य अपना सौंपे।
बैठ सुप्रभा शिविका पर फिर, स्वयं सहेतुक वन पहुँचे॥ ६॥
नमः नमः सिद्धेभ्यः कह कर, सप्तपर्ण तरु तल में जा।
एक हजार राजाओं के सह, नियम लिया फिर बेला का॥
जिनदीक्षा ली साँयकाल में, ज्ञान मनःपर्यय पाया।
ब्रह्मा नृप ने प्रथम दान दे, पंचाश्चर्य पुण्य पाया॥ ७॥

मौन रहे छद्मस्थ काल में, बारह बरस तपस्या की।
केवलज्ञानी धर्मात्मा बन, हर ली कर्म समस्या भी॥
समवसरण में दिव्य देशना, देकर धर्मघोष की जय।
अंतर बाहर का वैभव पा, चमत्कार पाया अतिशय॥ ८॥

फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, अजित नाम सार्थक करके।
एक माह तक योग निरोध कर, सारे कर्म नष्ट करके॥
प्रातः प्रतिमायोग धार कर, मोक्ष पधारे स्वामी जी।
अजितनाथ सम हम बन जाएँ, अतः करें प्रणमामि जी॥ ९॥

अजितनाथप्रभु के शासन में, सगर चक्रवर्ती जन्मा।
जिसके साठ हजार पुत्र थे, सुन्दर गुणी महा धन्या॥
शुद्ध वंश के पुत्र पिता के, आज्ञाकारी भी होते।
अतः पिता की आज्ञा से वे, धर्म कार्य से अघ धोते॥ १०॥

भरत चक्रवर्ती से निर्मित, श्री कैलाश शिखर पर जो।
रत्नों के चौबीस जिनालय, अरिहंतों के मंदिर वो॥
चारों ओर उसी पर्वत के, परिखा कर गंगा भर दी।
दण्डरत्न से कार्य पूर्ण कर, जिनशासन की जय कर दी॥ ११॥

पुत्रों के मरने की झूठी, खबर सगर ने जब पाई।
भागीरथ को राज्य दिया तब, जिनदीक्षा फिर अपनायी॥
उधर पिता के मुनि बनने की, खबर मिली जब पुत्रों को।
तो पुत्रों ने जिनदीक्षा ले, धारा शुभ चारित्रों को॥ १२॥

पिता पुत्र सम्मेदशिखर से, मोक्ष पधारे तप करके।
और यहाँ भागीरथ राजा, बने संत सब तज करके॥

ध्यानी मुनि भागीरथ जी के, चरण पखारे इन्द्र महान्।
वह जलधारा गंगा पहुँची, तब से गंगा तीर्थ समान॥ १३॥
भागीरथ गंगा के तट से, तप करके निर्वाण गए।
सुनकर कथा धर्म की हम सब, जिन-गंगा पहचान गए॥
सुनो! एक सौ सत्तर पद जो, तीर्थंकर के बतलाए।
अजितनाथ के शासन में वो, भरे जिनागम गुण गाए॥ १४॥
द्वितीय होकर अद्वितीय जो, अजितनाथ भगवान् हुए।
जिनका नाम अकेला सुनकर, भक्तों के कल्याण हुए॥
फिर भी गुरु ग्रह बाधा हरने, अज्ञानी प्राणी डोलें।
ग्रह क्या? मृत्युंजय बनते जो, अजितनाथ की जय बोलें॥ १५॥

शक्ति भक्ति क्या?भुक्ति मुक्ति क्या?, हमको इसका ज्ञान नहीं।
राग द्वेष क्या, मोह पाप क्या, इसकी भी पहचान नहीं॥
किन्तु आप सम चिदानन्द को, 'सुव्रत' पाने ललचाए।
अतः अर्चना की गंगा में, अवगाहन करने आए॥ १६॥

(दोहा)

अजितनाथ को पूजकर, करें प्रार्थना आज।
कर्म शत्रु पर जय मिले, मिले मोक्ष साम्राज्य॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अजितनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अजितनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

महिमा

(लय-श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री अजितनाथ का पाठ, करो दिन-रात, ठाठ से प्राणी,
हो मंगलमय कल्याणी ।
१. श्री अजितनाथ कल्याणी हैं, जिनके अनुयायी प्राणी हैं।
हैं नाथ दूसरेआतम के विज्ञानी, सुख शांति प्रदाता स्वामी॥श्री..
२. जो नगर अयोध्या जन्म लिए, कर राज्य अयोध्या धन्य किए।
फिर उल्कापात देख कर के वैरागे, हम दर्शन करने भागे॥श्री..
३. जो समवसरण में धर्म दिए, सम्मेदशिखर से मोक्ष गए।
सो धवल कूट हम सादर पूजें देवा, दो हमें मुक्ति का मेवा॥श्री..
४. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..
५. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
'सुव्रत' गाएँ प्रभुकी कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
१. अजितनाथ भगवान हमारे, हम सबको प्राणों से प्यारे।-२
जग के हो उजयारे, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
२. जितशत्रु के राज दुलारे, विजया माँ के नयन सितारे।-२
अयोध्या में अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
३. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ।२
'सुव्रत'को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...

===

श्री शम्भवनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. चौबीसी में शम्भवप्रभु जी, सब कुछ संभव करते।
अतः भक्त सब शम्भवप्रभु को, पहले रोज सुमरते॥
श्रावस्ती में जन्म लिए तो, दृढ़राजा हर्षाए।
बनीं सुषेणादेवी माता, राजा राज्य चलाए॥ ओम्...
२. इक्ष्वाकु कुल के कुलदीपक, मेघ देख वैरागे।
बने सहेतुक वन में ज्ञानी, समवसरण भी लागे॥
शम्भवप्रभु सम्मेद शिखर से, मोक्ष गए निज ध्यानी ।
घोड़ा है पहचान आपकी, सबके हो कल्याणी॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
शम्भवप्रभु को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री शम्भवनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

तन से तो दूरी रही, मन से नहिं प्रभु दूर।
दूरी मजबूरी मिटे, यों हो कृपा जरूर॥

(ज्ञानोदय)

शम्भवप्रभु के पद पंकज में, हमने शीश झुकाया है।
भाग्योदय पुण्योदय अब हो, यही भाव मन आया है॥
काल अनन्त गंवाया हमने, शाम सबेरे नित टेरा।
विसराओ ना देर लगाओ, दो डेरा हर लो फेरा॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(अडिल्ल)

मिथ्यामल को सम्यग्दर्शन धार दो।
अर्पित नीर हमें भव तीर उतार दो॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

ताप तनावों वाला हमसे दूर हो।
अर्पित चंदन हमको छाँव जरूर दो॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

यहाँ आप सम शाश्वत अक्षय कौन हैं।
पुंज चढ़ाके भक्त आपके मौन हैं॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

विषय चाह से आत्म दाह हो रोज ही।
पुष्प चढ़ाएँ निज का खिले सरोज भी॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भेद-ज्ञान बिन क्षुधा रोग का दुख बढ़े।
मिले दवा नैवेद्य चढ़ाने हम खड़े॥

शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह घटा बस ज्ञान सूर्य से हारती।
मिले ज्ञान रवि अतः करें हम आरती॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

द्रव्य भाव नो कर्म हरें चिद्रूप को।
कर्म जलाने चढ़ा रहे हम धूप को॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

त्याग पाप-फल जिनवर की जय बोलिए।
फल अर्पण कर द्वार मोक्ष का खोलिए॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

(ज्ञानोदय)

अपनों ने तो बस ठुकराया, लेकिन सद्गुरु अपनाये।
सद्गुरु ने ज्यों अपनाया तो, शरण आपकी हम पाए॥
अर्घ्य चढ़ा विश्वास दिलाएँ, अगर हमें अपनाओगे।
शम्भवप्रभु अपने बाजू में, जल्दी हमको पाओगे॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

फाल्गुन शुक्ला अष्टमी, तज ग्रैवेयक स्थान।
गर्भ सुसेना के वसे, प्रभु शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन-शुक्ल-अष्टम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा, जन्मे शम्भवनाथ।
जितारि नृप के आँगने, पर्व किए सुरनाथ॥

ॐ ह्रीं कार्तिक-शुक्ल-पूर्णिमायां जन्म-मङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

मगशिर शुक्ला पूर्णिमा, राग आग सब छोड़।
पंथ धार निर्ग्रन्थ प्रभु, जिन्हें नमन कर जोड़॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्ल-पूर्णिमायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक कृष्णा चौथ में, पाकर केवलज्ञान।
श्रावस्ती के लाल को, नमन करें धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं कार्तिक-कृष्ण-चतुर्थ्यां केवलज्ञान-मङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल छठ को प्रभु, पाए मोक्ष महीश।
धवलकूट सम्मेदगिरि, को वन्दन नत शीश॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लषष्ठ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(चौपाई)

जिनवर इन्द्री कर्म विजेता, मोक्षमार्ग धर्मों के नेता।
भक्तों को दें रोज सहारे, शम्भवप्रभु को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १॥

अवधिज्ञान के ज्ञानी स्वामी, इच्छा पूरक अंतर्यामी।
भक्तों को दें रोज सहारे, शम्भवप्रभु को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्री शम्भवनाथ जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि के हो विज्ञानी, अतिशयकारी आतम ध्यानी।
भक्तों को दें रोज सहारे, शम्भवप्रभु को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि सर्वज्ञ आप हो, हरते पीड़ा कष्ट पाप को।
भक्तों को दें रोज सहारे, शम्भवप्रभु को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

ज्ञान अनन्तावधि के ज्ञाता, मुक्तिवधू शुद्धातम ध्याता।
भक्तों को दें रोज सहारे, शम्भवप्रभु को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

कोष्टबुद्धि के हो भण्डारी, पार उतारो हर नर नारी।
भक्तों को दें रोज सहारे, शम्भवप्रभु को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

(अर्द्ध जोगीरासा)

बीजबुद्धि के प्रभु अधिकारी, श्रद्धालु उपकारी।
करके नमोऽस्तु शम्भवप्रभु को, सादर ढोक हमारी॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी शिक्षा देते, दीक्षा दो हितकारी।
करके नमोऽस्तु शम्भवप्रभु को, सादर ढोक हमारी॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

संभिन्नश्रोतृ के हो हीरा, आतम के श्रृंगारी।
करके नमोऽस्तु शम्भवप्रभु को, सादर ढोक हमारी॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

स्वयंबुद्ध हो भाग्य विधाता, सम्यक् करुणाधारी।
करके नमोऽस्तु शम्भवप्रभु को, सादर ढोक हमारी॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

पीड़ा प्रत्येकबुद्ध नशाते, महाव्रतों के धारी।
करके नमोऽस्तु शम्भवप्रभु को, सादर ढोक हमारी॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥११॥

बोधितबुद्ध वीतरागी हो, व्याधि हरो हमारी।
करके नमोऽस्तु शम्भवप्रभु को, सादर ढोक हमारी॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

(हाकलिका)

ऋजुमति ज्ञान मनःपर्यय, सीधा देता मोक्ष निलय।
शम्भवप्रभु जी बालयति, करें नमोऽस्तु हम भक्ति॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय, छल कपटों का करें विलय।
शम्भवप्रभु जी बालयति, करें नमोऽस्तु हम भक्ति॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

दसपूर्वों के साधक जी, आतम के आराधक जी।
शम्भवप्रभु जी बालयति, करें नमोऽस्तु हम भक्ति॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१५॥

चौदहपूर्वों के देवा, भक्तों को दो सुख मेवा।
शम्भवप्रभु जी बालयति, करें नमोऽस्तु हम भक्ति॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

प्रभु अष्टांगनिमित्तक हो, साधक की आतम तक हो।
शम्भवप्रभु जी बालयति, करें नमोऽस्तु हम भक्ति॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

ऋद्धि विक्रिया धार रहे, सब दुनियाँ को तार रहे।
शम्भवप्रभु जी बालयति, करें नमोऽस्तु हम भक्ति॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

(अर्द्ध ज्ञानोदय)

व्रतधारी विद्याधर मानव, संयम के जो स्वामी हैं।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, शम्भवप्रभु कल्याणी हैं॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

चारणऋद्धि धरें देवता, सुख समृद्धि दानी हैं।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, शम्भवप्रभु कल्याणी हैं॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

प्रज्ञाश्रमण ज्ञान के धारी, ज्ञान बुद्धि वरदानी हैं।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, शम्भवप्रभु कल्याणी हैं॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

कमलविहारी गगनविहारी, समवरण के स्वामी हैं।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, शम्भवप्रभु कल्याणी हैं॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

आप धारते आशीर्विष को, परम भेद विज्ञानी हैं।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, शम्भवप्रभु कल्याणी हैं॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

दृष्टिर्विष के आप हिमालय, सम्यग्दृष्टि प्रधानी हैं।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, शम्भवप्रभु कल्याणी हैं॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(दोहा)

उग्रतपों को धारते, करने को कल्याण।
नमोऽस्तु सादर हम करें, जय शम्भव भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२५॥

दीप्ततपों को धारते, जिन पर है अभिमान।
नमोऽस्तु सादर हम करें, जय शम्भव भगवान॥
ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥
तप्ततपों को धारते, हम भक्तों के प्राण।
नमोऽस्तु सादर हम करें, जय शम्भव भगवान॥
ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥
महातपों को धारते, साधक साध्य महान।
नमोऽस्तु सादर हम करें, जय शम्भव भगवान॥
ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥
घोरतपों को धारते, विश्व करे गुणगान।
नमोऽस्तु सादर हम करें, जय शम्भव भगवान॥
ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥
घोर गुणों को धारते, ब्रह्मचर्य विज्ञान।
नमोऽस्तु सादर हम करें, जय शम्भव भगवान॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(अर्द्ध शुद्धगीता)

पराक्रम घोर धारें जो, सदा आतम निरखते हैं।
सदा शम्भवप्रभु को हम, नमोऽस्तु रोज करते हैं ॥
ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥
धरें जो घोरब्रह्मा गुण, रमण अध्यात्म करते हैं।
सदा शम्भवप्रभु को हम, नमोऽस्तु रोज करते हैं ॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३२॥
धरें आमर्ष-औषध जो, जगत को स्वस्थ करते हैं।
सदा शम्भवप्रभु को हम, नमोऽस्तु रोज करते हैं ॥
ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

धरें जो खेल्ल-औषध गुण, सभी को शुद्ध करते हैं।
सदा शम्भवप्रभु को हम, नमोऽस्तु रोज करते हैं ॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

(सखी)

जो जल्ल-औषधी धारी, हैं धर्म रत्न व्यापारी।
शम्भवप्रभु अतिशयकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

जो विप्रुष-औषध धारी, आचार विचार सँभारी।
शम्भवप्रभु अतिशयकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

जो सर्व-औषधी धारी, हैं मोक्षराज्य अधिकारी।
शम्भवप्रभु अतिशयकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

जो सकल मनोबल धारी, दें शक्ति सदा हितकारी।
शम्भवप्रभु अतिशयकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

जो महा वचनबल धारी, उपदेश दिए हितकारी।
शम्भवप्रभु अतिशयकारी, हो नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

बने विदेही पाए देह बल, काय बली आहा।
ओम् ह्रीं शम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

क्षीरस्त्रावि से क्षीर गुणों सम, धवल हुए आहा।
ओम् ह्रीं शम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

सर्पिस्त्रावि से सजा दिए हैं, शुद्धातम आहा।
ओम् ह्रीं शम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

मधुरस्त्रावि से महा जहर को, नष्ट किए आहा।
ओम् ह्रीं शम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

अमृतस्त्रावि से अमृत सम, आत्म चखे आहा।
ओम् ह्रीं शम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

अक्षीण-महानस-आलय, आश्रय दो आहा।
ओम् ह्रीं शम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥४५॥

वर्धमान सर्वोच्च साधना, कल्याणी आहा।
ओम् ह्रीं शम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

सिद्ध-आयतन सिद्धालय का, पर देते आहा।
ओम् ह्रीं शम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

करें नमोऽस्तु साधु जनों को, णमोकार आहा।
ओम् ह्रीं शम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

तीर्थकरों के रूप शम्भव, नाथ जिनवर नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥

सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

शम्भवप्रभु स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शम्भवनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (सोरठा)

शम्भवप्रभु जिनराज, विश्वकार्य सम्भव करो।
गुण गाएँ हम आज, निज स्वभाव में अब धरो॥

(ज्ञानोदय)

जिनकी कृपा दया को पाकर, कार्य असम्भव सम्भव हो।
जिनके नाम मात्र माला से, शुद्ध भावमय आतम हो॥
जिनके चरणा-चरण प्राप्त कर, मिलती इच्छित वस्तु हो।
उन शम्भवप्रभु के गुण गाएँ, बारम्बार नमोऽस्तु हो ॥१॥
एक विमलवाहन राजा था, वह ऐसा करके चिंतन।
यह संसारी जीव मृत्यु के, बीच खोजता है जीवन॥
मोहकर्म के विकट उदय से, यमराजों के दाँतों में।
फँसकर भी बचना नहिं चाहे, धिक्! धिक्! मिथ्या बातों में ॥२॥
सीमित आयु को यह प्राणी, शरण माँगता कण-कण में।
यह मत उसको यम के मुख में, पहुँचा देता क्षण-क्षण में॥
हाय! हाय! अज्ञानी चेतन, फिर भी ना वैराग्य धरे।
दुखवर्धक भव-चक्र भ्रमण के, कर्तव्यों से राग करे ॥३॥

तृष्णा की संतप्त धूप से, आकुल व्याकुल होकर के।
विषय भोग की जीर्ण नदी के, तट की छाया पा करके॥
विषय भोग की करे सुरक्षा, और स्वयं को नष्ट करे।
अतः अनन्तानन्त भवों में, शुद्धातम को भ्रष्ट करे ॥४॥
यह चिंतन कर विरक्त हो फिर, मोक्षमार्ग स्वीकार किया।
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद बाँध लिया॥
फिर संन्यास क्रिया से तन तज, ग्रैवेयक अहमिन्द्र बने।
स्वर्ग त्याग शम्भव नृप बनकर, मेघ देख वैराग्य धरे ॥५॥
नर तन में यम नर्तन करके, नर तन का ही नाश करे।
प्रथम दगा दे दाग बाद में, इस पर ना विश्वास करे॥
तन से राग भोग नीरस जो, मूरख उन्हें सरस समझें।
यह संसार असार जानकर, ज्ञानी इन्हें तजें सुलझें ॥६॥
निज वैभव रत्नत्रय पाकर, जिन वैभव को पा जाओ।
आप स्वयं यमराज बनो तो, मृत्युंजय बन सुख पाओ॥
सार सार का सार ग्रहण हो, लौकान्तिक यों वचन कहे।
फिर सिद्धार्थ पालकी में प्रभु, बैठे वन को गमन करे ॥७॥
दीक्षित होकर बने स्वयंभू, ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा।
सुरेन्द्रदत्त को प्रथम दान का, मिला पुण्य सौभाग्य अहा॥
चौदह वय छद्मस्थ गुजारी, बेलामय निज ध्यान लगा।
चार घातिया जड़ें उखाड़ीं, पाया केवलज्ञान महा ॥८॥
देवों ने कैवल्य महोत्सव, खूब मनाया नाच बजा।
अनन्तचतुष्टय धारी प्रभु का, समवसरण फिर खूब सजा॥
जिसकी ज्योति 'जिन' से होती, 'जिन' के मोती चित् खोती।
जिन महिमा में गद्-गद् जिनकी, आतम रोती दुख धोती ॥९॥

ऐसे शम्भवप्रभु ने सुन लो, चन्द्र तिरस्कृत कर डाले।
राहू केतु शनि कृष्ण शुक्ल के, पक्ष बहिष्कृत कर डाले॥
और अंत में एक माह जब, आयु कर्म अवशिष्ट रहा।
गिरि सम्मेदशिखर पर धारा, प्रतिमायोग विशिष्ट रहा ॥१०॥
जन्म शाम को मोक्ष शाम को, पाए नन्तकाल विश्राम।
कार्य असम्भव सम्भव करने, भक्त मुक्ति को करें प्रणाम॥
मिले चिदातम निज शुद्धातम, अगर कृपा हो तेरी नाथ।
अतः भक्ति का रचा उपक्रम, रहे हमारे सिर पर हाथ ॥११॥
पर जिन महिमा जो नहिं जानें, जिन्हें आप पर नहिं विश्वास।
यहाँ-वहाँ सिर फोड़ें भटकें, करके अपना सत्यानाश॥
गुरुग्रह का वस करें निवारण, नाथ!आपका भजकर नाम।
वे क्या जानें शम्भव प्रभु जो, दें भव सुख भी दें निर्वाण ॥१२॥
सभी समस्याओं को हमने, बड़ा अभी तक मान लिया।
अतः समस्याओं ने हमको, चैन छीन दुख दान दिया॥
लेकिन शम्भवनाथ बड़े हैं, 'सुव्रत' ने पहचान लिया।
बड़ी समस्या कभी न हो सो,जिनपद का सम्मान किया ॥१३॥

(दोहा)

अश्व चिह्नमय शोभते, जिनवर शम्भवनाथ।
विश्व समस्या दूर हो, अतः नमें हम माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शम्भवप्रभु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, शम्भवप्रभु जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय-श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री शम्भवप्रभु का पाठ, करो दिन-रात, ठाठ से प्राणी,
हो मंगलमय कल्याणी ।
१. श्री शम्भवप्रभु कल्याणी हैं, जिनके अनुयायी प्राणी हैं।
हैं तीजे तीर्थंकर आतम ज्ञानी, सुख शांति प्रदाता स्वामी॥श्री..
२. जो श्रावस्ती में जन्म लिए, दृढ़राज सुषेणा धन्य किए।
सम्मेदशिखर से मोक्ष गए जिन स्वामी, हम सबके हैं वरदानी॥श्री..
३. प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता हैं, संसार मोक्ष सुख कर्त्ता हैं।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥श्री..
४. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..
५. बस पूरी कर दो ये इच्छाए सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
'सुव्रत' गाएँ प्रभुकी कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
१. भगवन शम्भवनाथ हमारे, हम सबको प्राणों से प्यारे।-२
जग के हो उजयारे, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
२. दृढ़राजा के राज दुलारे, मातु सुषेणा नयन सितारे।-२
श्रावस्ती में अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
३. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ।२
'सुव्रत'को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...

===

श्री अभिनन्दननाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. चौबीसी में चौथे जिनवर, श्री अभिनन्दन स्वामी।
जिनके अभिनन्दन से होती, भक्त मुक्ति आगामी॥
जिनवाणी के लाल जिनंदा, कंचन जैसी काया।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, छूटे जग की माया॥ ओम्...
२. नगर अयोध्या जन्म लिए फिर, समवसरण भी त्यागा।
पद्मासन सम्मेद शिखर से, मोक्ष गए जग जागा॥
सिद्धार्था संवर के नंदन, इक्ष्वाकु कुल नंदन।
३. बंदर है पहचान आपकी, सुव्रत के अभिनंदन॥ ओम्...
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
अभिनन्दन को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री अभिनन्दननाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

अभिनन्दन प्रभु की यहाँ, गूँजी जय-जयकार।
पूजन के पहले करें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(सखी)

हे परम पूज्य प्रभुवर जी! श्री अभिनन्दन जिनवर जी!
तुम हो देवन के देवा, हो भक्तों के शिवपुर भी॥
तुमने गुण वन्दन करने, चंचल मन-बंदर छोड़ा।
फिर ले रत्नत्रय घोड़ा, जग का आक्रन्दन तोड़ा॥

हम हैं संसारी प्राणी, भव-आक्रन्दन में चीखें।
क्या वन्दन नन्दन होता, यह पाठ कभी न सीखें॥
फिर भी अब उमड़ी भक्ति, सो पुलकित-पुलकित होके।
हम आज रचाएँ पूजा, बस भक्त आपके होके॥
कर्मों के बन्धन सारे, जग-आक्रन्दन दुखियारे।
सब संकट विकट समस्या, हर विघ्न कष्ट के नारे॥
बस नाम आपका सुनके, निर्बन्ध बने सब साथी।
तब ही अभिनन्दन प्रभु के, हम भक्त बने बाराती॥

(दोहा)

मन वृन्दावन में वसो, अभिनन्दन भगवान्।
भक्ति छाँव में चेतना, पाए चित्-विश्राम॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जिनसे हमको दुख होते, वो बीज रोग के बोते।
हम उनको अपना मानें, जिनसे तो चेतन रोते॥
यह मिथ्या बुद्धि हरण को, दो शुद्ध आत्म जल स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

हम राग-द्वेष ज्वाला से, संतप्त हुए पल-पल में।
फिर चाह दाह से जलकर, मिल बैठे भव दल-दल में॥
अब शीतल चंदन जैसा, ज्ञानामृत गुण दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

अब तक हमने जो पाया, कर तू-तू मैं-मैं उसमें।
जग क्षणभंगुर ना समझा, सब क्षत-विक्षत है जिसमें॥

अब शाश्वत अक्षत बनने, जिन रूप मिले बस स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

जब काम शील धन लूटे, हम मौन खड़े शरमाएँ।
तब लुटे-पिटे निर्बल हो, जिन ब्रह्म देख खिल जाएँ॥
हैं भक्ति-पुष्प प्रभु अर्पित, संयम सौरभ दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पर द्रव्यों के सब व्यंजन, चखकर बीमार हुए हम।
निज आत्म सौख्य क्या होता, यह चख न सकी ये आतम॥
नैवेद्य करें हम अर्पण, जिन वचन दवा दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

अज्ञान मोह आँधी से, प्रभु भक्ति-दीप बुझ जाता।
फिर ज्ञान-ज्योति बिन आतम, परतत्त्व प्रशंसा गाता॥
जन तजने जिन बनने को, जिन भक्ति दीप दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

कर्मों से बँधकर चेतन, हा! बिलख-बिलख कर विसरे।
जिन-रूप सहारा लेकर, चारित्र धारकर निखरे॥
यह भक्ति धूप है अर्पण, शुभ ध्यान धूप दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

हम अशुभ पाप दुख करके, शुभ पुण्य कर्म सुख चाहें।
सो सुख नहिं हो दुख हो फिर, नहिं मिले मोक्ष की राहें॥

हमें अपने पास बुलाकर, निज परिणति फल दो स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

पर परिणति के लालच में, अनमोल रत्न ना समझे।
जिन दर्श आपके कर हम, अनमोल आत्म को समझे॥
गर कृपा आपकी हो तो, वह प्राप्त करें हम स्वामी।
हे! अभिनन्दन जिनवर जी, हो तुमको सदा नमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

शुक्ला छट वैशाख को, विजय स्वर्ग तज पाए।
सिद्धार्था के गर्भ में, अभिनन्दन प्रभु आए॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ शुक्ल बारस जहाँ, जन्मे नन्दननाथ।
पिता स्वयंवर के यहाँ, किए पर्व सुरनाथ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

द्वादश शुक्ला माघ में, बन्धन क्रन्दन छोड़।
दीक्षा ले नन्दन जिन्हें, वन्दन हो सिर मोड़॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष शुक्ल चौदस मिली, निज निधि केवलराज।
जय हो अभिनन्दन विभो, नमन आपको आज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

छठी शुक्ल वैशाख को, गए मोक्ष के धाम।
नन्दनप्रभु गिरिराज को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(अर्द्ध हरिगीतिका)

भगवान इन्द्री कर्म जय कर, मोक्ष पथ दें दास को।
हे! नाथ अभिनन्दन जिनेश्वर, हो नमोऽस्तु आपको॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १॥

जो अवधिज्ञानी आत्म ध्यानी, सीख दें संसार को।
हे! नाथ अभिनन्दन जिनेश्वर, हो नमोऽस्तु आपको॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि के हो विधाता, पुण्य दो हर भक्त को।
हे! नाथ अभिनन्दन जिनेश्वर, हो नमोऽस्तु आपको॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि के धाम हो तुम, शांति होअध्यात्म हो।
हे! नाथ अभिनन्दन जिनेश्वर, हो नमोऽस्तु आपको॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

ज्ञाता अनन्तावधि के प्यारे, मुक्ति के सरताज हो।
हे! नाथ अभिनन्दन जिनेश्वर, हो नमोऽस्तु आपको॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

तुम कोष्टबुद्धि के खजाने, भक्त के भण्डार हो।
हे! नाथ अभिनन्दन जिनेश्वर, हो नमोऽस्तु आपको॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

तुम बीजबुद्धि के बगीचे, ज्ञान फल रसदार हो।
हे! नाथ अभिनन्दन जिनेश्वर, हो नमोऽस्तु आपको॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

तुम तो पदानुसारी विद्या, शिष्य को वरदान दो।
हे! नाथ अभिनन्दन जिनेश्वर, हो नमोऽस्तु आपको॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

(सखी)

संभिन्नश्रोतृ की महिमा, गाकर पाए निज गरिमा।
अभिनन्दननाथ जिनेशा, हम करें नमोऽस्तु हमेशा॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

जो स्वयंबुद्ध हितकारी, अब थामो नाव हमारी।
अभिनन्दननाथ जिनेशा, हम करें नमोऽस्तु हमेशा॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

प्रत्येकबुद्ध परमातम, दो दान हमें शुद्धातम।
अभिनन्दननाथ जिनेशा, हम करें नमोऽस्तु हमेशा॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

प्रभु बोधितबुद्ध विरागी, दुख हरें हमारे त्यागी।
अभिनन्दननाथ जिनेशा, हम करें नमोऽस्तु हमेशा॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

मनःपर्यय ऋजुमति ज्ञानी, जो परम भेद विज्ञानी।
अभिनन्दननाथ जिनेशा, हम करें नमोऽस्तु हमेशा॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

जो ज्ञान विपुलमति पाए, सब मायाचार नशाए।
अभिनन्दननाथ जिनेशा, हम करें नमोऽस्तु हमेशा॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

दसपूर्वों के विख्याता, टूटे ना तुम से नाता।
अभिनन्दननाथ जिनेशा, हम करें नमोऽस्तु हमेशा॥
ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

जो चौदहपूर्व सँभालें, वो हमको शिष्य बना लें।
अभिनन्दननाथ जिनेशा, हम करें नमोऽस्तु हमेशा॥
ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

(हाकलिका)

प्रभु अष्टांगनिमित्त धरें, हम सबको वो सफल करें।
प्रभु अभिनन्दननाथ नमो, करो नमोऽस्तु नमो नमो॥
ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

ऋद्धि विक्रिया धर लेते, पाप कर्म मल धो देते।
प्रभु अभिनन्दननाथ नमो, करो नमोऽस्तु नमो नमो॥
ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

विद्याधर नर व्रतधारी, छोड़ दिए घर संसारी।
प्रभु अभिनन्दननाथ नमो, करो नमोऽस्तु नमो नमो॥
ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

चारणऋद्धि तपस्या से, जुड़ बैठे निज हिस्सा से।
प्रभु अभिनन्दननाथ नमो, करो नमोऽस्तु नमो नमो॥
ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

प्रज्ञाश्रमण चिदातम हो, सफल करो भक्तातम को।
प्रभु अभिनन्दननाथ नमो, करो नमोऽस्तु नमो नमो॥
ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

कमलासन पर चलो वसो, कर्मों पर गरजो बरसो।
प्रभु अभिनन्दननाथ नमो, करो नमोऽस्तु नमो नमो॥
ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

आशीर्विष के नायक हो, अपने तो मूलनायक हो।
प्रभु अभिनन्दननाथ नमो, करो नमोऽस्तु नमो नमो॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

दृष्टिर्विष के वैद्य रहे, आगम के नैवेद्य रहे।
प्रभु अभिनन्दननाथ नमो, करो नमोऽस्तु नमो नमो॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(दोहा)

उग्रतपों के नाथ हो, अभिनन्दन भगवान।
हम तो नमोऽस्तु तप करें, समाधान दो दान॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

दीप्ततपों को धारते, अभिनन्दन भगवान।
हम तो नमोऽस्तु तप करें, समाधान दो दान॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥

तप्ततपों के ईश हो, अभिनन्दन भगवान।
हम तो नमोऽस्तु तप करें, समाधान दो दान॥

ॐ ह्रीं णमो श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

महातपों के महातमा, अभिनन्दन भगवान।
हम तो नमोऽस्तु तप करें, समाधान दो दान॥

ॐ ह्रीं णमो श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

घोरतपों की घोषणा, अभिनन्दन भगवान।
हम तो नमोऽस्तु तप करें, समाधान दो दान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

घोरगुणों की साधना, अभिनन्दन भगवान।
हम तो नमोऽस्तु तप करें, समाधान दो दान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(चौपाई)

धारी घोरपराक्रम तप के, श्रद्धा से हम भी आ धमके।
श्री अभिनन्दननाथ नमोऽस्तु, कह दो प्रभु कल्याणम् अस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

घोर ब्रह्मगुण के रसिया हो, ब्रह्मचर्य व्रत निज वसिया हो।
श्री अभिनन्दननाथ नमोऽस्तु, कह दो प्रभु कल्याणम् अस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

प्रभु आमर्ष-औषधी धारो, सबके पाप ताप परिहारो।
श्री अभिनन्दननाथ नमोऽस्तु, कह दो प्रभु कल्याणम् अस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

खेल्ल-औषधी खीर खिलाते, खेल-खेल में रोग नशाते।
श्री अभिनन्दननाथ नमोऽस्तु, कह दो प्रभु कल्याणम् अस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

जल्ल-औषधी जिनकी दासी, जिनदर्शन की दुनिया प्यासी।
श्री अभिनन्दननाथ नमोऽस्तु, कह दो प्रभु कल्याणम् अस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

जो विप्रुष-औषधियाँ बाँटें, कर्मों की जंजीरें काटें।
श्री अभिनन्दननाथ नमोऽस्तु, कह दो प्रभु कल्याणम् अस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

(शुद्ध गीता)

धरें जो सर्व-औषध को, तरें वा तारते सब को।
हमारे नाथ अभिनन्दन, तुम्हें सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

मनोबल जो सकल धारें, करें नीरोग तन मन को।
हमारे नाथ अभिनन्दन, तुम्हें सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

वचनबल की जिन्हें सिद्धि, वही दें ज्ञान समृद्धि।
हमारे नाथ अभिनन्दन, तुम्हें सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

कायबली का अभिनन्दन ही, मान हरे आहा।
श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

क्षीरस्रावि दे क्षायिक गुण सो, अक्षय हों आहा।
श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

सर्पिस्रावि से राग द्वेष का, नशा दिए आहा।
श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

मधुरस्रावि से महा बैर को, त्याग दिए आहा।
श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

अमृतस्रावि से आतम को, सजा दिए आहा।
श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

पा अक्षीण-महानस-आलय, भ्रमण तजे आहा।
श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

सबसे उत्तम वर्धमान गुण, बाँट रहे आहा।
श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

सिद्धालय के महा आयतन, बना दिए आहा।
श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

णमोकार को करें नमोऽस्तु, धर्म धरें आहा।
श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप नंदन, नाथ जिनवर नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

अभिनन्दन स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

सत्य वचन से सिद्ध जो, अभिनन्दन जिनराज।
आनंदित नत हो कहें, जयमाला हम आज॥

(ज्ञानोदय)

जिनकी जीवन रेखा टूटे, मुरझायी हो जीव लता।
घोर उदासी के बादल में, जिनको जाए मौत सता॥
रोग कष्ट से जो व्याकुल वो, भजकर अभिनन्दन प्रभु नाम।
हों मृत्युंजय सुन्दर सुखिया, अतः नमोऽस्तु हो अविराम॥ १॥

एक महाबल सुन्दर राजा, धन-वैभव जिसका भारी।
चारों वर्णों का भी रक्षक, न्याय पुण्य गुण यश धारी॥
बहुत काल भोगों में गुजरा, किन्तु तृप्त जब नहीं हुआ।
तो वैराग्य धार मुनि बनकर, शाश्वत आतम रूप छुआ॥ २॥
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद बन्ध किया।
अगले भव में अभिनन्दन प्रभु, बनने का अनुबन्ध किया॥
तजकर देह अनुत्तर पहुँचा, जहाँ भोग स्वीकार किए।
फिर जिन-भक्ति सहित सुर तजकर, धरती पर अवतार लिए॥ ३॥
माँ ने सोलह स्वप्न देखकर, जिनवर को सिर टेक दिया।
जन्म त्रिलोकीनाथ लिए जब, इन्द्रों ने अभिषेक किया॥
नाम आपका अभिनन्दन रख, लगा टक टकी ताक रहे।
बना हजारों, नयन भुजाएँ, करके ताण्डव नाँच रहे॥ ४॥
कुमारकाल दशा गुजरी तो, राज्य तुम्हीं को पिता दिए।
तुम्हीं राज्य उपभोग करो फिर, पिता स्वयं वैराग्य लिए॥
राजा बनकर राज्य प्रजा को, सुखी गुणी सम्पन्न किया।
तभी आपको बनते मिटते, मेघ महल ने खिन्न किया॥ ५॥
विनाशीक भोगों का वैभव, नष्ट हमें भी कर देगा।
पला-पुसा यह शरीर हमको, नगर-नारि सम तज देगा॥
हुए विरागी तो लौकान्तिक, देवों ने आ पूजा की।
बैठ हस्तचित्रा शिविका में, वन में जा जिन-दीक्षा ली॥ ६॥
ज्ञान मनःपर्यय झट प्रकटा, गए अयोध्या अगले दिन।
इन्द्रदत्त राजा ने विधिवत्, किया भक्ति से पड़गाहन॥
निरंतराय आहार हुए तो, नभ में जय-जय देव कहें।

अहो! दान यह अहो! पात्र यह, दाता को भी धन्य कहें॥ ७॥
मन्द-मन्द महकी वायु फिर, रत्न पुष्प नभ से बरसे।
ढोल नगाड़े नभ में गूँजे, जिससे भू-अम्बर हर्षे॥
खाद्य वस्तु अक्षीण यही तो, पंचाश्चर्य कहे जय-जय।
वर्ष अठारह मौन धारकर, बिता दिया छद्मस्थ समय॥ ८॥
दीक्षावन में असन वृक्ष के, नीचे आतम ध्यान हुआ।
बेला लेकर साँयकाल में, प्रभु को केवलज्ञान हुआ॥
दिव्य अर्चना कर देवों ने, समवसरण फिर सजा दिया।
जिस पर कमलासीन आपने, बिगुल धर्म का बजा दिया॥ ९॥
धर्मवृष्टि कर आर्यखण्ड का, प्रभु ने कण-कण शुद्ध किया।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, मासिक योग निरोध किया॥
प्रातःकाल बहुत मुनियों के, साथ परमपद प्राप्त किया।
सिद्ध बने लोकाग्र विराजे, जीवन मरण समाप्त किया॥ १०॥
भक्ति सहित अभिनन्दन प्रभु का, इन्द्रों ने गुणगान किया।
मना मोक्षकल्याणक सादर, स्वर्ग लोक प्रस्थान किया॥
ऐसे वृषभनाथ जिनवर के, वंशज अभिनन्दन स्वामी।
निश्चयनय व्यवहार धर्ममय, मुक्त जिन्हें हम प्रणमामि॥ ११॥
ऐसे अभिनन्दन जिनवर जी, भव का वैभव हरण करें।
खुद निर्भय भय हरें हमारा, हम तो सादर चरण पड़ें॥
इनको गुरुग्रह तक सीमित कर, हो जाता है पाप महान्।
जिनका केवल सुमरण करना, ऋद्धि-सिद्धि दे हर वरदान॥ १२॥
अब तक हमने की मनमानी, बात आपकी ना मानी।
नादानी से मुक्ति रिसानी, मिली कृपा ना वरदानी॥

अब तो स्वामी क्षमादान दो, दया कृपा करुणा कर दो।
विनाशीक से अविनाशी कर, 'सुव्रत' की झोली भर दो॥ १३॥

(दोहा)

शोभित बन्दर चिह्नमय, प्रभु अभिनन्दननाथ।
दिव्य भव्य गुण पा सकें, अतः नमें हम माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अभिनन्दनस्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अभिनन्दन जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय-श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री अभिनन्दन का पाठ, करो दिन-रात, ठाठ से प्राणी,
हो मंगलमय कल्याणी।
१. अभिनन्दन नाथ हमारे हैं, सर्वज्ञ हितैषी प्यारे हैं।
सुख शान्ति प्रदाता ज्ञानी ध्यानी स्वामी, हम सादर करें नमामि॥श्री..
२. सिद्धार्था संवर के नंदन, सम्मेदशिखरजी के कुंदन।
बंदर जैसा मोह हरें दें चंदन, हम तो करते अभिनन्दन॥श्री..
३. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...

१. प्रभु अभिनन्दननाथ निराले, सुख सम्पत्ति देने वाले।-२
सब जग के रखवाले, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
२. संवर नृप के राज दुलारे, सिद्धार्था के नयन सितारे।-२
अयोध्या में अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
३. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ।२
'सुव्रत'को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...

===

श्री सुमतिनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। -४
१. चौबीसी में सुमतिनाथजी, अघ अज्ञान नशाएँ।
भाग्य विधाता बुद्धि प्रदाता, आतम ज्योति जलाएँ॥
नगर अयोध्या विनितापुर में, जन्म लिए पुण्यात्मा।
राजयोग को त्याग आप तो, हो गए संत महात्मा॥ ओम्...
२. बने सहेतुक वन में ज्ञानी, दिव्य देशना गूँजी।
पद्मासन सम्मेदशिखर से, मुक्त नमोऽस्तु गूँजी॥
राजा मेघरथ सुमंगला की, तुम संतान निराले।
चकवा है पहचान आपकी, 'सुव्रत' के रखवाले॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
सुमतिनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री सुमतिनाथ पूजन

स्थापना (लय : माता तू दया करके...)

हे! पंचम तीर्थंकर! जड़बुद्धि कुमति हर्त्ता।
हे! सुमतिनाथ! भर्ता, हे! सुमति ज्योति कर्त्ता॥
हे! मंगलमय मंगल, हे! तारणतरण जहाज।
सबको तारो तुम तो, हमने भी दी आवाज॥
हे! जिनवर जी अर्जी, मंजूर तुरत कर लो।
भव में डूबे हमको, दे शरण पार कर दो॥
उपकार न भूलेंगे, मन से तो छूलेंगे।
निज सहज रूप पाने, श्रद्धा से पूजेंगे॥

(सोरठा)

सुमति-सुमति दातार, सुमतिनाथ भगवान् हो।
आओ मन के द्वार, हरो भ्रमण अज्ञान को॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

हम निर्मल शुद्धातम, यह तत्त्व नहीं समझे।
तो राग-द्वेष करके, दुःख संकट में उलझे॥
अब जन्म पहेली को, सुलझाने वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

जग की शीतलता से, ना प्यास ताप नशते।
ना ज्ञानामृत मिलता, बस भव-भव में तपते॥
संताप मिटाने को, जिन-चंदन वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

कोल्हू के बैलों सम, भव चक्रों में खोये।
हम धर्मचक्र भूले, तो फूट-फूट रोये॥
अब अखण्ड आतम को, पाने जिन-वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

तज शूल असंयम के, संयम के फूल खिलें।
जीवन फूलों सा हो, जिन पद की धूल मिले॥
अब काम घाव भरने, ब्रह्म-औषध वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सुख पाने को आकुल, -व्याकुल दुख को तजने।
पर भाव नहीं बनते, अपने प्रभु को भजने॥
बिन भक्ति मुक्ति कैसे, सो भक्ति की वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

यह पुद्‌गल की ज्योति, अन्तर को छुए न भले।
पर आरती कर इनसे, आतम का दीप जले॥
अब अन्तस् तम हरने, जिन ज्योतित वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

भव अंगारों से हम, तपके झुलसे जलते।
पर कर्म तनिक न तपे, हम हाथ रहे मलते॥
अब कर्म जलाने को, अध्यातम वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

पुद्गल का विकृत रस, आतम में जहर भरे।
जिसको केवल चख के, प्राणी बेमौत मरे ॥
अब मृत्युंजय बनने, जिन-करुणा वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

हे नाथ! अभी तक हम, तुम जैसे नहीं हुए।
ना दुख के बन्ध झड़े, ना आतम रूप छुए॥
ना आतम से तन के, रिश्ते-नाते तोड़े।
दर-दर तो भटके पर, ना हाथ तुम्हें जोड़े॥
अब कृपा आपकी पा, यह अर्घ्य चढ़ाएंगे।
विश्वास यही हमको, तुम सम बन जाएंगे॥
निज शरण बुलाके अब, शाश्वत निज-वस्तु दो।
हे! सुमतिनाथ स्वामी!, नित तुम्हें नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

श्रावण शुक्ला दूज को, त्याग जयंत विमान।
मात मंगला गर्भ में, वसे सुमति भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल ग्यारस लिए, सुमतिनाथ प्रभु जन्म।
पिता मेघरथ के यहाँ, जन्मोत्सव की धूम॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नवीं शुक्ल वैशाख को, तजे अयोध्या धाम।
सुमतिनाथ तप से सजे, हम सब करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस शुक्ला चैत्र को, पाए पद अरिहंत।
ज्ञानोत्सव में गूँजती, जय-जय सुमति महंत॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल एकादशी, मोक्ष महोत्सव सार।
भक्त सुमतिप्रभु को, करें नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(सखी)

जो इन्द्री कर्म विजेता, हैं मुक्तिवधू मंगेता।
श्री सुमतिनाथ जी जिनवर, हम करें नमोऽस्तु सादर॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १॥

जो अवधिज्ञान के स्वामी, श्रुत ज्ञाता अंतरयामी।
श्री सुमतिनाथ जी जिनवर, हम करें नमोऽस्तु सादर॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

जो परमावधि अभियंता, जिन धर्म करें जयवंता।
श्री सुमतिनाथ जी जिनवर, हम करें नमोऽस्तु सादर॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

जो सर्वावधि के नंदा, दें भक्तों को आनंदा।
श्री सुमतिनाथ जी जिनवर, हम करें नमोऽस्तु सादर॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

जो अनन्तावधि के ज्ञाता, दें साता हरें असाता।
श्री सुमतिनाथ जी जिनवर, हम करें नमोऽस्तु सादर॥
ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥
जो कोष्टबुद्धि की राशी, जो मुक्तिवधू प्रत्याशी।
श्री सुमतिनाथ जी जिनवर, हम करें नमोऽस्तु सादर॥
ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥
जो बीजबुद्धि की फसलें, जो शुद्धातम के रस लें।
श्री सुमतिनाथ जी जिनवर, हम करें नमोऽस्तु सादर॥
ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥
जो पदानुसारी कलियाँ, दें सबको दीपावलियाँ।
श्री सुमतिनाथ जी जिनवर, हम करें नमोऽस्तु सादर॥
ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

(दोहा)

संभिन्नश्रोतृ जो धरें, हरें हमारे भार।
सुमतिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥
स्वयंबुद्ध सिद्धात्मा, करते भव से पार।
सुमतिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥
प्रत्येकबुद्ध परमात्मा, दिए महाव्रत सार।
सुमतिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥
बोधितबुद्ध महेश्वरा, नैया खेवनहार।
सुमतिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

ऋजुमति मनपर्यय धरे, दीए धर्म त्यौहार।
सुमतिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥
प्रकट विपुलमति ज्ञान कर, बनें वृक्ष फलदार।
सुमतिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१४॥
दसपूर्वों को साध कर, स्वस्थ करे संसार।
सुमतिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥
चौदह पूर्वों को तजे, चले मोक्ष के द्वार।
सुमतिनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१६॥

(हाकलिका)

प्रभु अष्टांगनिमित्त धरे, रत्नत्रय से भव उतरे।
सुमतिनाथ को नमोऽस्तु हो, मनोकामना पूरी हो॥
ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥
ऋद्धि विक्रिया पा करके, भव के रूप नशा करके।
सुमतिनाथ को नमोऽस्तु हो, मनोकामना पूरी हो॥
ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१८॥
विद्याधर नर ले संयम, दूर करें सांसारिक गम।
सुमतिनाथ को नमोऽस्तु हो, मनोकामना पूरी हो॥
ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१९॥
चारणऋद्धि के दूल्हे, जिनसे धर्म फले फूले।
सुमतिनाथ को नमोऽस्तु हो, मनोकामना पूरी हो॥
ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

प्रज्ञाश्रमण विरागी हो, लगन तुम्हीं से लागी हो।
सुमतिनाथ को नमोऽस्तु हो, मनोकामना पूरी हो॥
ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२१॥
गगनविहारी कमलों पर, वसें मोक्ष के महलों पर।
सुमतिनाथ को नमोऽस्तु हो, मनोकामना पूरी हो॥
ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२२॥
आशीर्विष की आशा से, जुड़े धर्म परिभाषा से।
सुमतिनाथ को नमोऽस्तु हो, मनोकामना पूरी हो॥
ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२३॥
दृष्टिर्विष की नजरों से, दूर रखें दुख खबरों से।
सुमतिनाथ को नमोऽस्तु हो, मनोकामना पूरी हो॥
ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२४॥

(ज्ञानोदय)

उग्रतपस्या करके स्वामी, भव संताप मिटाते हैं।
सुमतिनाथ को करके नमोऽस्तु, अपने रिश्ते नाते हैं॥
ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥
दीप्ततपों की घोर तपस्या, करके ऋषि सुख लाते हैं।
सुमतिनाथ को करके नमोऽस्तु, अपने रिश्ते नाते हैं॥
ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥
तप्ततपों की महा ऋद्धियाँ, करके पाप नसाते हैं।
सुमतिनाथ को करके नमोऽस्तु, अपने रिश्ते नाते हैं॥
ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥
महातपों की महान महिमा, करके सुख बरसाते हैं।
सुमतिनाथ को करके नमोऽस्तु, अपने रिश्ते नाते हैं॥
ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

घोरतपों को घूम घूम कर, अच्छे दिन ले आते हैं।
सुमतिनाथ को करके नमोऽस्तु, अपने रिश्ते नाते हैं॥
ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

घोरगुणों की घौंट-घौंट कर, घुट्टी खूब पिलाते हैं।
सुमतिनाथ को करके नमोऽस्तु, अपने रिश्ते नाते हैं॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(सोरठा)

घोरपराक्रम धार, करते मोक्ष निवास हैं।
सुमतिनाथ जिनराज, नमोऽस्तु के हम दास हैं॥
ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

घोरब्रह्मगुण धार, ब्रह्मचर्य व्रतराज हैं।
सुमतिनाथ जिनराज, नमोऽस्तु के हम दास हैं॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

आमर्ष-औषधि धार, करते पाप विनाश हैं।
सुमतिनाथ जिनराज, नमोऽस्तु के हम दास हैं॥
ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

खेल्ल-औषधी धार, आतम भोग विलास हैं।
सुमतिनाथ जिनराज, नमोऽस्तु के हम दास हैं॥
ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

जल्ल-औषधी धार, करते दोष विनाश हैं।
सुमतिनाथ जिनराज, नमोऽस्तु के हम दास हैं॥
ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

विप्रुष-औषधि धार, निर्मल मूरत खास है।
सुमतिनाथ जिनराज, नमोऽस्तु के हम दास हैं॥
ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

(चौपाई)

सर्व-औषधी धार ऋद्धियाँ, करते जीवन स्वस्थ वृद्धियाँ।
जय-जय सुमतिनाथ अरिहंता, तुम्हें नमोऽस्तु अनन्तानंता॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

सकल मनोबल धार सिद्धियाँ, हरो मानसिक रोग व्याधियाँ।
जय-जय सुमतिनाथ अरिहंता, तुम्हें नमोऽस्तु अनन्तानंता॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

महा वचनबल धार लब्धियाँ, हरो जगत की दुख उपाधियाँ।
जय-जय सुमतिनाथ अरिहंता, तुम्हें नमोऽस्तु अनन्तानंता॥

ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

कायबली ने काय कषायें, सब हर लीं आहा।
ओम् ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

क्षीरस्रावि से क्षमा धार कर, क्षमा किए आहा।
ओम् ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

सर्पिस्रावि से समता धरकर, सुखी हुए आहा।
ओम् ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

मधुरस्रावि से महान होने, मंत्र दिए आहा।
ओम् ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

अमृतस्रावि से अमृत सा, स्वाद दिए आहा।
ओम् ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

पा अक्षीण-महानस-आलय, सभा सजी आहा।
ओम् ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

वर्धमान सर्वोच्च गुणों के, धीरा हो आहा।
ओम् ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

श्री निर्वाण सिद्ध-आयतन, आप रहे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

नग्न दिगम्बर साधु जनों को, नमोऽस्तु हो आहा।
ओम् ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप सुमति, नाथ जिनवर नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

सुमतिनाथ स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(सोरठा)

सुमतिनाथ भगवान्, जो अविनाशी धन दिए।
बुद्धि-वृद्धि दो दान, अतः नमन पूजन किए॥

(ज्ञानोदय)

जिन्हें बुद्धि ने छोड़ दिया है, जिनकी बुद्धि कुबुद्धि हुई।
जिनकी है जड़बुद्धि धरम में, या दुर्बुद्धि कर्म में हुई॥
बुद्धि-वृद्धि को जो जन चाहें, जो खोजे सद्‌बुद्धि विजय।
शीश झुकाकर सुमति प्रभु की, वे बोलें मन से जय-जय॥ १॥

जिनने प्रभु की जय-जय बोली, उनके बुद्धि विकार नशे।
नाम कथा करने वालों के, उजड़े घर भी शीघ्र वसे॥
दर्शन पूजन का क्या कहना, भक्त जनों के मजे-मजे।
जगरथ तज उनके विद्यारथ, मोक्षपुरी को सजे-सजे॥ २॥

इक राजा रतिषेण नाम का, कला तथा विद्या स्वामी।
काम भोग की कुछ न कमी थी, अरिहंतों का अनुगामी॥
अर्जन रक्षण वर्धन व्यय से, धर्म अर्थ सेवन करता।
लीलापूर्वक राज्य पालकर, मन में यों चिन्तन करता॥ ३॥

पर्यायों की भव भँवरों में, अपना आतम फँसा रहा।
दुर्जन्मों के दुर्मरणों के, साँपों से यह डँसा गया॥
कौन करे कल्याण जीव का, कैसे पथ सुख-शान्ति मिले।
अर्थ काम संसार बढ़ाता, इनसे तो दुख दर्द मिले॥ ४॥

घर में रहकर धर्म कर्म में, होती रहती पाप कथा।
हिंसा सहित धर्म से फिर क्या?, मिट सकती है व्यथा कथा॥

पाप रहित मुनि धर्म मात्र ही, शाश्वत सुख दे आतम को।
ऐसा उत्तम फल का दाता, यही हुआ चिन्तन हमको॥ ५॥
राज्य सौंप अतिरथ बेटे को, खुद ने ले ली जिनदीक्षा।
ममता त्यागी समता धर ली, मोह-शत्रु जय की इच्छा॥
जीव मात्र का मंगल हो जब, ऐसे भावों को साधे।
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद को बाँधे॥ ६॥
अंत समय संन्यासमरण कर, वैजयन्त अहमिन्द्र हुए।
स्वर्ग त्याग कर भरतक्षेत्र में, वृषभ वंश उत्पन्न हुए॥
नगर अयोध्या में जन्मोत्सव, करके सुमति नाम रक्खा।
इन्द्रों ने स्वर्णिम तन प्रभु को, पूज पुण्य पाया पक्का॥ ७॥
कुमारकाल दशा गुजरी तो, सुमतिनाथ को राज्य मिला।
आर्त्तध्यान बिन रौद्रध्यान बिन, सभी प्रजा का भाग्य खिला॥
दिव्य राज भोगों को भोगा, भव से शीघ्र विरक्त हुए।
सुमति नाम को सार्थक करने, निज हित में अनुरक्त हुए॥ ८॥
मैं तो ज्ञानी कहलाता हूँ, अहित क्रिया कैसे कर लूँ।
अल्प सुखों को त्याग आज ही, शुभ वैराग्य हृदय धर लूँ॥
यदि सम्यक् वैराग्य न हो तो, सम्यक ज्ञान न मिल सकता।
जब तक सम्यग्ज्ञान न तब तक, निज स्वरूप न खिल सकता॥९॥
निज स्वरूप में लीन न जब तक, तब तक क्या सुख पाओगे।
अतः सुखार्थी बन वैरागी, वरना फिर पछताओगे॥
तब लौकान्तिक देवों ने आ, कर दी हाँ-हाँ अनुमोदन।
अभय पालकी में फिर बैठे, चले सहेतुक वन भगवन्॥ १०॥
इक हजार राजाओं के सह, बेला मय मुनि दीक्षा ली।

ज्ञान-मनःपर्यय झट प्रकटा, पद्मराज के भिक्षा ली॥
बीस वर्ष छद्मस्थ बिताकर, बेला मय ध्यानस्थ हुए।
केवलज्ञानी संत हुए तो, ज्ञानोत्सव मय भक्त हुए॥११॥
आप अठारह क्षेत्रों में फिर, कर विहार कल्याण किए।
आत्मा को परमात्मा बनने, बनो महात्मा ज्ञान दिए॥
मासिक योगनिरोध किया फिर, प्रतिमायोग ध्यान ध्याया।
अविचल कूट सम्मेदशिखर से, संध्या मोक्ष महल पाया॥१२॥
ऐसे सुमतिनाथ भगवन् के, दर्शन कर गुण गाने में।
चारों धामों का सुख मिलता, सादर शीश झुकाने में॥
दुनियाँ में वो शान्ति कहाँ जो, शान्ति शरण में आने में।
जीने में वो मजा कहाँ जो, मजा यहाँ मर जाने में॥ १३॥
जिनप्रभु को बस गुरु ग्रह नाशक, जो माने वे अज्ञानी।
सुमतिनाथ का नाम अकेला, हर ले सभी परेशानी॥
हर संकट के कंटक हर लो, खुशियों की दे दो कलियाँ।
'सुव्रत' तुम सम बनने माँगें, मोक्ष महल सुख की गलियाँ॥१४॥

(दोहा)

जिन का चकवा चिह्न है, पञ्चम जो जिनराज।
सुमति नाम जिनका उन्हें, नमस्कार हो आज॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

सुमतिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, सुमतिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय-श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री सुमतिनाथ का पाठ, करो दिन-रात, ठाठ से प्राणी,
हो मंगलमय कल्याणी।
१. श्री सुमतिनाथ भगवान नमो, श्रद्धान करो भगवान बनो।
सो सुमतिनाथ की भक्ति करें हम, बुद्धि प्रदाता स्वामी॥श्री..
२. जो नगर अयोध्या जन्म लिए, सम्मेदशिखर से मोक्ष गए।
हम भक्त पूजते कल्याणक सुखकारी, सो नमोऽस्तु बारी-बारी॥श्री..
३. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..
श्री सुमतिनाथ का पाठ...।

आरती

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
१. सुमतिनाथ भगवान हमारे, हम सबको प्राणों से प्यारे। -२
जग के हो उजयारे, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
२. राज मेघरथ राज दुलारे, सुमंगला के नयन सितारे।-२
अयोध्या में अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
३. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ।२
'सुव्रत'को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...

===

श्री पद्मप्रभ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. चौबीसी में पद्मप्रभु जी, लाल-लाल हैं लाल।
विघ्न विनाशक संकटमोचक, जिनवाणी के लाल॥
कौशांबीपुर जन्म धारकर, किए राज्य सुख राशि।
पूर्व जन्म के विषय याद कर, बन बैठे संन्यासी॥ ओम्...
२. ज्ञान मनोहर वन में पाके, समवसरण मन मोहे।
खड्गासन सम्मेद शिखर से, मोक्ष प्राप्त कर शोभे॥
राजा धरण सुसीमा रानी, के तुम पुत्र निराले।
लाल कमल पहचान तुम्हारी, 'सुव्रत' के रखवाले॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
पद्मप्रभु को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री पद्मप्रभ पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

कौशल के कौशांबीपुर के, धरण सुसीमा के नंदन।
मोक्षमार्ग में कमलों जैसे, कमल चिन्ह वाले भगवन॥
कर कमलों का आशीष पाने, करें आपकी हम पूजन।
पूज्य पद्मप्रभु नाथ! हमारे, स्वीकारो यह अभिनंदन॥

(दोहा)

हृदय कमल पर आइए, सुनकर यह आह्वान।
आवेदन स्वीकार लो, पद्मप्रभु भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

भवजल में हम डूब रहे थे, हमें आपने बचा लिया।
अपने चरणों में आश्रय दे, चरण-शरण में वसा लिया॥
जन्म-मरण की पीड़ाओं के, सागर को हम पार करें।
पद्मप्रभु को जल अर्पित कर, नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

राग-द्वेष की ज्वालाओं से, दुनियाँ हमें जलाती है।
लेकिन सचमुच कृपा आपकी, शीतल छाँव दिलाती है॥
छत्र-छाँव बस मिले आपकी, हम पर यह उपकार करें।
पद्मप्रभु को चंदन लेकर, नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

धंधे रहे गले के फंदे, जग के ऐसे काम रहे।
चिदानंद सुख शांति न देते, क्यों इनमें संसार फँसे॥
निज निवास अपना दे करके, सबकी नैया पार करें।
पद्मप्रभु को पुंज चढ़ाकर, नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

नाथ!आपके धर्मबाग के, फूल रहे हम कोमल से।
चरणों में स्थान मिले बस, यही चाहते हम तुमसे॥
काम कथाएँ हरो हमारी, हम में ब्रह्म बहार भरें।
पद्मप्रभु को पुष्प चढ़ाकर, नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जग के भोजन-पान किए पर, भूख सुबह फिर खड़ी मिली।
सब मर जाते ये ना मरती, भूख मौत से बड़ी मिली॥
क्षुधा वेदना विजय करें हम, प्रभु इतना उपकार करें।
पद्मप्रभु को नैवेद्यम से, नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

जिनने हमको पथ दिखलाया, उनने ही भटकाया है।
ऐसी भ्रमणा हरो हमारी, श्रद्धा दीप जलाया है॥
मोह अंधेरा पार करें हम, रोशन हर त्योहार करें।
पद्मप्रभु को दीप जलाकर, नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

कर्म बड़े बलवान जगत में, कर्म करें सब खेल यहाँ।
कर्म रंक को कर दें राजा, कर्म करें दुख जेल यहाँ॥
कर्मों के हर युद्ध विजय को, हम संयम स्वीकार करें।
पद्मप्रभु को धूप चढ़ाकर, नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

हम अपने सब कर्म करें पर, दोष दूसरों पर डालें।
ऐसे में क्या मोक्ष मिलेगा, अगर नियम व्रत ना पालें॥
मोक्षमहल का आश्रय पाने, हम मुनियों से प्यार करें।
पद्मप्रभु को फल अर्पित कर, नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

नाथ! हमें आशीष यही दो, जैनधर्म जिनभवन मिलें।
दर्शन पूजन चिंतन करने, सदा आपके चरण मिलें॥
आशीर्वाद यही बस देना, हम चरणों में शीश धरें।
पद्मप्रभु को अर्घ्य चढ़ाकर, नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

माघ कृष्ण छठ को तजे, ग्रैवेयक सुरसाज।
मातृ सुसीमा गर्भ में, बसे पद्म जिनराज॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस कार्तिक कृष्ण को, पद्मोत्सव की धूम।
धरणराज घर जन्म की, बजे बधाई झूम॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस कार्तिक कृष्ण को, तजे मोह संसार।
बने पद्म प्रभु संत जी, जिन्हें नमन शत बार॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल पूनम हुई, जग में पूज्य महान्।
घाति नशा प्रभु पद्म ने, पाया केवलज्ञान॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौथ कृष्ण फाल्गुन हुई, पद्मप्रभु के नाम।
मोक्ष गए सम्मेद से, लाखों जिन्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्थ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(जोगीरासा)

इन्द्री कर्म विजेता प्यारे, मोक्षमार्ग के नेता।
संकटमोचक पद्मप्रभु जी, जिनवाणी के बेटा॥
छठे-छठे से छठवें जिनवर, जिन की छटा निराली।
पद्मप्रभु को करके नमोऽस्तु, मिले मोक्षपुर वाली॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १॥

अवधिज्ञान के स्वामी ज्ञाता, सुंदर अंतरयामी।
परवश के सारे दुख नाशें, हम सेवक तुम स्वामी॥
छठे-छठे से छठवें जिनवर, जिन की छटा निराली।
पद्मप्रभु को करके नमोऽस्तु, मिले मोक्षपुर वाली॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि के प्रभु धारी हो, भगवन अतिशयकारी।
परम पूज्य पद हमें दिलाओ, अर्जी यही हमारी॥
छठे-छठे से छठवें जिनवर, जिन की छटा निराली।
पद्मप्रभु को करके नमोऽस्तु, मिले मोक्षपुर वाली॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि के ईश जिनेश्वर, आशीर्वाद हमें दो।
पार करो संसार चक्र से, अपनी शरण हमें लो॥
छठे-छठे से छठवें जिनवर, जिन की छटा निराली।
पद्मप्रभु को करके नमोऽस्तु, मिले मोक्षपुर वाली॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

ज्ञान अनन्तावधि के ज्ञाता, सबके भाग्य विधाता।
हमें अनन्तानंत ज्ञान दो, मुक्तिवधू के दाता॥
छठे-छठे से छठवें जिनवर, जिन की छटा निराली।
पद्मप्रभु को करके नमोऽस्तु, मिले मोक्षपुर वाली॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

(चौपाई)

कोष्टबुद्धि को धार रहे हो, भक्तों को भी तार रहे हो।
पद्मप्रभु जी हमें निहारो, नमोऽस्तु हम सबका स्वीकारो ॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

बीजबुद्धि के हो भण्डारी, श्रद्धालु के हो हितकारी।
पद्मप्रभु जी हमें निहारो, नमोऽस्तु हम सबका स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी मंत्र सिखाते, जिनशासन जयवंत कराते।
पद्मप्रभु जी हमें निहारो, नमोऽस्तु हम सबका स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

सदा ऋद्धि संभिन्नश्रोतृ से, आप मिले हो मोक्ष मुक्ति से।
पद्मप्रभु जी हमें निहारो, नमोऽस्तु हम सबका स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

त्याग दिए संसार जाल को, बनें स्वयंभू मुक्तिमाल को॥
पद्मप्रभु जी हमें निहारो, नमोऽस्तु हम सबका स्वीकारो

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

आप बने प्रत्येकबुद्ध हो, धार महाव्रत आप शुद्ध हो।
पद्मप्रभु जी हमें निहारो, नमोऽस्तु हम सबका स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

बोधितबुद्ध निरंजन स्वामी, दूर करो जग दुख हैरानी।
पद्मप्रभु जी हमें निहारो, नमोऽस्तु हम सबका स्वीकारो ॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

ऋृजुमति ज्ञान मनःपर्यय जो, विघ्नविनाशक देता जय को।
पद्मप्रभु जी हमें निहारो, नमोऽस्तु हम सबका स्वीकारो ॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

(शुद्ध गीता)

मनःपर्यय विपुलमति को, जिन्होंने पा लिया व्रत से।
उन्हें करते नमोऽस्तु हम, झुकाकर रोज मस्तक से ॥

हमें बोधि समाधि दो, हमारी भी जयोस्तु हो।
पद्मप्रभु आपको सादर, हमारी भी नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

धरें दसपूर्व जो योगी, सुखद संयोग देते जो।
करें वह दिग्विजय स्वामी, हृदय को मोह लेते जो॥
हमें बोधि समाधि दो, हमारी भी जयोऽस्तु हो।
पद्मप्रभु आपको सादर, हमारी भी नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

कि चौदहपूर्व ज्ञाता जो, वही सबके विधाता हैं।
उन्हीं के प्राप्त कर दर्शन, मिले सुख और साता हैं॥
हमें बोधि समाधि दो, हमारी भी जयोस्तु हो।
पद्मप्रभु आपको सादर, हमारी भी नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

निमित-अष्टांग जो धारें, उतारें पार नैया को ।
उन्हें हम भेंट क्या कर दें, रहे तारण तिरैया जो॥
हमें बोधि समाधि दो, हमारी भी जयोस्तु हो।
पद्मप्रभु आपको सादर, हमारी भी नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

(सखी)

जो ऋद्धि-विक्रिया धारी, दो हमको मोक्ष सवारी।
श्री पद्मप्रभु विज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१८॥

विद्याधर नर व्रतधारी, सबके प्रभु अतिशयकारी।
श्री पद्मप्रभु विज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

चारण-ऋद्धी के स्वामी, दो हमें सिद्धि आगामी।
श्री पद्मप्रभु विज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

हो प्रज्ञाश्रमण जिनेश्वर, प्रभु हम सबके परमेश्वर ।
श्री पद्मप्रभु विज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

आकाशगमन ऋषि करते, प्रभु दोष शमन सब करते।
श्री पद्मप्रभु विज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

आशीर्विष के तुम धारी, सब तुम्हें भजें संसारी ।
श्री पद्मप्रभु विज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

दृष्टिर्विष के भण्डारी, आगम के आज्ञाकारी।
श्री पद्मप्रभु विज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(हाकलिका)

उग्रतपों के धारी जो, तार रहे संसारी को।
पद्मप्रभु उपकारी को, नमोऽस्तु बारी-बारी हो॥
ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

दीप्ततपों के धारी जो, आतम के श्रृंगारी हो।
पद्मप्रभु उपकारी को, नमोऽस्तु बारी-बारी हो॥
ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥

तप्ततपों के धारी जो, मोक्ष राज्य अधिकारी हो।
पद्मप्रभु उपकारी को, नमोऽस्तु बारी-बारी हो॥
ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

महातपों के धारी जो, जग के आप सुधारी हो।
पद्मप्रभु उपकारी को, नमोऽस्तु बारी-बारी हो॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

घोरतपों के धारी जो, प्रभु चैतन्य बिहारी हो।
पद्मप्रभु उपकारी को, नमोऽस्तु बारी-बारी हो॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

घोरगुणों को धारी जो, घोर वेदना टारी हो।
पद्मप्रभु उपकारी को, नमोऽस्तु बारी-बारी हो॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

घोरपराक्रम धारी जो, दुख उपसर्ग निवारी हो।
पद्मप्रभु उपकारी को, नमोऽस्तु बारी-बारी हो॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

घोर ब्रह्मगुण धारी जो, सचमुच !अतिशयकारी हो।
पद्मप्रभु उपकारी को, नमोऽस्तु बारी-बारी हो॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३२॥

(दोहा)

आमर्ष-औषधि धारकर, करते शुद्ध विचार।
पद्मप्रभु जी आपको, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

खेल्ल-औषधी धारकर, दो सुख के भण्डार।
पद्मप्रभु जी आपको, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३४॥

जल्ल-औषधी धारकर, करो रत्न व्यापार।
पद्मप्रभु जी आपको, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३५॥

विप्रुष-औषधि धारकर, दो आहार विहार।
पद्मप्रभु जी आपको, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३६॥

सर्व-औषधी धारकर, तार रहे नर नार।
पद्मप्रभु जी आपको, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

सकल मनोबल धारकर, बल साहस दातार।
पद्मप्रभु जी आपको, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

शब्द ब्रह्म गुण धारकर, वचनबली उपकार।
पद्मप्रभु जी आपको, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

कायबली जी बाहुबली सम, ध्यान धरें आहा।
ओम् ह्रीं पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

क्षीरस्रावि तो नीर-क्षीर सम, गुण देते आहा।
ओम् ह्रीं पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

सर्पिस्रावि घृत जैसे गुण, दान दिए आहा।
ओम् ह्रीं पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

मधुरस्रावि तो मधुर-मधुर सा, रस देते आहा।
ओम् ह्रीं पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

अमृतस्त्रावि अमृत जैसी, औषध दें आहा।
ओम् ह्रीं पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

आश्रय सुख अक्षीण-महानस-आलय दें आहा।
ओम् ह्रीं पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

निज स्वरूप के वर्धमान गुण, देते हो आहा।
ओम् ह्रीं पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

सिद्धालय के सिद्ध-आयतन, सिद्ध शिला आहा।
ओम् ह्रीं पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

साधु जनों को नमस्कार हो, णमोकार आहा।
ओम् ह्रीं पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

तीर्थकरों के रूप जिनवर, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, पद्मप्रभ जी साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

पद्मप्रभु स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(वसंततिलका)

संसार में शरण हैं जिनदेव साँचे।
ध्या के सदाचरण भक्त मयूर नाँचे॥
सर्वस्य पाप विधि बन्धन को नशाते।
सो भक्त भक्तिमय हो गुणमाल गाते॥

(ज्ञानोदय)

जिनके रिश्ते नाते छूटे, भाग्य कमल भी मुरझाये।
दूर हुए जो प्रभु से प्राणी, बहुत बुरे दिन भी आए॥
घोर निराशा के अँधियारे, जिनके जीवन में होते।
वही पद्मप्रभु को ध्याकर के, बोलो कौन कहाँ रोते॥ १॥
आओ! उनकी कथा वाँच लें, जो वचनों को शुद्ध करें।
जिनके पथ पर चलने वाले, भक्त स्वयं को सिद्ध करें॥
नगर सुसीमा के अपराजित, राजा सार्थक नाम धरे।
अंतरंग बहिरंग शत्रु को, जीत दया के काम करे॥ २॥
राजभोग को भोग बाद में, चिन्तन कर गंभीर हुए।
क्षण भंगुर नश्वर जग माया, पुद्गल कर्म शरीर हुए॥
चिदानन्द का वैभव पाने, राज्य पुत्र को सौंप दिया।
जिनदीक्षा को वन जा खुद को, प्रभु चरणों में सौंप दिया॥३॥
कठिन साधना तूफानी कर, जैनधर्म का नाद किया।
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद बाँध लिया॥
अन्त समय में कर सल्लेखन, ग्रैवेयक अहमिन्द्र हुए।
स्वर्ग त्याग नृप अपराजित के, पुत्र कमल सम पद्म हुए॥४॥

जन्म हुआ ज्यों हर्ष हुआ त्यों, मोह शोक का अन्त हुआ।
वैर विरोध काँपकर भागें, घर-घर पर्व वसंत हुआ॥
इन्द्रों ने फिर न्हवन कराके, पूज्य पद्मप्रभ नाम रखा।
पर्व जन्म कल्याणक करके, पुण्य भक्ति को खूब चखा॥५॥
जिन बालक बन पालक ऐसे, कौन करे वर्णन उसका।
वो सौभाग्य नहीं पा सकता, अल्प भाग्य होगा जिसका॥
हाथी की दुर्दशा श्रवण कर, पूर्व भवों का ज्ञान हुआ।
तत्त्व स्वरूप जानकर खुद को, खुद पर खेद महान् हुआ॥६॥
यहाँ कौन-सा पदार्थ ऐसा, जिसको मैंने छुआ नहीं।
देखा सूँघा खाया ना हो, जिसको मैंने सुना नहीं॥
अभिलाषा के इस सागर को, पूर्ण कौन भर पाया है।
भोग सर्प ने तन वामी में, रहकर विष फैलाया है॥ ७॥
फिर भी मोह उसी से करके, आत्म धर्म को भुला दिया।
पापों को ही धर्म मानकर, शाश्वत चेतन सुला दिया॥
जिन्हें हुआ वैराग्य उन्हीं के, लौकान्तिक सुर में सुर गा।
बेला सहित लिए जिनदीक्षा, सजे मनोहर वन में जा॥८॥
ज्ञान मनःपर्यय फिर पाया, फिर चर्या की दिन अगले।
पाँच वृत्तियों से भोजन कर, सोमदत्त को पुण्य मिले॥
गुप्ति समिति अनुप्रेक्षा करके, परिषहजय चारित्र धरा।
संवर तप से किए निर्जरा, छह माहों का मौन धरा॥ ९॥
जब छद्मस्थ दशा गुजरी तो, केवलज्ञानी संत बने।
नर इन्द्रों ने सुर इन्द्रों ने, पूजा जब भगवन्त बने॥
सुनो! एक सौ दस गणधर से, समवसरण भी खूब भरा।
जिसमें कमलासन पर प्रभु का, निज चैतन्य रूप निखरा॥१०॥

दिव्य देशना देकर खुद को, साबित सच्चा आप्त किया।
मासिक योग निरोध धारकर, अहा! मोक्ष को प्राप्त किया॥
श्रीसम्मेदशिखर का पावन, पूजित मोहनकूट हुआ।
मना मोक्षकल्याणक प्रभु का, अपना दिल अभिभूत हुआ॥
ऐसे पद्मप्रभु की मूरत, बड़े पुण्य से पाई है।
पाप निर्जरा पुण्य प्राप्ति को, पूजा नित्य रचाई है॥
स्वामी आप वरों के दाता, हम आए वर पाने को।
छींटा दे दो ज्ञान कणों का, हमें होश में आने को॥१२॥
पद्मनाथ परमेश्वर प्रभु ने, राग-द्वेष को लाँघ लिया।
किन्तु रागियों ने ही उनको, राहु-केतु तक बाँध दिया॥
करें निवारण मात्र सूर्य ग्रह, प्रभु कमजोर नहीं इतने।
'सुव्रत' जिनका नाम मात्र सुन, मुक्तिरमा टेके घुटने॥१३॥

(दोहा)

लाल कमल से शोभते, पद्मप्रभु जिनराज।
खिले कमल सम भक्त हम, अतः नमन हो आज॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

पद्मप्रभ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पद्मप्रभ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

महिमा

(लय-श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री पद्मप्रभु का पाठ, करो दिन-रात, ठाठ से प्राणी,
हो मंगलमय कल्याणी ।
१. पद्मप्रभु केवलज्ञानी, जिनके पूजक जग के प्राणी।
हैं लाल कमल वाले जिनवर कल्याणी, सुख शांति प्रदाता स्वामी॥श्री..
२. जो कौशांबीपुर जन्म लिए, श्री धरण-सुसीमा धन्य किए।
फिर राजपाट को त्याग दिए विज्ञानी, प्रभु बने केवली स्वामी॥श्री..
३. सबको मुक्ति का मार्ग दिए, सम्मेदशिखर से मोक्ष गए।
सो मोहनकूट विशुद्ध किए सद्ध्यानी, हम सबके हैं वरदानी॥श्री..
४. हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभुकी कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
१. पद्मप्रभु जी नाथ हमारे, हम सबको प्राणों से प्यारे।-२
जग के हो उजयारे, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
२. धरणराज के राज दुलारे, सुसीमा माँ के नयन सितारे।-२
नगर सुसीमा आये, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
३. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ-२
'सुव्रत'को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...

===

श्री सुपार्श्वनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४

१. जिनको रूप सजाना अपना, सुन्दर जिनको होना।
दुख कष्टों से जिनको बचना, कभी न चाहें रोना॥
नगर बनारस जन्म धारकर, किए राज्य बड़भागी।
वन लक्ष्मी का नाश देखकर, बन बैठे वैरागी॥ ओम्...

२. ज्ञान सहेतुक वन में पाके, समवसरण मन मोहे।
खड्‌गासन सम्मेद शिखर से, मोक्ष प्राप्त कर शोभे॥
सुप्रतिष्ठ पृथ्वीसेना के, आप लाड़ले बेटे।
स्वस्तिक है पहचान आपकी, 'सुव्रत' को सुख देते॥ ओम्...

३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
सुपार्श्वनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री सुपार्श्वनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

जिनवर नाथ सुपार्श्वजी, सप्तम सुन्दरदेव।
दर्शन पूजन को झुके, भक्तशीश स्वयमेव॥

(शार्दूलविक्रीडित) (लय : मङ्गलाष्टक)

अरिहन्तेश सुपार्श्वनाथ भगवन्, तीर्थेश स्वामी तुम्हीं।
हो सिद्धालय मोक्षरूप जग में, श्रद्धा सुधा हो तुम्हीं॥
सारा ये जग आपसे तर रहा, दे दो सहारा हमें।

भक्तों की बस नाँव पार कर दो, सो ही पुकारा तुम्हें॥
होगी पार न नाँव तो फिर सुनो, होगी तुम्हारी हँसी।
चाहो आप न आप पै जग हँसे, तो तार दो शीघ्र ही॥
आस्था रोज पुकारती प्रभु तुम्हें, जल्दी सुनो प्रार्थना।
श्रद्धा मंदिर में निवास कर लो, प्रारम्भ हो अर्चना॥

(सोरठा)

प्रभु सुपार्श्व जिनराज, आतम कली खिलाइए।
निज सम हमको आज, सुन्दर रूप दिलाइये॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जाना है जिनको सदैव अपना, माना उन्हीं को सगा।
सारे संकट रोग कष्ट दुख भी, पाए उन्हीं से दगा॥
ऐसा ही हम राग रोग तजने, ले नीर सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

जो सांसारिक द्रव्य नश्वर रहे, देते सभी ताप वो।
प्राणीमात्र तपें जलें दुख सहें, त्यागें नहीं पाप को॥
ये वैभाविक भाव त्याग करने, ले गंध सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

अज्ञानी हम तो रहे क्षय हुआ, खोदा कुआ स्वार्थ का।
पूरा जो कब है भरा कपट से, घोंटा गला आत्म का॥
दे दो आश्रय भक्त को चरण का, ले पुंज सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

पाता जो कुछ भोग का विषय वो, भाता हमें है नहीं।
भाता जो कुछ भोग का विषय वो, पाता कभी भी नहीं॥
ये इच्छा जल को मिले तप सुधा, ले पुष्प सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

बीता काल अनन्त रोग तन को, वो भूख ही मारती।
आत्मा की सुध हो गई अब जिसे, वो ही उसे तारती॥
आत्मा को चखने सभी भगत ले, नैवेद्य सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

दीये भूपर सूर्य चाँद नभ में, तारे करें आरती।
ये अज्ञान निशा नहीं हर सकें, जानें नहीं भारती॥
पाएँ ज्योति अनन्तज्ञान हम भी, ले दीप सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

पापों की जड़ दौड़-धूप करके, बाँधे सदा गाठरी।
है विश्वास न दीप धूप फल पै, जो पुण्य की दे झड़ी॥
कर्मों का वन दग्ध हो चित खिले, ले धूप सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

रंगीले फल विश्व के हम तजें, जो पुण्य के पाप के।
आत्मा की निज स्वानुभूति फल को, कैसे चखें ओ! सखे॥
वो हों प्राप्त हमें तभी फल भरी, ले थाल सेवा करें।
हे! चैतन्य सुपार्श्वनाथ तुमको, पूजें नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

है विश्वास हमें जिनेन्द्र तुम पै, पूजा इसी से करें।
गाएंगे हम आपके भजन भी, गाथा इसी से करें॥
पाएंगे हम छाँव भी चरण की, आस्था हमारी यही।
आएंगे हम मोक्ष के महल में, श्रद्धा हमारी यही॥
आशीर्वाद हमें यही बस मिले, छूटे न पूजा कभी।
दो आशीष हमें यही बस प्रभो!, टूटे न आस्था कभी॥
ऐसी छाँव कृपा करो बस विभो!, अक्षय्य श्रद्धा करें।
आत्मा शाश्वत भेंट अर्घ्य बन सके, विश्राम यात्रा करें॥

(दोहा)

सुपार्श्वप्रभु की विश्व में, लीला अपरम्पार।
पूजक बनके पूज्य फिर, चलें मोक्ष के द्वार॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

भाद्र शुक्ल छठ को तजे, मध्यम पद अहमिन्द्र।
पृथ्वी माँ के गर्भ में, वसे सुपार्श्व जिनेन्द्र॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ज्येष्ठ शुक्ल बारस हुई, झूम-झूम विख्यात।
सुप्रतिष्ठ घर आँगने, जन्मे सुपार्श्वनाथ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस शुक्ला ज्येष्ठ में, तजे-मोह संसार।
प्रभु सुपार्श्व मुनि बन गए, गूँजे जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

षष्ठी फाल्गुन कृष्ण में, लोकालोक दिखाए।
सुर-नर नाथ सुपार्श्व को, सादर शीश नवाये॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सातें फागुन कृष्ण में, प्रभु सुपार्श्व गए मोक्ष।
गिरिवर प्रभास कूटमय, हम तो देते धोक॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(हाकलिका)

कर्म इन्द्रियाँ अंत करें, जिनवर प्रभु अरिहंत करें।
नाथ सुपारस की जय हो, नमोऽस्तु करके अतिशय हो॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१॥

अवधिज्ञान की किरण मिली, मोक्ष मार्ग की राह खुली।
नाथ सुपारस की जय हो, नमोऽस्तु करके अतिशय हो॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२॥

परमावधि का पथ पाया, परमातम का घर आया।
नाथ सुपारस की जय हो, नमोऽस्तु करके अतिशय हो॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३॥

सर्वावधि का सार मिला, स्वारथ का संसार टला।
नाथ सुपारस की जय हो, नमोऽस्तु करके अतिशय हो॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥४॥

अनन्तावधि के आश्रय से, पहुँचे पार भवालय से।
नाथ सुपारस की जय हो, नमोऽस्तु करके अतिशय हो॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥५॥

कोष्टबुद्धि ज्ञान मिला, हम सबको वरदान मिला।
नाथ सुपारस की जय हो, नमोऽस्तु करके अतिशय हो॥
ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥६॥
बीजबुद्धि की खोज किए, सुख भोगे सुख बाँट दिए।
नाथ सुपारस की जय हो, नमोऽस्तु करके अतिशय हो॥
ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥७॥
पदानुसारी राह चली, सबको तो सुख शांति मिली।
नाथ सुपारस की जय हो, नमोऽस्तु करके अतिशय हो॥
ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥८॥
संभिन्नश्रोतृ दिये वचन, किए निरोगी तन मन धन।
नाथ सुपारस की जय हो, नमोऽस्तु करके अतिशय हो॥
ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥९॥

(चौपाई)

स्वयंबुद्ध वैरागी हैं जो, दुख हरते दुख त्यागी हैं जो।
जय जय नाथ सुपारस स्वामी, करो कृपा हम पर वरदानी॥
ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१०॥
जो प्रत्येकबुद्ध संन्यासी, उनके चरण शरण के वासी।
जय जय नाथ सुपारस स्वामी, करो कृपा हम पर वरदानी॥
ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥११॥
जय हो बोधितबुद्ध निरंजन, जिनवर दूर करो आक्रन्दन।
जय जय नाथ सुपारस स्वामी, करो कृपा हम पर वरदानी॥
ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१२॥
जो ऋजुमति मनःपर्यय पाए, तब ही मन में आप समाए।
जय जय नाथ सुपारस स्वामी, करो कृपा हम पर वरदानी॥
ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१३॥

विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानी, प्रकटाए निज शक्ति ध्यानी।
जय जय नाथ सुपारस स्वामी, करो कृपा हम पर वरदानी॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१४॥

जो दसपूर्व ज्ञान के धारी, वो ही देते मुक्ति सवारी।
जय जय नाथ सुपारस स्वामी, करो कृपा हम पर वरदानी॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१५॥

जो चौदहपूर्वों के ज्ञानी, वो करते हमको विज्ञानी।
जय जय नाथ सुपारस स्वामी, करो कृपा हम पर वरदानी॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१६॥

जो निमित्त-अष्टांग निखारे, उनके हमने चरण पखारे।
जय जय नाथ सुपारस स्वामी, करो कृपा हम पर वरदानी॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१७॥

जो गुण अणिमा आदि सँभारे, उनसे सबको मिले सहारे।
जय जय नाथ सुपारस स्वामी, करो कृपा हम पर वरदानी॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वणपत्ताणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१८॥

(जोगीरासा)

विद्याधर जब बनें मुनि तो, सभी असंयम त्यागे।
मुक्तिवधू के नाथ पूज के, भाग्य सभी के जागे॥
विद्याधर मुनियों के रक्षक, नाथ सुपारस स्वामी।
हम तो सादर करके नमोऽस्तु, बनें भेद विज्ञानी॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१९॥

तप कर चारण-ऋद्धि से मुनि, जग को स्वस्थ बनाएँ।
जहाँ चरण धरती पर रख दें, चेतन को दिखलाएँ॥

चारण ऋद्धि ऋषियों के प्रभु, नाथ सुपारस स्वामी।
हम तो सादर करके नमोऽस्तु, बनें भेद विज्ञानी॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

प्रज्ञाश्रमण मुनिंदा आगम, पढ़े बिना हों ज्ञानी।
मंदबुद्धि के दोष नशाएँ, ज्ञान चुनिंदा दानी॥
व्यसन पाप अज्ञान मिटाएँ, नाथ सुपारस स्वामी।
हम तो सादर करके नमोऽस्तु, बनें भेद विज्ञानी॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

(सखी)

आकाशगमन जो करते, वो जीव दया आचरते।
हे! नाथ सुपारस अपने, प्रभु पूरे कर दो सपने॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

जो आशीर्विष को धारें, वो जीव कभी न मारें।
हे! नाथ सुपारस अपने, प्रभु पूरे कर दो सपने॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

जो दृष्टिर्विष को धारें, वो हम भक्तों को तारें।
हे! नाथ सुपारस अपने, प्रभु पूरे कर दो सपने॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२४॥

जो उग्रतपों के धारी, वो कर्मों के संहारी।
हे! नाथ सुपारस अपने, प्रभु पूरे कर दो सपने॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२५॥

जो दीप्ततपों के धारी, वो सबको दिए दिवाली।
हे! नाथ सुपारस अपने, प्रभु पूरे कर दो सपने॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२६॥

जो तप्ततपों के धारी, वो दें ऊर्जा हितकारी।
हे! नाथ सुपारस अपने, प्रभु पूरे कर दो सपने॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२७॥

जो महातपों के धारी, वो मंगल मंगलकारी।
हे! नाथ सुपारस अपने, प्रभु पूरे कर दो सपने॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२८॥

जो घोरतपों के धारी, वो करें तपस्या न्यारी।
हे! नाथ सुपारस अपने, प्रभु पूरे कर दो सपने॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

जो घोरगुणों के धारी, वो व्यसन बुराई निवारी।
हे! नाथ सुपारस अपने, प्रभु पूरे कर दो सपने॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(शुद्ध गीता)

पराक्रम घोर बल पाकर, लगाते ना बुराई में।
करें कल्याण जीवों के, लगाते मन भलाई में॥
सुपारसनाथ जी सुन्दर, हमें सुन्दर बना डालो।
करें हम भी नमोऽस्तु तो, हमारे कष्ट दुख टालो॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३१॥

पराक्रम ब्रह्म अघोर गुण से, जिन्होंने धर्म दिखलाया।
सभी के कर्म टालें जो, शरण उनकी जगत आया॥
सुपारसनाथ जी सुन्दर, हमें सुन्दर बना डालो।
करें हम भी नमोऽस्तु तो, हमारे कष्ट दुख टालो॥

ॐ ह्रीं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३२॥

धरें आमर्ष-औषध जो, उन्हीं के हम पुजारी हैं।
कभी न मारते प्राणी, दया उनकी सवरी है॥

सुपारसनाथ जी सुन्दर, हमें सुन्दर बना डालो।
करें हम भी नमोऽस्तु तो, हमारे कष्ट दुख टालो॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३३॥

(दोहा)

खेल्ल-औषधि धारके, हरते सारे रोग।
सुपार्श्वनाथ को पूज के, मिलें सुखों के योग॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३४॥

जल्ल-औषधि धार के, करें स्वस्थ संयोग।
सुपार्श्वनाथ को पूज के, मिलें सुखों के योग॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३५॥

विप्रुष-औषधि धारके, हरें जगत के भोग।
सुपार्श्वनाथ को पूज के, मिलें सुखों के योग॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३६॥

सर्व-औषधि धारके, सुखी करें भवि लोग।
सुपार्श्वनाथ को पूज के, मिलें सुखों के योग॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३७॥

मुहूर्त में श्रुत का करें, अथक मनन ऋषि लोग।
सुपार्श्वनाथ को पूज के, मिलें सुखों के योग॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

मुहूर्त में श्रुत का करें, अथक पाठ श्रुतज्ञान।
सुपार्श्वनाथ को पूज के, मिलें सुखों के योग॥

ॐ ह्रीं णमो वचिबलीणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(विष्णु)

उत्तम संहनन कायबली ने, मुक्तिवधू पाने।
कायोत्सर्ग धार कर त्यागे, पापों के गाने॥

संयम हेतु कायबल पाने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥४०॥

करपात्रों का भोजन तप से, बने क्षीर जैसा।
त्याग तपस्या का यह वैभव, आतम के जैसा॥
क्षीरस्रावि ऋद्धि ऋषिगण को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

अंजलि पुट का भोजन तप से, होता जैसे घी।
सुव्रत संयम का यह वैभव, कोन भुलाए जी॥
सर्पिस्रावि ऋद्धि ऋषिगण को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥४२॥

कड़वा-कड़वा भोजन तप से, बने मधुर जैसा।
महाव्रतों का मंगल वैभव, मिश्री के जैसा॥
मधुस्रावि ऋद्धि ऋषिगण को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

जहरीला भोजन भी तप से, होता अमृत सा।
सकल चरित का पूजित वैभव, आतम स्वाद वसा॥
अमृतस्रावी ऋद्धि ऋषि को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥४४॥

शेष रहा ऋषि भोजन तप से, कटक पेट भर दे।
व्रत-चर्या का अतिशय वैभव, सबको निज घर दे॥
यह अक्षीण माहनस-आलय, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥४५॥

ढाईद्वीप से सिद्धशिला तक, सिद्ध क्षेत्र सारे।
सिद्ध-भक्तियों का यह वैभव, आतम शृंगारे॥
ओम् णमो सिद्धाणं जप के, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणंश्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥४६॥

दोष त्याग के पूज्य गुणों को, जो स्वीकार करें।
अपवादों से हटा जगत को, भव से पार करें॥
वर्धमान चारित्र धारने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

नग्न साधुओं से संचालित, जिनशासन होता।
णमो लोए सव्वसाहूणं ये, मंत्र पाप खोता॥
पूज्य आर्ष मुनि परम्परा को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥४८॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

तीर्थकरों की छवि सुपारस, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सँभालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

सुपार्श्वनाथ स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धि सम्पन्न श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

आत्म शक्ति की व्यक्ति को, करें भक्ति हम लोग।
सुपार्श्वप्रभु के गीत गा, बने मुक्ति के योग॥

(ज्ञानोदय)

सुपार्श्वनाथ जिनराज आप हो, सुखसागर सुखअम्बर हो।
सुख के सूरज-चाँद सितारे, सुख के बादल भूधर हो॥
सुख की धरती सुख की वर्षा, तुम हो सुख की हरियाली।
सुखदाता सुख पुंज तुम्हीं हो, सुख की होली दीवाली॥१॥
सुख के रत्न खजाने तुम हो, सुख के तुम ही धाम रहे।
सुखानन्द तुम सुख शाश्वत हो, वीतराग विज्ञान रहे॥
तुम हो सुखिया हम तो दुखिया, कैसे तुमको पाएँ हम।
इसीलिए तो दर्शन करके, पूजा-पाठ रचाएँ हम॥ २॥
राज्य क्षेमपुर का इक राजा, नंदिषेण जो राज्य करे।
धर्म अर्थ अरु काम पुण्य से, बुद्धि पराक्रम प्राप्त करे॥
मोक्षमार्ग पर चलकर निज पर, जय करना उसकी इच्छा।
अतः पुत्र को राज्य दानकर, उसने ले ली मुनिदीक्षा॥३॥
तीर्थंकर पद कर्म बाँधकर, सल्लेखन कर सुर पाए।
मध्यम ग्रैवेयक की आयु, भोगी फिर भू पर आए॥
नगर बनारस में फिर जन्मे, जिनका नाम सुपार्श्व पड़ा।
जिनकी सेवा में जग वैभव, तव चरणों में आन खड़ा॥४॥

राज्य प्राप्त कर आठ तरह के, सुख पाए थे स्पर्शन के।
पाँच तरह के रसना वाले, नासा नयन कर्ण मन के॥
पंचेन्द्रिय विषयों को पाकर, आत्म नियंत्रण ना छोड़ा।
जब देखा था ऋतु परिवर्तन, तब मुनि बनने मन मोड़ा॥५॥
लौकान्तिक सुर गुण गाए तब, बैठ मनोगति शिविका में।
पहुँच सहेतुक वन में प्रभु ने, जिनदीक्षा ली संध्या में॥
साथ एक हजार राजा थे, बेला का था नियम लिया।
अगले दिन महेन्द्रदत्त ने, पड़गाहन कर दान दिया॥ ६॥
नौ वर्षो छद्मस्थ बिताए, फिर बेलामय ध्यान लगा।
गर्भ तिथी में गर्व हमें है, केवलज्ञानी हुए अहा॥
ज्ञानोत्सव फिर समवसरण में, जिन-बगिया के फूल झड़े।
जिसकी माला से भक्तों के, बन्धन कर्म समूल झड़े॥ ७॥
विहार रुचा न तो विहार तज, लोक शिखर पाने मचले।
मासिक योगनिरोध धारकर, सम्मेदाचल धाम चले॥
प्रभास कूट से कर्म हटाकर, प्रभु ने महा प्रयाण किया।
सूर्योदय में तब इन्द्रों ने, महा मोक्षकल्याण किया॥ ८॥
नाथ! आपने पापशत्रु को, बुद्धि-कला से मौन किया।
और बाद में मौन धारकर, करके युद्ध परास्त किया॥
समवसरण फिर मोक्षधाम पा, जैन धरम का मान रखा।
हम नजदीक आपके आए, हमने यह अरमान रखा॥ ९॥
जीव तत्त्व यह शुद्ध करा दो, अजीव हम से दूर करो।
हर लो आस्रव बन्ध द्वन्द्व सब, कर्म निर्जरा पूर्ण करो॥
द्रव्य भाव नोकर्म नशा दो, भक्तों को मत ठुकराओ।
शब्द छन्द पर ध्यान न देकर, करुणा कर अब अपनाओ॥१०॥

पास न अपने बुला सको तो, इतनी कृपा अवश्य करो।
आँखों से ना ओझल होना, सदा मनालय वास करो॥
श्वाँस-श्वाँस धड़कन-धड़कन से, दूर करो विभाव बदबू।
'सुव्रत' 'विद्या' के निजघट में, भर दो जिन-श्रद्धा खुशबू॥११॥

(सोरठा)

सुपार्श्वप्रभु दुखहार, जग को सुख के धाम हो।
क्या गाएँ गुणमाल, बारम्बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

सुपार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, सुपार्श्वनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय-श्री सिद्ध चक्र का पाठ...)

श्री सुपार्श्वनाथ का पाठ, करो दिन-रात, ठाठ से प्राणी।
हो मंगलमय कल्याणी।

१. श्री सुपार्श्वनाथ निराले हैं, उपसर्ग हटाने वाले हैं।
हैं विघ्न विनाशक संकट मोचक ज्ञानी, प्रभु नाम जगत कल्याणी॥श्री..

२. प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता हैए संसार मोक्ष सुख कर्त्ता है।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥श्री..

३. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

(छूम छूम छना नना....)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
१. श्री सुपार्श्व जी नाथ हमारे, हम सबको प्राणों से प्यारे।
जग के हो उजयारे, बाबा करूँ आरतिया ॥ छूम छूम...
२. सुप्रतिष्ट राज के राज दुलारे, पृथ्वी माँ के नयन सितारे।
काशी देश अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
३. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि सिद्धि सुख शान्ति दिलाओ।
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...

श्री चन्द्रप्रभ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. वर्तमान की चौबीसी में, चन्द्रप्रभु जी प्यारे।
जगह-जगह पर जिनके अतिशय, रहे जिनालय न्यारे॥
जिनकी चर्चा आज विश्व में, सबके मुख पर होती।
जो चट्टान चटक कर चमके, जला रहे जिन-ज्योति॥ ओम्...
२. चन्द्रपुरी के चाँद चकोरे, चाँदी सम बड़भागी।
महासेन व लक्ष्मणा सुत, बिजली देख विरागी॥
बने सवर्थी वन में चंदा, समवसरण के स्वामी।
खड़गासन सम्मेदशिखर से, मोक्ष पधारे ज्ञानी॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥

कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
चन्द्रप्रभु को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री चन्द्रप्रभ पूजन

स्थापना (दोहा)

चन्द्रप्रभु का नाम ही, हरे कष्ट सब पाप।
दर्शन पूजन से मिले, सब कुछ अपने आप॥

(ज्ञानोदय)

जो इस जग में स्वयं शुद्ध हैं, सबको शुद्ध बनाते हैं।
जिनके दर्शन भक्तजनों को, सुख की राह बताते हैं॥
ताराओं से घिरा चाँद भी, जिनके दर्शन को तरसे।
ऐसे चन्द्रप्रभु को हम तो, आज पूजकर हैं हर्षे॥
नाथ! आपके जगह-जगह पर, चमत्कार हैं अतिशय हैं।
भक्त मुक्ति सुख शान्ति सम्पदा, पाते कर्मों पर जय हैं॥
यही प्रार्थना यही भावना, धर्मामृत बरसाओ-ना।
बिन माँगे सब कुछ मिल जाता, हृदय हमारे आओ-ना॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

बचपन खोया खेल-खेल में, गई जवानी भोगों में।
देख बुढ़ापा फक्-फक् रोते, जीवन गुजरा रोगों में॥
रागों से छुटकारा मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
जनम-मरण आदिक दुख नशते, प्रासुक जल के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

चारु चन्द्र की किरणें चंदन, हिमकण जल की शीतलता।
भव संताप मिटे न इनसे, मुरझाती है जीव लता॥

तन-मन भव-संताप दूर हो, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
देह सुगन्धित बने मनोहर, शुभ चंदन के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जग पद पैसा नाम प्रतिष्ठा, ये ही संकट विकट रहे।
रूप दिगम्बर किसे सुहाता, जीव इसी बिन भटक रहे॥
पद आपद हर्त्ता पद मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
सुख-सम्पत्ती अक्षय मिलते, अखण्ड अक्षत अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

राम लखन सीता आदिक जो, ब्रह्मचर्य धर सुखी रहे।
ब्रह्मचर्य जो धर न सके वो, रावण जैसा दुखी रहे॥
इन्द्रिय जय कर प्रभु बन जाते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
माला जैसे खिलके महको, दिव्य पुष्प के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जिनकी भूख नींद रूठी वे, महा दुखी इंसान रहे।
जिनकी भूख नींद मिटती वे, महा पूज्य भगवान् रहे॥
भूख नींद आदिक दुख नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
स्वर्गों का साम्राज्य प्राप्त हो, ये नैवेद्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

यदि श्रद्धा विश्वास अटल हो, तो रत्नों के दीप जलें।
राहु-केतु शनि फिर भय खाते, सूर्य चाँद भी पूज चलें॥
मिले दीप यों मोह हरण को, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
काय-कान्ति भी अद्भुत बढ़ती, दीपक द्वारा अर्चन से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धुआँ-धुआँ जब चले सूर्य तो, ताप रोशनी मिले नहीं।
धुआँ-धुआँ जीवन जलता तो, कर्मों का वन जले नहीं॥

अष्ट कर्म का भव-वन जलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
फिर सौभाग्य सूर्य भी चमके, धूप सुगन्धी अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

भोग भोगकर धधक रहे हम, भोग हमें ही भोग रहे।
दुनियाँ के फल-फूल विषैले, गजब कर्म संयोग रहे॥
जहर भोग विषयों के नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
मनोकामना पूरी होती, प्रासुक फल के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम् वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

कृष्ण पंचमी चैत्र को, वैजयन्त सुर छोड़।
लक्ष्मणा माँ के गर्भ में, आए चन्द्र चकोर॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, जन्मे चन्द्र जिनेश।
महासेन के चन्द्रपुर, उत्सव किए सुरेश॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, तजे मोह संसार।
मुनि बनकर तप से सजे, जय-जय बारंबार॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सातें फाल्गुन कृष्ण में, बने केवली नाथ।
चन्द्रपुरी के चन्द्र को, झुकें सभी के माथ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सम्मेदाचल से गए, मोक्ष महल के धाम।
सातें फाल्गुन शुक्ल में, सुर नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(लघु चौपाई)

कर्म इन्द्रियाँ अपनी जीत, बनते जिनवर दें संगीत।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१॥

अवधिज्ञान का पा आलोक, शोक हरें प्रभु करें अशोक।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि का मिला प्रकाश, किया पाप का सत्यानाश।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि से पाकर सार, स्वामी छोड़ दिए संसार।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

पाकर अनन्त-अवधिज्ञान, ऋद्धि-सिद्धि का दें वरदान।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥

ॐ ह्रीं णमोअणंतोहिजिणाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

कोष्ठबुद्धि का पाकर धाम, सब को खोले सुख के धाम।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥
ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

बीजबुद्धि का पा भण्डार, मोक्षमार्ग का दे आहार।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥
ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी पाकर ज्ञान, क्रम-क्रम से हरते अज्ञान।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥
ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

संभिन्नश्रोती ऋद्धि महान, पाकर करें जगत कल्याण।
हम तो करें नमोऽस्तु आज, जय-जय चन्द्रप्रभु जिनराज॥
ॐ ह्रीं णमोसंभिण्णसोदाराणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

(सखी)

हो खुद से खुद उपकारी, पर जग के हो हितकारी ।
जय स्वयंबुद्ध तीर्थंकर, श्री चन्द्रप्रभु जी जिनवर॥
ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

जग देख हुए वैरागी, फिर बन बैठे निज-रागी।
प्रत्येकबुद्ध तीर्थंकर, श्री चन्द्रप्रभु जी जिनवर॥
ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

जो पर से पाकर शिक्षा, जीते हर एक परीक्षा।
बोधित्वबुद्ध तीर्थंकर, श्री चन्द्रप्रभु जी जिनवर॥
ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

जो मन के सरल विषय को, जो जाने मनपर्यय वो।
ज्ञाता-दृष्टा तीर्थंकर, श्री चन्द्रप्रभु जी जिनवर॥
ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१३॥

जो मन की जाने माया, वो ज्ञान विपुलमति पाया।
वह महा गुणी तीर्थंकर, श्री चन्द्रप्रभु जी जिनवर॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

जो दसपूर्वों के ज्ञाता, उनको हम टेकें माथा।
वह निज ज्ञानी तीर्थंकर, श्री चन्द्रप्रभु जी जिनवर॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

जो चौदहपूर्वी ज्ञानी, संसार सुखों के दानी।
सुख शांति करें तीर्थंकर, श्री चन्द्रप्रभु जी जिनवर॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../ दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ १६॥

(दोहा)

जो अष्टांगनिमित्त धर, कुशल करे संसार।
चन्द्रप्रभु जिनराज को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

अणिमा आदिक ऋद्धियाँ, धार किए उद्धार।
चन्द्रप्रभु जिनराज को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

विद्याधर मंगल करें, दें संयम भण्डार ।
चन्द्रप्रभु जिनराज को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

धरते चारण-ऋद्धि सो, जीव न हों संहार।
चन्द्रप्रभु जिनराज को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

बिन अध्ययन ज्ञानी हुए, करे ऋद्धि उपकार।
चन्द्रप्रभु जिनराज को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

तप बल से नभ में करें, दया सहित संचार।
चन्द्रप्रभु जिनराज को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

कभी न मारें जीव को, आशीर्विष को धार।
चन्द्रप्रभु जिनराज को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

नहीं देखते रोष से, दृष्टिर्विष को धार।
चन्द्रप्रभु जिनराज को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(बड़ी चौपाई)

करें कठिन तप लेकर दीक्षा, भक्तों को दें संयम शिक्षा।
पूज्य उग्रतप ऋद्धि धारें, चन्द्रप्रभु जी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

कर उपवास चमकती काया, यही ऋद्धि का अतिशय भाया।
पूज्य दीप्ततप ऋद्धि धारें, चन्द्रप्रभु जी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥

कर आहार निहार न होता, चमत्कार तप बल से होता।
पूज्य तप्ततप ऋद्धि धारें, चन्द्रप्रभु जी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

महा महा अनशन तप करते, उज्ज्वल जिनशासन को करते।
पूज्य महातप ऋद्धि धारें, चन्द्रप्रभु जी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

घोर घोर जो करें तपस्या, सारे जग की हरें समस्या ।
पूज्य घोरतप ऋद्धि धारें, चन्द्रप्रभु जी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२९॥

ऋद्धि घोरगुण जब प्रभु प्रकटा, सबके शोक वियोग नशाए।
पूज्य घोरगुण ऋद्धि धारें, चन्द्रप्रभु जी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(हाकलिका)

जगत विनाशक पाकर बल, करें न घात करें मंगल।
घोरपराक्रम के स्वामी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

महा अघोर-ब्रह्म गुण को, करें तपस्या निज पर को।
बनें अघोरब्रह्म ज्ञानी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

जिनकी छूकर काया को, स्वस्थ निरोगी काया हो।
आमर्ष-औषधि वरदानी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

खेल्ल थूक कफ आदि रहे, हरते तन की व्याधि रहे।
खेल्ल-औषधि कल्याणी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

बूँद पसीना जल्ल कहे, तप से हरते शल्य रहे।
जल्ल-औषधि सुखदानी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

मल मूत्रों ने रोग हरे, तप से सुख संयोग भरे।
विप्रुष-औषधि निजध्यानी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

छूकर तन को पवन चले, जीवों के हों भले-भले।
सर्वौषधि अन्तर्यामी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

बिना थके श्रुत का चिंतन, एक मुहूरत में मंथन।
कहे मनोबल जिनवाणी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

बिना थके श्रुत का वाचन, एक मुहूरत में पाठन।
भजें वचनबल हम प्राणी, जय-जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(विष्णु)

मिले ऋद्धि से महा कायबल, जिससे क्षोभ हुआ।
साधक कायोत्सर्ग करें तो, सबको लाभ हुआ॥
कर्म हरण को मिले कायबल, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

नीरस भोजन बने दुग्ध सम, महा तपोबल से।
हम भी करें तपस्या ऐसी, प्रभु के संबल से॥
पूज्य क्षीरस्रावी ऋद्धि को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

अरस भोज घी जैसा बनता, महा तपोबल से।
हम भी करें तपस्या ऐसी, प्रभु के संबल से॥
सर्पिस्रावी ऋद्धि साधना, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

वेरस भोजन मधुरमिष्ट हो, महा तपोबल से।
हम भी करें तपस्या ऐसी, प्रभु के संबल से॥

मधुस्रावी की ऋद्धि साधना, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

विष भी अमृत जैसा होता, महा तपोबल से।
हम भी करें तपस्या ऐसी, प्रभु के संबल से॥
अमृतस्रावी ऋद्धि साधना, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

ऋषि भोजन जो शेष बचे तो, महा तपोबल से।
चक्री सेना पेट भरे वा, रहती हिलमिल के॥
शुभ अक्षीण-महानस-आलय, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

सिद्धशिला तक जग में जितने, सिद्ध आयतन हैं।
बने बनाए बिना बनाए, सबको वंदन हैं॥
अपनी सिद्ध अवस्था पाने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणंश्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

वर्धमान बनने दुर्गुण वा, अवगुण त्याग दिए।
चरण शरण उनकी हम पाने, उनसे राग किए॥
वर्धमान चारित्र धारने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

जिनशासन में महावीर का, शासन आज चले।
गौतम-गुरु से विद्या-गुरु जी, सबके करें भले॥
जिनशासन का आश्रय पाने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप चंदा, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

चन्द्रप्रभु जिनवर करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

अन्ध-बन्धमय लोक को, दिए दृष्टि जिनराज।
ऐसे चन्द्र जिनेश जी, करिये दिल पर राज॥

(ज्ञानोदय)

अष्टम तीर्थंकर जो जग में, चन्द्रप्रभु भगवान् रहे।
अष्ट कर्म को हरने वाले, भक्तों की वे शान रहे॥
अतिशयकारी अतिशयधारी, उनकी महिमा हम गाएँ।
स्वर्ग सुखों में क्या रक्खा है, मोक्ष धर्म हम अपनाएँ॥ १॥

पहले भव में श्रीवर्मा जो, चार स्वप्न दे जन्म लिए।
जो जिनवर से तत्त्व ज्ञान ले, दीक्षा ले भव धन्य किए॥
फिर संन्यास मरण अपना के, पहले स्वर्ग सुरेश हुए।
स्वर्ग त्याग फिर आठ स्वप्न दे, अजितसेन चक्रेश हुए॥ २॥
फिर चक्री तप धार मरणकर, सोलहवे सुर रूप हुए।
सपना दे फिर स्वर्ग त्यागकर, पद्मनाभ सुत भूप हुए॥
पद्मनाथ वैराग्य धारकर, चउ आराधन संग लिए।
सोलहकारण भाय भावना, तीर्थंकर पद बन्ध किए॥ ३॥
अंत समय कर मरण समाधी, वैजयन्त सुर इन्द्र हुए।
फिर सोलह सपने देकर के, चन्द्रपुरी के चन्द्र हुए॥
शुक्ल वर्ण में शुक्ल भाव में, बनकर राजा राज्य किया।
सब कुछ नश्वर जान समझ के, मोक्षमार्ग वैराग्य लिया॥ ४॥
घातिकर्म हर हुए केवली, अष्टकर्म हर सिद्ध बने।
ताराओं के बीच चाँद ज्यों, ऐसे जगत् प्रसिद्ध बने॥
नाथ! आपने सात-सात भव, कठिन तपस्या धारण की।
तब जाके सब कर्म नाश कर, मोक्ष सम्पदा वारण की॥ ५॥
हमें तपस्या से डर लगता, मोक्षमार्ग ना धर्म रुचे।
फिर कैसे भव तीर मिलेगा, कैसे जग में लाज बचे॥
भाग्य हमारा बिगड़ न जावे, ऐसी ज्योति जला दीजे।
सागर की लहरों जैसे ही, हमको भी अपना लीजे॥ ६॥
सब पर तुम करुणा बरसाते, हम पर भी बरसाओ ना।
सूर्य चाँद जो कर न सकें वो, ज्ञान प्रकाश दिलाओ ना॥
चाँद राहु से होता दागी, किन्तु आप बे-दाग रहे।
'सुव्रत' की अब अर्जी सुन लो, जो शिव सुख को माँग रहे॥ ७॥

(दोहा)

सार्थक चन्दा नाम है, हमको करो निहाल।
सादर हम सब गा रहे, चरणों की जयमाल॥
स्वार्थ रहित है प्रार्थना, आश रहित गुणगान।
मनोकामना पूर्ण हो, मिले यही वरदान॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

चन्द्रप्रभु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, चन्द्रप्रभु जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री चन्द्रप्रभु का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥

१. श्री चन्द्रप्रभु केवलज्ञानी, हो निज-रमणी के तुम स्वामी।
हो चिदानंद के रसिया अन्तर्यामी, हम सबके हो वरदानी॥श्री..

२. प्रभु महासेन के नंदा हो, माँ लक्ष्मणा के चंदा हो।
हो चंदा जैसे चंद्रपुरी के चंदन, है चिन्ह चंद्रमा पावन॥श्री..

३. जब नभ में दिखी चमक बिजली, तब मोह त्याग ने राह मिली।
सो नागवृक्ष के नीचे बने विरागी, सम्मेदशिखर फिर त्यागी॥श्री..

४. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
१. श्री चैतन्य चमत्कारी जी, चेतन-धन के अधिकारी जी।-२
सबके हो उपकारी, बाबा करूँ आरतिया ॥ करूँ...
२. महासेन के राज दुलारे, लक्ष्मणा के नयन सितारे।-२
चन्द्रपुरी अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ।
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

श्री सुविधिनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. चौबीसी में पुष्पदंत जी, सबके शरण सहारे।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, होते बारे न्यारे॥
कौशल के काकंदीपुर में, जन्म लिए तीर्थंकर।
उल्कापात राज्य में लखकर, बने विरागी मुनिवर ओम्...॥
२. पुष्पक वन में केवलज्ञानी, हो यह सभा फिर लागी।
पद्मासन सम्मेदशिखर से, मोक्ष गए बड़भागी॥
जयरामा सुग्रीव राज के, तुम संतान मनोहर।
मगर चिह्न पहचान आपकी, 'सुव्रत' के प्रभु सुंदर॥ ओम्...

३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
सुविधिनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री सुविधिनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

पुष्पदंत जिनराज जी, रहे मुक्ति के धाम।
पूजन के पहले उन्हें, बारम्बार प्रणाम॥

(सखी)

हे! नवमें तीर्थंकर जी, हे! पुष्पदंत अरिहंता।
चैतन्यधाम के स्वामी, हे! परमपूज्य भगवन्ता॥
जो श्रमण संस्कृति के भी, संरक्षक संवाहक हैं।
जिनके श्री चरणों में हम, सादर नत मस्तक हैं॥
बस इसी भावना से हम, जिन पूजन पाठ रचाते।
अब हृदय निलय में आओ, हम सादर तुम्हें बुलाते॥
हम दुखी उदास न होवें, कुछ ऐसा कर दो स्वामी।
हे! सुविधिनाथ परमेश्वर, तुमको सादर प्रणमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

इस आतम ने मिथ्यामल, जबसे निज पर लिपटाए।
तो आतम तो ना झलका, पर जन्म-मृत्यु दुख पाए॥
अब जन्म-मृत्यु मिथ्या दुख, हो दूर नीर अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

रिश्ते नातों की ज्वाला, झुलसा देती हैं हमको।
फिर भी यह राग न हटता, क्या रोग लगा आतम को॥
यह राग-द्वेष की ज्वाला, हो दूर गंध अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

पर में दुनियाँ तत्पर है, नहिं प्रभु की कोई लहर है।
नहिं अपनी कोई डगर है, यह सबसे बुरी खबर है॥
अब पर-पर की तत्परता, हो दूर पुञ्ज अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

जो अंतस्-जय करता वह, अपना मन सुमन बनाता।
वह अंतस्-पुष्प खिला के, निज ब्रह्म बाग महकाता॥
अब व्यसन बुराई सब ही, हो दूर पुष्प अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

हर वस्तु भोगकर डाली, पर तृप्ति कभी ना पाई।
नहिं आतम को चख पाए, नहिं पूजन पाठ रचाई॥
उपभोग-भोग के भव दुख, हो दूर चरु अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

हे! नाथ जहाँ तुम जैसा, आदित्य न हो तो क्या हो।
साहित्य न हो तो क्या हो, राहित्य न हो तो क्या हो॥
भय घोर अंधेरा संकट, हो दूर दीप अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

कर्मों के खेल निराले, विधि लेख कौन वह टाले।
अब हम तो किसे पुकारें, जो हमको शीघ्र बचा ले॥
अब जेल खेल कर्मों का, हो दूर धूप अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

ये मधुर सरस फल सबको, सुख बाँटे खुद सहके गम।
हम काश कहीं हों ऐसे, तो सार्थक हो जिन-पूजन॥
अब सुख-दुख की आकुलता, हो दूर सुफल अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

जल फल आदिक का मिश्रण, यह सुन्दर अर्घ्य बनाके।
कई बार चढ़ाके लेकिन, अब तक कुछ भी ना पा के॥
हम आए हैं घबराके, क्या रह गई कमी हमारी।
क्यों दुखी परेशां हम हैं, क्यों मिली न मोक्ष सवारी॥
अब ऐसा अर्घ्य बना दो, अनमोल रहे जो सबसे।
हो कृपा कृपाकर अब तो, हम तुम्हें पुकारें कब से॥
अब सुनो प्रार्थना स्वामी, हम सबकी ओर निहारो।
हमें अपने पास बुलाके, चेतन का रूप सँभारो॥

(दोहा)

श्रद्धा से अर्पित करें, अर्घ्य झुकाकर शीश।
धर्म-धार टूटे नहीं, मिले यही आशीष॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

फागुन नवमी कृष्ण को, तजकर प्राणत स्वर्ग।
सुविधिनाथ प्रभु आ वसे, जयरामा के गर्भ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

एकम अगहन शुक्ल को, जन्मोत्सव त्यौहार।
राजा श्री सुग्रीव के, आए सुविधि कुमार॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लप्रतिपदायां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

एकम अगहन शुक्ल को, कर परिग्रह की शाम।
सुविधि तपोत्सव से सजे, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक शुक्ला दूज को, सुविधि हरे अज्ञान।
समवसरण तब लग गया, जिन्हें नमन अविराम॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भाद्र अष्टमी शुक्ल को, सुविधि बने सिद्धीश।
मुक्त हुए सम्मेद से, जिन्हें झुकाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(दोहा)

करके इन्द्री कर्म जय, बने पूज्य जिनराज।
सुविधिनाथ तीर्थेश को, करें नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१॥

अवधिज्ञान की ऋद्धियाँ, तारण तरण जहाज।
सुविधिनाथ तीर्थेश को, करें नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि की सिद्धियाँ, हैं धार्मिक साम्राज्य।
सुविधिनाथ तीर्थेश को, करें नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि उपलब्धियाँ, करें जगत पर राज्य।
सुविधिनाथ तीर्थेश को, करें नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

अनन्तावधि की भक्तियाँ, निज-रमणी सरताज।
सुविधिनाथ तीर्थेश को, करें नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

कोष्टबुद्धि की शक्तियाँ, मुक्तिवधू की लाज।
सुविधिनाथ तीर्थेश को, करें नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

बीजबुद्धि की युक्तियाँ, शुद्धातम आवाज।
सुविधिनाथ तीर्थेश को, करें नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी मुक्तियाँ, मोक्ष महल का ताज।
सुविधिनाथ तीर्थेश को, करें नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

(सोरठा)

संभिन्नश्रोतृ धार, कर्म भार के नाश को।
नमोऽस्तु बारम्बार, सुविधिनाथ जिनराज को॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

स्वयंबुद्ध ऋषिराज, ऋद्धि सिद्धि साम्राज्य दो।
नमोऽस्तु बारम्बार, सुविधिनाथ जिनराज को॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

प्रत्येकबुद्ध व्रतराज, संयम का उपहार दो।
नमोऽस्तु बारम्बार, सुविधिनाथ जिनराज को॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥११॥

बोधितबुद्ध विराग, वीतराग वैराग्य दो।
नमोऽस्तु बारम्बार, सुविधिनाथ जिनराज को॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१२॥

ऋजुमति मनःपर्यय, हमें सरलता भाव दो।
नमोऽस्तु बारम्बार, सुविधिनाथ जिनराज को॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१३॥

ज्ञान विपुलमति पाए, हरो कुटिलता भाव को।
नमोऽस्तु बारम्बार, सुविधिनाथ जिनराज को॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१४॥

दसपूर्वों को साध, करो निरोगी विश्व को।
नमोऽस्तु बारम्बार, सुविधिनाथ जिनराज को॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१५॥

चौदहपूर्व विचार, चले मोक्ष के द्वार को।
नमोऽस्तु बारम्बार, सुविधिनाथ जिनराज को॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१६॥

(सखी)

अष्टांगनिमित्त विधाता, जो रत्नत्रय के दाता।
प्रभु सुविधिनाथ जिनदेवा, हम करें नमोऽस्तु सेवा॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

जो ऋद्धि-विक्रिया पाके, भव पार गए निज ध्याके।
प्रभु सुविधिनाथ जिनदेवा, हम करें नमोऽस्तु सेवा॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

नर विद्याधर संयम ले, जग त्याग गए सुन पगले।
प्रभु सुविधिनाथ जिनदेवा, हम करें नमोऽस्तु सेवा॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१९॥

जो चारण-ऋद्धि विशेषा, हो आशीर्वाद हमेश।
प्रभु सुविधिनाथ जिनदेवा, हम करें नमोऽस्तु सेवा॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

प्रभु प्रज्ञाश्रमण विरागी, संसार तटों के त्यागी।
प्रभु सुविधिनाथ जिनदेवा, हम करें नमोऽस्तु सेवा॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२१॥

जो हैं नभ कमल विहारी, जिन पर मोहित नर नारी।
प्रभु सुविधिनाथ जिनदेवा, हम करें नमोऽस्तु सेवा॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

जो आशीर्विष हितकारी, वो भगवन अतिशयकारी।
प्रभु सुविधिनाथ जिनदेवा, हम करें नमोऽस्तु सेवा॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२३॥

जो दृष्टिर्विष की दृष्टि, समृद्ध रखें जग सृष्टि।
प्रभु सुविधिनाथ जिनदेवा, हम करें नमोऽस्तु सेवा॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(शंभू)

जो उग्र तपस्या करके दुख, संताप विश्व के नाश करें।
हो सुविधिनाथ को नमोऽस्तु जो, जिनभक्तों में संन्यास भरें॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

जो दीप्ततपों का तप करके, ऋषिराज मोक्ष पुरुषार्थ करें।
हो सुविधिनाथ को नमोऽस्तु जो, जिनभक्तों में संन्यास भरें॥
ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥
जो तप्ततपों की महिमा से, भव ज्वाला सत्यानाश करें।
हो सुविधिनाथ को नमोऽस्तु जो, जिनभक्तों में संन्यास भरें॥
ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥
जो महातपों की माटी से, मुक्ति के महल निवास करें।
हो सुविधिनाथ को नमोऽस्तु जो, जिनभक्तों में संन्यास भरें॥
ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥
जो घोरतपों की भट्टी में, तप कर कर्मों का नाश करें।
हो सुविधिनाथ को नमोऽस्तु जो, जिनभक्तों में संन्यास भरें॥
ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥
जो घोरगुणों की घाटी को, चढ़कर चैतन्य विकास करें।
हो सुविधिनाथ को नमोऽस्तु जो, जिनभक्तों में संन्यास भरें॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(हाकलिका)

धारी घोरपराक्रम के, बल पाने हम आ धमके।
पुष्पदंत जिनराज नमो, करके नमोऽस्तु सुखी बनो॥
ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥
स्वामी घोरब्रह्मगुण के, बह्मरमण दो आतम के।
पुष्पदंत जिनराज नमो, करके नमोऽस्तु सुखी बनो॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥
जो आमर्ष धरें औषध, पापों का करते हैं वध।
पुष्पदंत जिनराज नमो, करके नमोऽस्तु सुखी बनो॥
ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

खेल्ल-औषधी धारी के, पैर पड़ो अनगारी के।
पुष्पदंत जिनराज नमो, करके नमोऽस्तु सुखी बनो॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

जल्ल-औषधी के बाबा, दो अध्यात्म मोद मावा।
पुष्पदंत जिनराज नमो, करके नमोऽस्तु सुखी बनो॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३५॥

विप्रुष-औषध के सागर, चेतन दे दो चमका कर।
पुष्पदंत जिनराज नमो, करके नमोऽस्तु सुखी बनो॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

(हरिगीतिका)

जो सर्व-औषध ऋद्धि धारी, दान दें सुख वृद्धियाँ।
वो सुविधिनाथ जिनेन्द्र जिनको, हो नमोऽस्तु सिद्धियाँ॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

धारें मनोबल सिद्धियाँ जो, वो हरें मन व्याधियाँ।
वो सुविधिनाथ जिनेन्द्र जिनको, हो नमोऽस्तु सिद्धियाँ॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

जो वचनबल लब्धियाँ धर, दें जगत उपलब्धियाँ।
वो सुविधिनाथ जिनेन्द्र जिनको, हो नमोऽस्तु सिद्धियाँ॥

ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

कायबली ने कर्म कषायें, हर डालीं आहा।
ओम् ह्रीं सुविधिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

क्षीरस्रावि को क्षमा धार कर, प्रकट किए आहा।
ओम् ह्रीं सुविधिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

सर्पिस्त्रावि को समता धरकर, उपजाए आहा।
ओम् ह्रीं सुविधिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥
मधुरस्त्रावि को ममता तज के, सिद्ध किए आहा।
ओम् ह्रीं सुविधिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥
अमृतस्त्रावि को अमृत सा, ध्यान किए आहा।
ओम् ह्रीं सुविधिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥
पा अक्षीण-महानस-आलय, मोक्ष चले आहा।
ओम् ह्रीं सुविधिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥
वर्धमान के गुण पाने को, अधीर हों आहा।
ओम् ह्रीं सुविधिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥
सिद्ध धाम श्री सिद्ध आयतन, तुम ही हो आहा।
ओम् ह्रीं सुविधिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥
नग्न दिगम्बर मुनिराजों को, नमोऽस्तु हो आहा।
ओम् ह्रीं सुविधिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप सुविधि, नाथ जिनवर नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥

सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

सुविधिनाथ स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

सुविधि प्रभु अनुपम रहे, दें इच्छित वरदान।
शाश्वत गुण पाने करें, नमन भजन गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिन भगवन् ने विशाल निर्मल, पूज्य मोक्ष पथ चला दिया।
अनेक शिष्यों के भविष्य को, मोक्ष स्वरूपी बना दिया॥
मोक्षमार्ग विधि रूप हुए जो, सुविधि-प्रभु जी उन्हें कहें।
हम भी मोक्षमार्ग की उत्तम, विधि को पाने भक्ति करें ॥१॥

फूलों जैसी सुन्दर जिनकी, दन्त पंक्तियाँ लहरातीं।
जिससे अनुपम मुख की शोभा, भक्त जनों के मन भाती॥
जो भव महा मरुस्थल में तो, छायादार वृक्ष जैसे।
वही पूज्य प्रभु पुष्पदन्त हैं, उनको भूलें हम कैसे॥२॥

जिनका तन अशान्त रहता हो, वाणी आकुल-व्याकुल हो।
सदाचार ना पलता जिनका, दुखिया जिनका संकुल हो॥
उपसर्गों से परीषहों से, जो हो जाते विचलित हों।
उन्हें मिले विधि सम्यक् यदि वे, सुविधि प्रभु के आश्रित हों॥३॥

महापद्म नामक राजा जो, गुणी प्रजा को सुखी किया।
जिनको देकर ज्ञान भूत हित, प्रभु ने अंतर्मुखी किया॥
जिनके उपदेशामृत को पी, राजा चिन्तन मग्न हुआ।
भव-भोगों से विरक्त होकर, मोक्षमार्ग संलग्न हुआ॥४॥
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकरप्रकृति बाँधी।
और अन्त में समाधि धर कर, प्राणत सुर पदवी साधी॥
चले स्वर्ग से काकंदीपुर, राजा थे सुग्रीव जहाँ।
रही पट्टरानी जयरामा, हुआ आपका जन्म वहाँ॥५॥
इन्द्रों ने जन्मोत्सव करके, पुष्पदंत यह नाम रखा।
राज्य प्रेम पूर्वक भोगा फिर, जिनको उल्कापात दिखा॥
राजा को वैराग्य हुआ तो, लौकान्तिक ने पद पूजे।
सुमति पुत्र को राज्य सौंपकर, सूर्य प्रभा से वन पहुँचे॥६॥
पुष्पक वन में पुष्पदंत ने, पुष्पवृष्टिमय तप ओढ़ा।
पंचमुष्टि केशलौंच किए फिर, पंच पाप परिग्रह छोड़ा॥
पंच महाव्रत धार लिए तो, रूप दिगम्बर संत हुए।
पुष्पमित्र आहारदान से, जिनशासन जयवंत हुए॥७॥
चार वर्ष छद्मस्थ बिताकर, नागवृक्ष के नीचे जा।
केवलज्ञान प्राप्त कर डाला, सुरनर पर्व करें गा-गा॥
समवसरण का अचिन्त्य वैभव, अहा! दिव्यध्वनि की शोभा।
मुख्य अठासी गणधर के गुण, क्या इससे सुन्दर होगा॥८॥
विहार कर सम्मेदशिखर के, उच्च कूट सुप्रभ पर जा।
हजार मुनि के साथ शाम को, मोक्षमहल में वसे अहा!

किन्तु कठिन यह मोक्ष महापथ, हमको सरल बना डाला।
अंतरंग-बहिरंग नमन कर, जिनको शीश झुका डाला॥९॥
जय ऐसे प्रभु पुष्पदंत की, जय-जय से रज कर्म गली।
भूत डाकिनी ग्रह बाधा फिर, क्यों ना भागें ढूँढ गली॥
किन्तु शुक्र ग्रह शुक्र दिवस में, इन्हें बाँधते कुछ पागल।
सुनो! इन्हीं के नाम मात्र से, क्षण में हो मंगल-मंगल॥१०॥
अब इतनी सी विनय आपसे, संकट उलझन दूर करो।
इतना अगर न कर सकते तो, हममें साहस धैर्य भरो॥
लाभ हानि सुख दुख सब सहके, लीन रहें प्रभु चरणों में।
पूजन पाठ तभी सार्थक जब, 'सुव्रत' हों शिव शरणों में॥११॥

(सोरठा)

पुष्पदंत भगवान्, मगर चिह्नमय शोभते।
हम करने कल्याण, सादर गुण गा पूजते॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

सुविधिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेट दो, सुविधिनाथ जिनराज॥

(पुष्पांजलिं...)

===

महिमा

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री पुष्पदंत का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
१. श्री पुष्पदंत जिनराज अहो!, भक्तों के दिल पर राज करो।
सो पुष्पदंत की भक्ति करें विश्रामीए अक्षय बनने को स्वामी॥श्री..
२. जो नगर अयोध्या जन्म लिए, सम्मेदशिखर से मोक्ष गए।
हम भक्त पूजते कल्याणक सुखकारी, सो नमोऽस्तु बारी–बारी॥श्री..
३. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..
४. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी–ध्यानी॥श्री..

आरती

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
१. पुष्पदंत जिनराज हमारे, अक्षय हैं प्रभु तारणहारे–२
धार्मिक राजदुलारे, बाबा करूँ आरतिया॥करूँ...
२. जयरामा सुग्रीव सितारे, कुदपुष्प सम गोरे न्यारे–२
काकंदी अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।–२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि–सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ–२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

श्री शीतलनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। -४

१. चौबीसी में शीतलप्रभु जी, शीतलता सुख दानी।
मनो वचन काया की पीड़ा, दूर करें जिनस्वामी।
मालवदेश भद्रिलापुर में, जन्म लिए जिनवर जी।
दृढ़रथ राजा मात सुनंदा, पुत्र बने मुनिवर जी॥ओम्...

२. बने मनोहर वन में ज्ञानी, समवसरण के त्यागी।
कल्पवृक्ष पहचान आपकी, मुक्तिवधु के रागी॥
पद्मासन सम्मेदशिखर से, पा विद्युतवर कूट।
मोक्ष गए सो करके नमोऽस्तु, रे! 'सुव्रत' सुख लूट॥ओम्...

३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
शीतलनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री शीतलनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

तीर्थंकर दसवे प्रभो, जिनवर शीतलनाथ।
उद्यत गुण गाने हुए, सभी भक्त नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

हे शीतलप्रभु! हे शीतलप्रभु!, शीतल-शीतल सदा करो।
जो भी रटते नाम आपका, उनकी भव-दुख व्यथा हरो॥
कर्मों के संताप आपके, नाम मात्र से शीतल हों।

दशों दिशाएँ पावन होतीं, कण-कण सुरभित मंगल हों॥
नाथ! आपके दर्शन करके, तन-मन पुलकित हो जाता।
चरण-शरण में भक्त जनों का, आक्रन्दन अघ खो जाता॥
हमें भक्ति का मिला सहारा, तो हम गुण क्यों ना गाएँ।
सुन लो विनती नाथ! हमारे, मन मन्दिर में वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जल जैसा अपना आतम पर, बना अवगुणी दुर्गति से।
शुद्ध और शीतल बन जाता, नाथ आपकी संगति से॥
प्रासुक जल का लिया सहारा, चेतन पावन हो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

चंदन के बस दो गुण समझो, सौरभ दे तन ताप हरे।
किन्तु आपकी जिनवाणी तो, भव-भव का संताप हरे॥
चंदन का अब लिया सहारा, चेतन शीतल हो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

मुट्ठी बाँधे आते हम सब, हाथ पसारे जाना रे।
किन्तु बीच में पद-लालच में, हाथ रहा पछताना रे॥
तन्दुल का अब लिया सहारा, अक्षयपद को हम ध्याए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

आकर्षक है खिला महकता, फूल नीम का कटुक रहा।
ऐसे ही है काम सुगंधी, जिसका फल जग भुगत रहा॥

पुष्प चढ़ा के शील-पुष्प से, मन की बगिया खिल जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भूख मिटी ना भोग मिटे ना, मिट-मिट गए सदा हम ही।
फिर भी भोगों को ना त्यागा, पाएँ इच्छा से कम ही॥
चढ़ा-चढ़ा नैवेद्य आपको, ज्ञानामृत पर ललचाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

अंधों को दिन-रात बराबर, मोही को यह जग वैसे।
नाथ! आपके ज्ञान दीप बिन, मिटे मोह का तम कैसे?
नेत्रों का पूरा उन्मीलन, करवा दो तम खो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

धूप जले तो मंदिर महके, किन्तु सभी जग ना महके।
किन्तु आपके नाम मात्र से, भक्त जगत् आतम महके॥
धूप चढ़ाके कर्म जलाने, आतम महकाने आए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

पुण्य कार्य करना ना चाहें, किन्तु पुण्य फल सब चाहें।
पाप कार्य सब करते हैं पर, पापों के फल ना चाहें॥
पाप त्यागकर पुण्य प्राप्ति को, थाल-थाल भर फल लाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

वसु द्रव्यों का लिया सहारा, गुण गाने की आशा से।
भाव भक्ति तो दिखा न सकते, टूटी-फूटी भाषा से॥

अर्घ्य भावमय छोटा सा पर, अनर्घपद मन में भाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

चैत्र अष्टमी कृष्ण में, त्यागे अच्युत धाम।
वसे सुनन्दा गर्भ में, श्री शीतल भगवान॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अष्टम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण बारस लिए, शीतल जिनवर जन्म।
राजा दृढरथ भद्रपुर, पर्व करें हो धन्य॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण बारस तिथि, तजे राग की वस्तु।
नग्न सहेतुक में हुए, शीतल मुनि को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस कृष्णा पौष में, कर अज्ञान जयोस्तु।
शीतल प्रभु सर्वज्ञ को, करते भक्त नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अश्विन शुक्ला अष्टमी, इक हजार मुनि साथ।
मोक्ष गये सम्मेद से, नमोऽस्तु शीतलनाथ॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(अर्द्ध ज्ञानोदय)

करके इन्द्री कर्म विजय प्रभु, जगत पूज्य जिनराज हुए।
शीतलप्रभु को करके नमोऽस्तु, चरण शरण हम आज छुए॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१॥

अवधिज्ञान की मिलीं ऋद्धियाँ, सो भक्तों के राज हुए।
शीतलप्रभु को करके नमोऽस्तु, चरण शरण हम आज छुए॥
ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२॥
परमावधि की साध सिद्धियाँ, जिनवर जग सरताज हुए।
शीतलप्रभु को करके नमोऽस्तु, चरण शरण हम आज छुए॥
ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥
सर्वावधि के लाभ लब्धियाँ, तारण तरण जहाज हुए।
शीतलप्रभु को करके नमोऽस्तु, चरण शरण हम आज छुए॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥
अनन्तावधि की भाव भक्तियाँ, चेतन के साम्राज्य हुए।
शीतलप्रभु को करके नमोऽस्तु, चरण शरण हम आज छुए॥
ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥
कोष्टबुद्धि की प्रकट शक्तियाँ, दिव्य ध्वनि के बाज हुए।
शीतलप्रभु को करके नमोऽस्तु, चरण शरण हम आज छुए॥
ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥
बीज बुद्धि की युक्त युक्तियाँ, वैरागी के ताज हुए।
शीतलप्रभु को करके नमोऽस्तु, चरण शरण हम आज छुए॥
ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥
पदानुसारी मुक्त मुक्तियाँ, जिनालयों के साज हुए।
शीतलप्रभु को करके नमोऽस्तु, चरण शरण हम आज छुए॥
ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥८॥

(दोहा)

संभिन्नश्रोतृ धार के, भेदभाव सब नाश।
नमोऽस्तु शीतलनाथ को, कर पाएँ संन्यास॥
ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

स्वयंबुद्ध ऋषिराज जी, ऋद्धि सिद्धि आवास।
नमोऽस्तु शीतलनाथ को, कर पाएँ संन्यास॥
ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१०॥
प्रत्येकबुद्ध परमात्मा, दूर करो परिहास।
नमोऽस्तु शीतलनाथ को, कर पाएँ संन्यास॥
ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥११॥
बोधितबुद्ध विराटता, वीतराग के पास।
नमोऽस्तु शीतलनाथ को, कर पाएँ संन्यास॥
ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥
ऋजुमति मनपर्यय करें, सम्यक् सरल विकास।
नमोऽस्तु शीतलनाथ को, कर पाएँ संन्यास॥
ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥
ज्ञान विपुलमति से हुआ, मायाचार विनाश।
नमोऽस्तु शीतलनाथ को, कर पाएँ संन्यास॥
ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१४॥
दसपूर्वों को साध के, हरो धर्म का ह्रास।
नमोऽस्तु शीतलनाथ को, कर पाएँ संन्यास॥
ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥
चौदहपूर्वों के गुणी, गुण गण के विन्यास।
नमोऽस्तु शीतलनाथ को, कर पाएँ संन्यास॥
ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

(अर्द्ध जोगीरासा)

जो अष्टांगनिमित्त विधाता, संयम पथ दातारी।
शीतलनाथ जिनेन्द्र आपको, नमोऽस्तु बारी-बारी॥
ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

ऋद्धि विक्रिया धारी ऋषिवर, आप नहीं संसारी।
शीतलनाथ जिनेन्द्र आपको, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

नर विद्याधर संयम धरकर, त्याग गए नर नारी।
शीतलनाथ जिनेन्द्र आपको, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१९॥

चारण-ऋद्धि प्राप्त हुई तो, जय चैतन्य विहारी।
शीतलनाथ जिनेन्द्र आपको, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२०॥

होकर प्रज्ञाश्रमण विरागी, देखो निज बलिहारी।
शीतलनाथ जिनेन्द्र आपको, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

नभासीन नभ कमल विहारी, मुद्रा अतिशयकारी।
शीतलनाथ जिनेन्द्र आपको, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

जो आशीर्विष के अधिकारी, दिशा दिशा उपकारी।
शीतलनाथ जिनेन्द्र आपको, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

जो दृष्टिर्विष के देवालय, महादेव संस्कारी।
शीतलनाथ जिनेन्द्र आपको, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(सोरठा)

उग्र तपस्या धार, हरें पाप संताप को।
नमोऽस्तु बारम्बार, जिनवर शीतलनाथ को॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

दीप्ततपो शृंगार, ऋषिराजों की जाप हो।
नमोऽस्तु बारम्बार, जिनवर शीतलनाथ को॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥

तप्ततपों का हार, पहना तज घर-बार को।
नमोऽस्तु बारम्बार, जिनवर शीतलनाथ को॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

महातपों का सार, मिला मुक्ति के यार को।
नमोऽस्तु बारम्बार, जिनवर शीतलनाथ को॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२८॥

घोरतपों का पार, पाया निज अधिकार को।
नमोऽस्तु बारम्बार, जिनवर शीतलनाथ को॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२९॥

घोरगुणी भण्डार, लुटा रहे संसार को।
नमोऽस्तु बारम्बार, जिनवर शीतलनाथ को॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३०॥

(सखी)

धर घोरपराक्रम ऋद्धि, दो ऋद्धि-सिद्धि समृद्धि।
श्री शीतलनाथ जिनंदा, हो नमोऽस्तु परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

प्रभु घोर-ब्रह्मगुण ज्ञाता, हैं ब्रह्मरमण विख्याता।
श्री शीतलनाथ जिनंदा, हो नमोऽस्तु परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

आमर्ष-औषधी वेत्ता, दुख रोग शोक भय हर्त्ता।
श्री शीतलनाथ जिनंदा, हो नमोऽस्तु परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

प्रभु खेल्ल-औषधी धारी, खल भाग हरो बीमारी।
श्री शीतलनाथ जिनंदा, हो नमोऽस्तु परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

जय जल्ल-औषधी योगी, चैतन्य भोग के भोगी।
श्री शीतलनाथ जिनंदा, हो नमोऽस्तु परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

हे! विप्रुष-औषध देवा, स्वीकार करो पद सेवा।
श्री शीतलनाथ जिनंदा, हो नमोऽस्तु परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

(अर्द्ध शंभू)

जो सर्व-औषधी ऋद्धि धरें, वो सबको सुखी बनाते हैं।
हम शीतलप्रभु को नमोऽस्तु कर, अध्यात्म पुण्य फल पाते हैं॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

जो धरें मनोबल मनोबली, वो कर्म कठोर नसाते हैं।
हम शीतलप्रभु को नमोऽस्तु कर, अध्यात्म पुण्य फल पाते हैं॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

जो धरें वचनबल वचनबली, वो वचन ब्रह्म सुख लाते हैं।
हम शीतलप्रभु को नमोऽस्तु कर, अध्यात्म पुण्य फल पाते हैं॥

ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

कायोत्सर्ग करें कुंदन सा, कायबली आहा।
ओम् ह्रीं शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

क्षीरस्रावि को प्रकट किए तो, क्षमा मिली आहा।
ओम् ह्रीं शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

सर्पिस्त्रावि को साध लिए तो, सिद्ध हुए आहा।
ओम् ह्रीं शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

मधुरस्त्रावि को मोह लिए तो, महा बनें आहा।
ओम् ह्रीं शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

अमृतस्त्रावि का मंथन करके, मुक्त हुए आहा।
ओम् ह्रीं शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

पा अक्षीण-महानस-आलय, श्रम त्यागे आहा।
ओम् ह्रीं शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

वर्धमान गुण प्राप्त किए तो, वीर बने आहा।
ओम् ह्रीं शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

सिद्धक्षेत्र निर्वाण आयतन, आप रहे आहा।
ओम् ह्रीं शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

नग्न दिगम्बर निर्ग्रंथों को, नमोऽस्तु हो आहा।
ओम् ह्रीं शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप शीतल, नाथ जिनवर नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥

सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

शीतलनाथ स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

जग में क्या शीतल रहा, यही समझने बात।
जयमाला के नाम हम, ध्याएँ शीतलनाथ॥

(ज्ञानोदय)

दृढ़रथ पिता सुनन्दा माँ के, शीतलनाथ पुत्र प्यारे।
धर्म-कर्म विच्छेद हुआ तो, स्वर्ग लोक से अवतारे॥
नब्बे धनुष उच्च कंचन सा, तीर्थंकर तन प्राप्त किया।
अनुपम सुखदा पूज्य पिता का, पद पाकर के राज्य किया॥ १॥
वन विहार को कभी गए तो, हिम-पाला देखा वन में।
किन्तु क्षणिक वह नष्ट हुआ तो, जल्दी वैरागे मन में॥
क्षण-क्षण नश्वर देख जगत् को, मोह बन्ध तजने मचले।
राग-द्वेष आदिक दोषों को, शीघ्र त्यागने को निकले॥ २॥
दुखी और दुख, दुख के कारण, समझ इन्हें अब तजना है।
सुखी और सुख, सुख के कारण, समझ इन्हें अब भजना है॥
विषय भोग में यदि सुख होता, तो मैं सबसे बड़ा सुखी।

किन्तु मुझे संतोष तनिक ना, इनसे तो मैं हुआ दुखी॥ ३॥
विषय भोग से जो सुख माने, वह सुख मिथ्या है भ्राता।
ये ही सुखाभास चेतन को, भव गलियों में भटकाता॥
देह जेल में यथा बँधे ज्यों, पिंजड़े में पक्षी तोता।
बँधा हुआ खम्भे से हाथी, रोता सदा दुखी होता॥ ४॥
उदासीन जग से होना ही, साँचा सुख वह कहलाता।
मोह त्याग बिन वह साँचा सुख, कौन तपस्या बिन पाता?
राज्य भोग सब मोह त्यागकर, जल्दी दीक्षा ले डाली।
केवलज्ञान प्राप्त करने को, घातिकर्म रज हर डाली॥ ५॥
दोष अठारह नशा दिए तो, समवसरण में शोभित हो।
भक्तों के तारक तीर्थंकर, त्रय लोकों में पूजित हो॥
हे जिन सूरज! शीतलस्वामी, हमें भक्ति फल बस यह दो।
सम्यक् श्रद्धा रहे आप में, 'सुव्रत' को संबल यह दो॥ ६॥

(दोहा)

भक्ति वन्दना से खिले, शिव अंकुर वैराग्य।
हे जिन! शीतल छाँव में, पले बढ़े सौभाग्य॥
शीतल प्रभु को पूजकर, होते भक्त निहाल।
सही गलत को जानकर, छोड़ें जग जंजाल॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं ...।

शीतलजिन! शीतल करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! शीतल जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री शीतलप्रभु का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
१. श्री शीतलप्रभु तीर्थंकर जी!, भक्तों के आप हितंकर जी।
सुख शांति प्रदाता शीतल छाया स्वामी, सो भक्त करें प्रणमामि॥श्री..
२. जो नगर विदिशा जन्म लिए, सम्मेदशिखर से मोक्ष गए।
श्री शीतलधाम निवास किए सुखकारी, सो नमोऽस्तु बारी-बारी॥श्री..
३. प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता हैं, संसार मोक्षसुख कर्त्ता हैं।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥श्री..
४. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..
५. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
१. शीतल प्रभु जी नाथ हमारे, सबको देते साथ सहारे-२
सबने चरण पखारे, बाबा करूँ आरतिया ॥ करूँ...
२. दृढ़रथ राजा के हो नंदन, मात सुनंदा के हो कुंदन।-२
विदिशा में अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ-२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

श्री श्रेयांसनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. जिनवर श्री श्रेयांसनाथ जी, अर्हत अतिशयकारी।
विघ्न विनाशक मंगलकारी, विघ्न अमंगल हारी॥
कौशल भूमि सिंहपुरी में, जन्म लिए हितकारी।
विष्णु राजा विष्णु श्री के, आप पुत्र सुखकारी॥ ओम्...
२. वन लक्ष्मी का नाश देखकर, बन बैठे मुनिराजा।
बने मनोहर वन में ज्ञानी, समवसरण के राजा॥
पद्मासन सम्मेदशिखर से, पाकर संकुल कूट।
मोक्ष गए सो करके नमोऽस्तु, रे! 'सुव्रत' सुख लूट॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
श्रेयांसनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री श्रेयांसनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

ग्यारहवे तीर्थेश हैं, श्रेयांसनाथ भगवान्।
पूजन के पहले जिन्हें, नमोऽस्तु हो धर ध्यान॥

(मात्रिक सवैया)

प्रभु श्रेयांसनाथ जिनवर जी, मोक्षमहल शुद्धातम धाम।
विघ्न कष्ट बाधाएँ सारी, टिकें न सुनकर जिन का नाम॥
पूजन ध्यान जाप से जीवन, मंगलमय होते हर काम।

जिनके पथ पर चलकर आतम, भव भोगों को करें विराम॥
वैसे तो ऐसे जिनवर की, समा न सकती जग में शान।
किन्तु भक्त ने भक्ति महल में, जिन्हें पुकारा कर सम्मान॥
प्रेम द्वार से आओ! आओ!, करो चिदातम चित्-कल्याण।
चरणों में हैं भक्त समर्पित, और समर्पित तन मन प्राण॥

(दोहा)

निष्ठा से करते नमन, हाथ जोड़ नत माथ।
हृदय कमल पर आइए, हे प्रभु श्रेयांसनाथ॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय : पाँचों मेरु असी...)

श्रद्धा-जल की देकर धार, मिले मुक्ति का आतम द्वार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

चंदन से करते सत्कार, आत्म शान्ति होवे उद्धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

पुंज चढ़े हो हर्ष अपार, आत्म व्याधियाँ हों परिहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

पुष्पों सम निज खिले बहार, कामदेव का हो संहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जिन सम निज का हो आहार, क्षुधारोग का तब प्रतिकार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

करें आरती दीप उजार, जड़ से आत्म हरें अँधयार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

धूप गंध ले बहे वयार, जा पहुँचे मुक्ति के द्वार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

पूजें फल लेकर रसदार, सहकर नाशें कर्म प्रहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

आठों द्रव्य चढ़े मनहार, जिनसे आतम का त्यौहार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥
प्रभु श्रेयांस दया अवतार, हम को भी दो करुणा धार।
करो स्वीकार, वन्दन तुमको बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

षष्ठी कृष्णा ज्येष्ठ को, तज सोलहवाँ स्वर्ग।
आए प्रभु श्रेयांस जी, माँ नन्दा के गर्भ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, प्रभु श्रेयांस अवतार।
विष्णु नृप घर आँगने, हो बधाई त्यौहार॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, राजा धर संन्यास।
ग्रन्थ त्याग निर्ग्रन्थ बन, जय-जय मुनि श्रेयांस॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्णा माघ अमास को, उपजा केवलज्ञान।
सुन-नर सब मिल पूजते, जय श्रेयांस भगवान्॥

ॐ ह्रीं माघकृष्ण-अमावस्यायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूनम श्रावण शुक्ल को, सम्मेदशिखर के धाम।
मोक्ष गए श्रेयांस प्रभु, सादर जिन्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लपूर्णिमायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(चौपाई)

इन्द्री कर्म विजय जो करते, जिनवर उन्हें भक्त जन कहते।
हम श्रेयांसनाथ को पूजें, कर्म विजय को नमोऽस्तु गूँजें॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१॥

अवधिज्ञान की मिलीं ऋद्धियाँ, खुद को पर को मिलीं सिद्धियाँ।

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि की प्राप्त सिद्धियाँ, सम्पत्ति की हुईं वृद्धियाँ।
हम श्रेयांसनाथ को पूजें, कर्म विजय को नमोऽस्तु गूँजें॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि की किए साधना, पूर्ण हुई फिर भक्त भावना।
हम श्रेयांसनाथ को पूजें, कर्म विजय को नमोऽस्तु गूँजें॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

अनन्तावधि की भोग भुक्तियाँ, शुद्धातम की मिलीं युक्तियाँ।
हम श्रेयांसनाथ को पूजें, कर्म विजय को नमोऽस्तु गूँजें॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

कोष्टबुद्धि की खोज शक्तियाँ, कर्म बंध से मिली मुक्तियाँ।
हम श्रेयांसनाथ को पूजें, कर्म विजय को नमोऽस्तु गूँजें॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

बीजबुद्धि की वृहत भावना, वैरागी की करे साधना।
हम श्रेयांसनाथ को पूजें, कर्म विजय को नमोऽस्तु गूँजें॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी की योग्य अर्चना, भक्तों के दुख हरे वेदना।
हम श्रेयांसनाथ को पूजें, कर्म विजय को नमोऽस्तु गूँजें॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

(शंभू)

संभिन्नश्रोतृ जो धार रहे, वो रिश्तेदार जरूर रहे।
श्रेयांसनाथ को नमोऽस्तु कर, जग विरह कलह से दूर रहे॥
ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

जो स्वयंबुद्ध ऋषिराज रहे, भक्त हृदय साम्राज्य रहे।
श्रेयांसनाथ को नमोऽस्तु कर, जग विरह कलह से दूर रहे॥
ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

प्रत्येकबुद्ध परमात्म प्रभु, दुख दूर करो हम चाह रहे।
श्रेयांसनाथ को नमोऽस्तु कर, जग विरह कलह से दूर रहे॥
ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

जो बोधितबुद्ध ऋषीश्वर हैं , सम्पत्ति गुणों के धाम रहे।
श्रेयांसनाथ को नमोऽस्तु कर, जग विरह कलह से दूर रहे॥
ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

जो ऋजुमति मनपर्यय धारें, वो योग वियोग निवार रहे।
श्रेयांसनाथ को नमोऽस्तु कर, जग विरह कलह से दूर रहे॥
ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

जो ज्ञान विपुलमति मनपर्यय, वो राग द्वेष छल टार रहे।
श्रेयांसनाथ को नमोऽस्तु कर, जग विरह कलह से दूर रहे॥
ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

दसपूर्वों के जो धर्म धरें, वो पूर्व दिशा सम सुबह करें।
श्रेयांसनाथ को नमोऽस्तु कर, जग विरह कलह से दूर रहे॥
ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

जो चौदहपूर्व चढ़े सीढ़ी, वो धर्म सुरक्षा द्वार रहे।
श्रेयांसनाथ को नमोऽस्तु कर, जग विरह कलह से दूर रहे॥
ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

(दोहा)

जो अष्टांगनिमित्त धर, आठों कर्म विनाश।
स्वामी श्रेयांसनाथ को, नमोऽस्तु दें संन्यास॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

ऋद्धि-विक्रिया ऋषि धरें, करें पूर्ण हर आश।
स्वामी श्रेयांसनाथ को, नमोऽस्तु दें संन्यास॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

नर विद्याधर धार व्रत, खोजें मोक्ष निवास।
स्वामी श्रेयांसनाथ को, नमोऽस्तु दें संन्यास॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

चारण-ऋद्धि प्राप्त कर, कर चैतन्य प्रयास।
स्वामी श्रेयांसनाथ को, नमोऽस्तु दें संन्यास॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

ऋषिवर प्रज्ञाश्रमण हो, कर अज्ञान विनाश।
स्वामी श्रेयांसनाथ को, नमोऽस्तु दें संन्यास॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

कमलों पर नभ में चलें, पाएँ मोक्ष निवास।
स्वामी श्रेयांसनाथ को, नमोऽस्तु दें संन्यास॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

जो आशीर्विष धार कर, आतम करें विकास।
स्वामी श्रेयांसनाथ को, नमोऽस्तु दें संन्यास॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

जो दृष्टिर्विष के गुणी, ज्ञाता दृष्टा खास।
स्वामी श्रेयांसनाथ को, नमोऽस्तु दें संन्यास॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(सखी)

जो उग्र तपस्या धारी, दुख दर्द हरें बीमारी।
हो श्रेयांसप्रभु को नमोऽस्तु, प्रभु कह दो शांति रस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

जो दीप्ततपों श्रृंगारी, ऋषिराजों के आभारी।
हो श्रेयांसप्रभु को नमोऽस्तु, प्रभु कह दो शांति रस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥

जो तप्ततपों के गहने, ऋषिराज मुक्ति को पहने।
हो श्रेयांसप्रभु को नमोऽस्तु, प्रभु कह दो शांति रस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

जो महातपों की माला, धर कर दें ज्ञान उजाला।
हो श्रेयांसप्रभु को नमोऽस्तु, प्रभु कह दो शांति रस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

जो घोरतपों की ज्योति, प्रकटा कर दें सुख मोती।
हो श्रेयांसप्रभु को नमोऽस्तु, प्रभु कह दो शांति रस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

जो घोरगुणों के रसिया, गुण लुटा रहे मनवसिया।
हो श्रेयांसप्रभु को नमोऽस्तु, प्रभु कह दो शांति रस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(अर्द्ध ज्ञानोदय)

घोरपराक्रम ऋद्धि धरें जो, सुख सम्पत्ति दिलाते हैं।
श्रेयांसनाथ को करके नमोऽस्तु, हम सौभाग्य जगाते हैं॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

घोरब्रह्मगुण के ज्ञानी जी, ब्रह्मज्ञान करवाते हैं।
श्रेयांसनाथ को करके नमोऽस्तु, हम सौभाग्य जगाते हैं॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

गुण आमर्ष-औषधी ध्याता, आशीर्वाद लुटाते हैं।
श्रेयांसनाथ को करके नमोऽस्तु, हम सौभाग्य जगाते हैं॥
ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

खेल्ल-औषधी की खलबल से, अखण्ड सुख दिलवाते हैं।
श्रेयांसनाथ को करके नमोऽस्तु, हम सौभाग्य जगाते हैं॥
ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

जल्ल-औषधी से जीवन दे, योगी योग लगाते हैं।
श्रेयांसनाथ को करके नमोऽस्तु, हम सौभाग्य जगाते हैं॥
ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

विप्रुष-औषध की बगिया में, चेतन पुष्प खिलाते हैं।
श्रेयांसनाथ को करके नमोऽस्तु, हम सौभाग्य जगाते हैं॥
ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

(हाकलिका)

सर्व-औषधी ऋद्धि धरें, सबको स्वस्थ निरोग करें।
श्रेयांसनाथ को नमो नमो, करके अपने धर्म रमो॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

धरें मनोबल मनोबली, वो ही बनते बाहुबली।
श्रेयांसनाथ को नमो नमो, करके अपने धर्म रमो॥
ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

धरें वचनबल वचनबली, खुशियों की दें दीवाली।
श्रेयांसनाथ को नमो नमो, करके अपने धर्म रमो॥
ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

कायबली ने ध्यान लगा कर, कर्म हरे आहा।
ओम् ह्रीं श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

क्षमा धारकर क्षीरस्रावि को, प्रकट किए आहा।
ओम् ह्रीं श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥
किए साधना सर्पिस्रावि को, साध लिए आहा।
ओम् ह्रीं श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥
संत महात्मा मधुरस्रावि को, मोह लिए आहा।
ओम् ह्रीं श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥
अमृत जैसी अमृतस्रावि, मथित किए आहा।
ओम् ह्रीं श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥
पा अक्षीण-महानस-आलय, शरण बने आहा।
ओम् ह्रीं श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥
वर्धमान बन वर्धमान गुण, प्राप्त किए आहा।
ओम् ह्रीं श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥
पाकर श्री निर्वाण आयतन, सिद्ध हुए आहा।
ओम् ह्रीं श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥
णमोकार के ऋषिराजों को, नमोऽस्तु हो आहा।
ओम् ह्रीं श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप श्रेयस, नाथ जिनवर नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

श्रेयांसनाथ स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

जिनके आश्रय से हुए, भक्तों के कल्याण।
ऐसे प्रभु श्रेयांस का, नमन सहित गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिनके सारे आश्रय छूटे, सहायता भी मिले नहीं।
सुख-दुख में ना साथ मिले तो, हृदय कली भी खिले नहीं॥
महा निराशा जिनको घेरे, मेघ उदासी के छाएँ।
जिन्हें आश की किरण न दिखती, हो बेचैन व्यथा पाएँ॥ १॥
ऐसे में श्रेयांसनाथ की, अगर झलक भी मिल जाती।
तो प्रतिकूल अवस्थाएँ सब, झट अनुकूल बनीं जातीं॥
परम पूज्य श्रेयांसनाथ के, आश्रय के अभिलाषी जो।
भक्ति करें गुणगान करें वो, नमन करें संन्यासी को॥ २॥

एक नलिनप्रभ राजा था जो, ऋद्धि-सिद्धि मय धर्मात्मा।
जिनवर का सान्निध्य प्राप्तकर, बना संत उसका आत्मा॥
फिर तीर्थंकरप्रकृति बाँधकर, मृत्यु महोत्सव किया अहा।
सोलहवें सुर के पुष्पोत्तर, विमान में जा इन्द्र हुआ॥ ३॥
भोग-भोगकर नगर सिंहपुर, विष्णु-नन्दा पुत्र हुए।
तीन ज्ञान के धारी प्रभु के, जन्म समय आश्चर्य हुए॥
रोग-शोक-भय कष्ट मिटे सब, पापी जीव बने धर्मी।
पुष्पवृष्टि हो देव नृत्य हों, संतोषी हों षट्-कर्मी॥ ४॥
देवों ने जन्मोत्सव करके, पूज्य नाम श्रेयांस रखा।
तन के अवयव ऐसे बढ़ते, ज्यों चंदा हो बाल सखा॥
राज भोगकर इक दिन देखा, बसंत ऋतु का परिवर्तन।
भव भोगों से विरक्त होकर, श्रेयस्कर को सौंपा धन॥ ५॥
चले मनोहर वन तो शिविका, विमलप्रभा पर हुए सवार।
इक हजार राजाओं के सह, तप धारा हुई जय-जयकार॥
ज्ञान मनःपर्यय झट प्रकटा, दिए नन्द राजा आहार।
पंच-पंच आश्चर्य हुए तो, प्रथमदान मंगल उपहार॥ ६॥
दो वर्षों छद्मस्थ बिताए, फिर दीक्षा वन को पहुँचे।
बेला करके बने केवली, देव पर्व को आ पहुँचे॥
समवसरण फिर लगा जहाँ थे, सतहत्तर गणधर धारी।
कुल चौरासी हजार मुनि थे, बीस लाख आर्या न्यारी॥ ७॥
सुर-नर से उस भरी सभा को, ज्ञान दिया फिर वह छोड़े।
फिर सम्मेदशिखर पर मासिक, ध्यान किया बन्धन तोड़े॥
संकुलकूट हुआ पावन तब, प्रभु श्रेयांस मोक्ष पाए।
उसी तीर्थ में त्रिपृष्ठ नामक पहले नारायण आए॥ ८॥
अश्वग्रीव प्रतिनारायण भी, हुए विजय बलभद्र तभी।
इस प्रकार श्रेयांसनाथ को, भूल सके ना जगत् कभी॥

जिनके ज्ञान ध्यान यश वैभव, सब सीमाएँ लाँघ रहे।
फिर भी भगत उन्हें गुरु ग्रह के, परिहारों से बाँध रहे॥ ९॥
जिनके जन्म समय से अब तक, धर्म ध्वजा की हुई विजय।
''श्रेयांसि बहु विघ्नानि'' भी, सुन श्रेयांस नाम से क्षय॥
देख चराचर जग को भी जो, निज स्वरूप का स्वाद चखे।
जिनकी चरण धूल सिर धरकर, झट कर ले कल्याण सखे॥ १०॥
हम तो कब से शरण आपकी, अब तक ध्यान दिया क्यों ना।
माथा कब से झुका आपको, जिस पर हाथ रखा क्यों ना॥
यद्यपि आप विरागी हो प्रभु, राग मोह फिर खुद से क्यों?
आप पूर्ण हम अंश आपके, फिर मुख मोड़ा हमसे क्यों?॥ ११॥
द्रव्य-भाव-नोकर्म आपने, जैसे खुद के नशा दिए।
चिन्ता चिता नगर से न्यारा, नगर चेतना वसा लिए॥
उस चैतन्य धाम की हमको, शीघ्र छाँव दे दो स्वामी।
'सुव्रत' यह अर्जी लेकर के, चरणों में हैं प्रणमामि॥ १२॥

(सोरठा)

गेंड़ा जिनका चिह्न, श्रेयांसनाथ प्रभु नाम है।
हम पर रहो प्रसन्न, प्रभु को सदा प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

श्रेयांसनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, प्रभु श्रेयांस जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री श्रेयांसनाथ का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
१. श्री श्रेयांसनाथ जिनेश्वर जी, हो परमेष्ठी परमेश्वर जी।
कल्याण सभी का करने वाले स्वामी, सो बारम्बार नमामि॥श्री..
२. जो सिंहपुरी में जन्म लिए, सम्मेदशिखर से मोक्ष गए।
श्री कौशल देश निवास किए सुखकारी, सो नमोऽस्तु बारी-बारी॥श्री..
३. प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता हैं, संसार मोक्षसुख कर्त्ता हैं।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥श्री..
४. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..
५. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
१. परमपूज्य श्रेयांस जिनम् जी, करते हो कल्याण हितम् जी।-२
दो दर्शन स्वामी जी, बाबा करूँ आरतिया ॥ करूँ...
२. विष्णु राजा विष्णुश्री के, नंदन हो तुम सिंहपुरी के-२
कुंदन जैसी काया बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ-२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

श्री वासुपूज्य दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. चौबीसी में प्रथम बालयति , वासुपूज्य जिन लाल।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, सब हों मालामाल॥
चंपापुर में जन्म लिए तो, राज्य प्रजा हुई दासी।
चढ़ी न हल्दी रची न मेहंदी, बन बैठे संन्यासी॥ ओम्...
२. बने सहेतुक वन में ज्ञानी, समवसरण सुखदायी।
पद्मासन से मोक्ष पधारे, वासुपूज्य जिनरायी॥
जयावती वसुपूज्य राज के, तुम संतान निराली।
भैंसा है पहचान आपकी, सबको दो खुशहाली॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
वाासुपूज्य को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री वासुपूज्य पूजन

स्थापना (दोहा)

बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराज।
नमन करें हम तुम करो, भक्त हृदय पर राज॥

(ज्ञानोदय)

जिन चरणों में सारी दुनियाँ, श्रद्धा से नत मस्तक है।
उनके दर्शन पूजन को अब, भक्तों ने दी दस्तक है॥
इतनी शक्ति कहाँ है हम में, नाथ! आपको बुला सकें।

करें महोत्सव भाव भक्ति से, चरण अर्चना रचा सकें॥
फिर भी विरह वेदना से हम, तड़फें भर-भर के आहें।
कब आओगे? कब आओगे?, अखियाँ तकती प्रभु राहें॥
देहालय का मन मंदिर यह, आप बिना तो है शमशान।
आप पधारो इसमें तो यह, बन जाएगा मोक्ष महान्॥

(दोहा)

दोष कोश हम हैं प्रभो, दुनियाँ में मदहोश।
छींटा मारो ज्ञान का, आए हमको होश॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

केवल सुख की आशा में हम, जिनको अपना मान रखे।
उनसे दुख ही दुख पाते पर, उन्हें तनिक ना त्याग सके॥
जन्म मरण जो देते आए, क्या ये मिथ्या दल-मल है।
यदि है तो इनको धोने में, तेरा मात्र कृपाजल है॥
अंतर बाहर शुद्धि को, अर्पित यह जलधार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

कितना हमने सहन किया प्रभु, कब तक और सहन करना।
अब तो ढोया जाए न हमसे, कितना भार वहन करना॥
अनादिकाल से तपते आए, अब तो तपा नहीं जाता।
राग-द्वेष की इस ज्वाला को, अब तो सहा नहीं जाता॥
चंदन से वन्दन करें, हरो राग अंगार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

कहीं मोह के गहरे गड्ढे, कहीं मान का उच्च शिखर।
कहीं राग माया का दल-दल, कहीं क्रोध का तीव्र जहर॥
ऐसे में जब राह न सूझे, कहो किसे तब ध्याना है?
शरण आपकी आ पहुँचे तो, और कहाँ अब जाना है?
शरण प्राप्ति को चरण में, अक्षत हैं तैयार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

एक तरफ यह विश्व जहाँ पर, हल्दी मेंहदी में उलझा।
वहीं आपका ब्रह्म स्वरूपी, चेतन इनसे है सुलझा॥
चढ़ी न हल्दी रँगी न मेंहदी, सचमुच तुम तो हो हीरा।
अगर आपकी छाँव मिले तो, हम अब्रह्म हरें पीड़ा॥
काम नाश को सौंपते, पुष्पों का उपहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी भोजनालय में जाकर, कभी औषधालय में जा।
ज्यों-ज्यों दवा कराई त्यों-त्यों, रोग बढ़े ज्यादा-ज्यादा॥
आप जिनालय में पहुँचे तो, स्वस्थ्य हुए सिद्धालय में।
भूख-प्यास से अब क्या हो जब, मस्त हुए तेरी जय में॥
क्षुधा रोग नैवेद्य से, कर पाएँ परिहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह अँधेरा ऐसा छाया, हम भूले अपने घर को।
अब अपना अहसास हुआ है, जब से पूजा जिनवर को॥
ज्ञान-सूर्य को दीप दिखाना, यह उपचार नहीं होता।
दीप जलाए बिन भक्तों का, निज उद्धार नहीं होता॥

दीप जला आरति करें, नशे मोह अँधयार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

दौड़-धूप कितनी की आखिर, अपना घर तो विखर गया।
दीप-धूप करने वालों का, घर मंदिर-सा निखर गया॥
कर्मों के आँधी तूफाँ में, धूप तपस्या की महके।
तो चेतन-गृह में आतम की, सोन-चिरैया भी चहके॥
धूप चढ़े तो कर्म का, होता है संहार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

ज्यों रसदार फलों को कीड़े, नीरस निष्फल कटुक करें।
वैसे ही परभावों के फल, महामोक्ष को नष्ट करें॥
''पुण्य फला अरिहंता'' से कब, महामोक्ष फल दूर हुआ।
अतः फलों के गुच्छ चढ़ाने, भक्त-वर्ग मजबूर हुआ॥
महा मोक्षफल प्राप्ति को, अर्पित फल रसदार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

अष्ट-कर्म हों कभी विरोधी, सहयोगी हों यदा-कदा।
लेकिन अष्टद्रव्य का मिश्रण, सहयोगी हो सदा-सदा॥
आत्म-द्रव्य सहयोगी करने, भक्तों का सहयोग करो।
अपने भक्तों को हे स्वामी!, अपने जैसा योग्य करो॥
तुम को तुम से माँगते, करो अर्घ्य स्वीकार।
वासुपूज्य प्रभु को अतः, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

कृष्णा छठ आषाढ़ को, महाशुक्र सुर त्याग।
जयावती के गर्भ में, वसे पूज्य जिनराज॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस फाल्गुन कृष्ण को, पूज्योत्सव घड़ि आई।
राजा श्री वसुपूज्य के, बाजे जन्म बधाई॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस फाल्गुन कृष्ण को, तजे मोह जग वस्तु।
वासुपूज्य मुनि बन गए, सादर जिन्हें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपो मङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दूज माघ सुदि को प्रभो, घाति कर्म परिहार।
वासुपूज्य तीर्थेश को, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भाद्र शुक्ल दस लक्षणी, अनन्त चौदस साथ।
चम्पापुर से पूज्य प्रभु, मुक्त जिन्हें नत माथ॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(जोगीरासा)

भगवन इन्द्री कर्म विजेता, मोक्षमार्ग दें आहा।
वासुपूज्य जिनवर को सादर, करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१॥

अवधिज्ञान के स्वामी अपने, अंतरयामी आहा।
वासुपूज्य जिनवर को सादर, करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि के अभियंता होएअतिशयकारी आहा।
वासुपूज्य जिनवर को सादर, करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि के नंद जिनंदा, दो सुख शांति आहा।
वासुपूज्य जिनवर को सादर, करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

ज्ञान अनन्तावधि के ज्ञाता, मुक्तिवधू दो आहा।
वासुपूज्य जिनवर को सादर, करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

कोष्टबुद्धि के हो भण्डारी, भक्त तारते आहा।
वासुपूज्य जिनवर को सादर, करें नमोऽस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

(हाकलिका)

बीजबुद्धि के अधिकारी, श्रद्धालु के उपकारी।
वासुपूज्य अंतर्यामी, करें नमोऽस्तु हम स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी शिक्षा दो, जिनशासन की दीक्षा दो।
वासुपूज्य अंतर्यामी, करें नमोऽस्तु हम स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

संभिन्नश्रोतृ के हीरा, हरें हमारे दुख पीड़ा।
वासुपूज्य अंतर्यामी, करें नमोऽस्तु हम स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

स्वयंबुद्ध संसार हरो, सबको भव से पार करो।
वासुपूज्य अंतर्यामी, करें नमोऽस्तु हम स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

दुख प्रत्येकबुद्ध हरिए, महाव्रतों का पथ धरिए।
वासुपूज्य अंतर्यामी, करें नमोऽस्तु हम स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

बोधितबुद्ध निरंजन जी, हरो हमारे बंधन जी।
वासुपूज्य अंतर्यामी, करें नमोऽस्तु हम स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

(ज्ञानोदय)

ऋजुमति ज्ञान मनःपर्यय जो, विघ्न विनाशक होता है।
वासुपूज्य प्रभु को नमोऽस्तु कर, मंगल मंगल होता है॥
ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय जो, छाया माया खोता है।
वासुपूज्य प्रभु को नमोऽस्तु कर, मंगल मंगल होता है॥
ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

दसपूर्वों के धारक साधक, स्वस्थ निरोगी होता है।
वासुपूज्य प्रभु को नमोऽस्तु कर, मंगल मंगल होता है॥
ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

चौदहपूर्वों का विज्ञानी, भाग्य विधाता होता है।
वासुपूज्य प्रभु को नमोऽस्तु कर, मंगल मंगल होता है॥
ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

प्रभु अष्टांग-निमित्त निखारे, तारणहारा होता है।
वासुपूज्य प्रभु को नमोऽस्तु कर, मंगल मंगल होता है॥
ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

ऋद्धि-विक्रिया जो धर लेते, पाप कर्म मल धोता है।
वासुपूज्य प्रभु को नमोऽस्तु कर, मंगल मंगल होता है॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

(चौपाई)

विद्याधर मानव व्रतधारी, सबके भगवन हैं उपकारी।
वासुपूज्य के चरण पखारो, करके नमोऽस्तु भाग्य सँवारो॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

चारण-ऋद्धि धारते देवा, हमें सिद्धि सुख दो स्वयमेवा।
वासुपूज्य के चरण पखारो, करके नमोऽस्तु भाग्य सँवारो॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

प्रज्ञाश्रमण आप हो स्वामी, आतमज्ञानी अंतर्यामी।
वासुपूज्य के चरण पखारो, करके नमोऽस्तु भाग्य सँवारो॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

कमलविहारी गगनविहारी, दिए सफलता अतिशयकारी।
वासुपूज्य के चरण पखारो, करके नमोऽस्तु भाग्य सँवारो॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

आशीर्विष को धार रहे तुम, सबके भाग्य संवार रहे तुम।
वासुपूज्य के चरण पखारो, करके नमोऽस्तु भाग्य सँवारो॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

दृष्टिर्विष के भाग्य विधाता, निज ध्यानी आगम ज्ञाता।
वासुपूज्य के चरण पखारो, करके नमोऽस्तु भाग्य सँवारो॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(सखी)

जो उग्रतपों को धारें, खुद तरें जगत को तारें।
श्री वासुपूज्य भगवंता, हो नमोऽस्तु नंता-नंता॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

जो दीप्ततपों को धारें, निज और जगत शृंगारें।
श्री वासुपूज्य भगवंता, हो नमोऽस्तु नंता-नंता॥
ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥
जो तप्ततपों को धारें, वो आत्मनिलय उजियारें।
श्री वासुपूज्य भगवंता, हो नमोऽस्तु नंता-नंता॥
ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥
जो महातपों को धारें, वो सबका भाग्य सँवारें।
श्री वासुपूज्य भगवंता, हो नमोऽस्तु नंता-नंता॥
ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥
जो घोरतपों को धारें, वो रोग शोक परिहारें।
श्री वासुपूज्य भगवंता, हो नमोऽस्तु नंता-नंता॥
ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥
जो घोरगुणों को धारें, वो घोर वेदना टारें।
श्री वासुपूज्य भगवंता, हो नमोऽस्तु नंता-नंता॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(दोहा)

घोरपराक्रम धारकर, करते मोक्ष विहार।
वासुपूज्य भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥
घोरब्रह्मगुण धारकर, ब्रह्मचर्य व्रत धार।
वासुपूज्य भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥
आमर्ष-औषधि धारकर, करो पाप परिहार।
वासुपूज्य भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

खेल्ल-औषधी धारकर, शाश्वत सुख भण्डार।
वासुपूज्य भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

जल्ल-औषधी धारकर, करो रत्न व्यापार।
वासुपूज्य भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

विप्रुष-औषधि धारकर, निज आचार विचार।
वासुपूज्य भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

सर्व-औषधी धारकर, तार रहे संसार।
वासुपूज्य भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

सकल मनोबल धारकर, बल साहस दातार।
वासुपूज्य भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

महा वचनबल धारकर, करो जगत उपकार।
वासुपूज्य भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

कायबली ने बालब्रह्म धर, हरे दोष आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

क्षीरस्रावि से बालब्रह्म को, किए शुद्ध आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

सर्पिस्रावि से बालब्रह्म को, सजा दिए आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

मधुरस्रावि से बालब्रह्म को, यह मुग्ध किए आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

अमृतस्रावि से बालब्रह्म को, अमर किए आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

पा अक्षीण-महानस-आलय, शरण दिए आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

वर्धमान सर्वोच्च गुणों को, बाँट रहे आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

सिद्ध-आयतन सिद्धालय को, देते हो आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

णमोकार के साधु जनों को, नमोऽस्तु हो आहा।
ओम् ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप जिनवर, वासुपूज्य सुनाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥

सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

वासुपूज्य स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

दर्शन का अतिशय महा, रुचे नहीं संसार।
अतः कहें जयमाल हम, नत हो बारम्बार॥

(ज्ञानोदय)

बारहवें प्रभु वासुपूज्य हैं, बारह अंगों के दाता।
बारह सभासदों के स्वामी, बारह तपो अधिष्ठाता॥
बारह भावनाएँ भा करके, बारह विधि के बजा दिए।
सो बारह चक्री इन्द्रादिक, चरणों में सिर झुका दिए॥ १॥

जिन चरणों में महापुरुष भी, झुक-झुक शीश झुकाते हैं।
उन चरणों में झुक-झुक हम भी, अपना भाग्य जगाते हैं॥
इन्द्र पूज्य वसुपूज्य पुत्र हैं, वासुपूज्य तीर्थंकर जो।
जिनका नाम अकेला हर ले, संकट महाभयंकर जो॥ २॥

एक हुए पद्मोत्तर राजा, करें धर्ममय भू-पालन।
जिसने जिनवर के दर्शन कर, किया अर्चना और नमन॥
तब प्रभु से उपदेश प्राप्त कर, तत्त्वज्ञान उत्पन्न हुए।

राज्य सौंप धनमित्र पुत्र को, संयम धार प्रसन्न हुए॥ ३॥
तीर्थंकर पद बाँध मरण कर, महाशुक्र में इन्द्र हुए।
भोग स्वर्गसुख सपने देकर, चम्पापुर में जन्म लिए॥
धर्म हुआ विच्छेद जहाँ पर, वहीं हुआ जन्मोत्सव था।
नगर शहर घर बजी बधाई, हुआ पूर्ण सुभिक्ष तब था॥ ४॥
कुमारकाल बिताकर प्रभु ने, नश्वर जग का चिंतन कर।
निज को सजा, सजा विधि को दें, तप धारा बेला कर कर॥
देवों ने तप कल्याणक कर, पुण्य कमाया मौके में।
अगले दिन फिर हुई पारणा, सुन्दर नृप के चौके में॥ ५॥
एक वर्ष छद्मस्थ बिताकर, कदम्ब तरुतल में थित हो।
घाति कर्म हर बने केवली, अतः सभी से पूजित हो॥
समवसरण में छ्यासठ गणधर, बहत्तर हजार मुनि ध्यानी।
अनगिन जन से भरे खचाखच, सभासदों के तुम स्वामी॥ ६॥
आर्यक्षेत्र में विहार करके, धर्मवृष्टि कर वापस आ।
एक हजार वर्ष तक रहकर, चम्पापुर में ध्यान लगा॥
रजतमालिका नदी किनारे, मंदरगिरि पर थित होकर।
साँयकाल में मोक्ष पधारे, बन्धन हर वंदित होकर॥ ७॥
ये ऐसे तीर्थंकर हैं जो, पहले बाल ब्रह्मचारी।
राज्य न भोगे और जिन्हें भी, रुची नहीं दुनियाँदारी॥
जिनके पाँच हुए कल्याणक, सबके सब चम्पापुर में।
जिनके ध्याता भक्त पहुँचते, देखो शीघ्र मोक्षपुर में॥ ८॥
जिनके शासन तीर्थकाल में, द्विपृष्ठ नामक नारायण।
तथा अचल बलभद्र हुए थे, थे तारक प्रतिनारायण॥

ऐसे वासुपूज्य प्रभु करते, नित कल्याण भक्त जन का।
मंगल ग्रह क्या मोह अमंगल, टले मिले फल पूजन का॥ ९॥
अतः हमें प्रभु वासुपूज्य को, निज आदर्श बनाना है।
ब्रह्मचर्य की कठिन साधना, प्रभु जैसी अपनाना है॥
चलकर जिनके महामार्ग पर, प्रभु प्रसाद को पाना है।
राग-द्वेष को मंद बनाकर, वीतरागता लाना है॥१०॥
मुक्तिवधू अब भायी तो फिर, शादी-व्याह रचाना क्यों?
मुक्तिवधू से मन लागा तो, मन अन्यत्र लगाना क्यों?
मुक्तिवधू से होए सगाई, पिछी-कमण्डल धारो तो।
सिद्धालय में हो वरमाला, वासुपूज्य को ध्यायो तो॥ ११॥

(सोरठा)

भैंसा जिनका चिह्न, वासुपूज्य वे नाथ हैं।
पाएं मुक्ति अभिन्न, अतः चरण में माथ हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

वासुपूज्य स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, वासुपूज्य जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय—श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री वासुपूज्य का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
१. श्री वासुपूज्य कल्याणी हैं जिनके पूजक हर प्राणी हैं।
हैं बाल ब्रह्मचारी आतम के ज्ञानी, सुख शांति प्रदाता स्वामी॥श्री..
२. जो चंपापुर में जन्म लिए, चंपापुर से ही मोक्ष गए।
पाँचों कल्याणक चंपापुर में स्वामी, हम सबके हैं वरदानी॥श्री..
३. प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता हैं, संसार मोक्षसुख कर्त्ता हैं।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥श्री..
४. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..
५. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
१. वासुपूज्य भगवान हमारे, हम सबको प्राणों से प्यारे।-२
जग के हो उजियारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
२. वसुपूज्य के राज दुलारे, जयावती के नयन सितारे।-२
चंपापुर अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ-२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

श्री विमलनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. तीर्थंकर श्री विमलनाथ जी, तेरहवें श्री जिनवर।
अंगदेश कांपिल्य नगर में, जन्म लिए विमलेश्वर॥
कृतवर्मा जयश्यामा नंदन, मेघ देख वैरागे।
बने सहेतुक वन में ज्ञानी, दिए धर्म हम जागे॥ ओम्...
२. समवसरण से चले मोक्ष को, सिद्धों के आश्रम में।
कुंदन जैसी काया प्यारी, सूकर के लांछन में॥
पद्मासन सम्मेदशिखर से, सुवीर कूट को पाके।
मोक्ष गए सो करें नमोऽस्तु, 'सुव्रत' विद्या ध्याके॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
विमलनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री विमलनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

विमलनाथ प्रभु नाम का, है अतिशय आशीष।
भक्त जगत् का भक्ति को, झुक जाता खुद शीश॥

(शंभु)

जय विमल प्रभो! जय विमल प्रभो!, जय विमल प्रभो! अतिशयकारी।
अब हृदय हमारे आओ प्रभु, तो हम भी हों मंगलकारी॥
जिस घट में तुमने वास किया, वह हृदय बना मुक्ति का घर।

कर्मों के बन्धन टूट पड़े, जिन-रस की धार बहे झर-झर॥
हे! निज चैतन्य विहारी जिनवर, हृदय हमारे आओ-ना।
जो द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित, वो शुद्धातम दिलवाओ-ना॥
हम उस पदवी के अभिलाषी, जो पदवी तुमने पाई है।
इसलिए आज हे विमलराज!, यह अर्जी चरण लगाई है॥

(दोहा)

अर्जी सुनकर भक्त पर, करिये कृपा जरूर।
कल क्या हो सो भक्ति को, आज दास मजबूर॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय : नन्दीश्वर श्री जिनधाम)

जल जैसा कंचन रूप, आतम का शोभे।
निर्मल सुख सिद्ध स्वरूप, अपना मन मोहे॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

तपता जलता संसार, क्या शीतल जग में।
जिनवाणी छायादार, सो हम प्रभु पग में॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

भवसागर क्षीर अपार, कौन खिवैया है।
जिन तारण तरण जहाज, भक्ति नैया है॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

जब खिलते चारित फूल, भक्त भ्रमर गूँजे।
हो काम व्यथा तब धूल, मुक्ति स्वयं पूजे॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

निज का चखने को स्वाद, ले नैवेद्य खड़े।
जिनवर को करके याद, सादर चरण पड़े ॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

यह मोह करे जग व्याप्त, जीते कौन बली।
दो अंतर-ज्योति आप्त, भागे मोह-खली॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

सब जले, जले ना कर्म, जो दुर्गन्धित हैं।
जब जले धूप दे धर्म, धर्मी वंदित हैं॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

फल भोगें तो दें! रोग, जिससे जग रोता।
फल अर्पण से सुख योग, निज कालुष धोता॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

(शंभु)

जब विमलप्रभु का नाम सुना तो, दर्शन की इच्छा जागी।
अब दर्शन करके मन नहिं माना, तो पूजन की लौ लागी॥
फिर पूजन से ये भाव बने कि, क्यों नहिं प्रभु सम बन जाएँ।
तो भाव भक्ति से अर्घ्य चढ़ा के, शीश झुका के गुण गाएँ॥
अनुकूल रहें प्रतिकूल रहें, अब हमको इसकी आश नहीं।
हम सुखी रहें या दुखी रहें, इसकी भी कोई प्यास नहीं॥
बस नाथ आपकी पद रज से, हम निज का निज श्रृंगार करें।
जिनभक्ति नैया पर चढ़कर, सब कुछ सह लें भव पार करें॥

(दोहा)

विमलप्रभु वरदान दो, नभ जैसे विस्तीर्ण।
सहनशील भू-सम बनें, सागर सम गंभीर॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

दशमी कृष्णा ज्येष्ठ में, तजे स्वर्ग सहस्रार।
जय श्यामा के गर्भ में, वसे विमल भर्त्तार॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौथी शुक्ला माघ में, जन्मे विमल जिनेन्द्र।
कृतवर्मा गृह राज्य में, उत्सव करें सुरेन्द्र॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म तिथि दीक्षा धरे, छोड़े पर-संसार।
श्रमण संत विमलेश को, वन्दन बारम्बार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

षष्ठी कृष्णा माघ में, पाए केवलज्ञान।
विमलेश्वर अरिहंत को, नमस्कार धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

आठें कृष्ण अषाढ़ को, विमल प्रभु को मोक्ष।
सम्मेदाचल से हुआ, जिनको सादर धोक॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्ण-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(हाकलिका)

कर्म इन्द्रियाँ पाप जयी, जिनवर हुए विश्व विजयी।
नमो नमो प्रभु विमल जिनम्, हमें घुमाओ सिद्ध सदन॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१॥

अवधिज्ञान की मिलीं निधि, सुख पाने की कही विधि।
नमो नमो प्रभु विमल जिनम्, हमें घुमाओ सिद्ध सदन॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि का कोश मिला, साधक को संतोष मिला।
नमो नमो प्रभु विमल जिनम्, हमें घुमाओ सिद्ध सदन॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि की किरण खिली, धर्म बाग की कली खिली।
नमो नमो प्रभु विमल जिनम्, हमें घुमाओ सिद्ध सदन॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

अनन्तावधि की जोत जगी, समवसरण की सभा लगी।
नमो नमो प्रभु विमल जिनम्, हमें घुमाओ सिद्ध सदन॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

कोष्टबुद्धि की कृपा हुई, निज रमणी खुद चरण छुई।
नमो नमो प्रभु विमल जिनम्, हमें घुमाओ सिद्ध सदन॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

बीजबुद्धि पर नजर टिकी, मोक्ष धाम की डगर दिखी।
नमो नमो प्रभु विमल जिनम्, हमें घुमाओ सिद्ध सदन॥
ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥
पदानुसारी दीप जला, ज्ञायक मोक्ष समीप चला।
नमो नमो प्रभु विमल जिनम्, हमें घुमाओ सिद्ध सदन॥
ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

(अर्द्ध ज्ञानोदय)

जो संभिन्नश्रोतृ गुण धारी, वही मोक्ष के धाम चले।
सो नमोऽस्तु कर विमलनाथ को, मुक्तिवधू को मन मचले॥
ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥
स्वयंबुद्ध ऋषिराज हमारे, स्वयं स्वयं में स्वयं भले।
सो नमोऽस्तु कर विमलनाथ को, मुक्तिवधू को मन मचले॥
ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥
जो प्रत्येकबुद्ध शुद्धातम, जिन सुमरण से पाप गले।
सो नमोऽस्तु कर विमलनाथ को, मुक्तिवधू को मन मचले॥
ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥
बोधितबुद्ध चमत्कारी जी, इन्हें पूज ले ओ! पगले।
सो नमोऽस्तु कर विमलनाथ को, मुक्तिवधू को मन मचले॥
ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥
ऋजुमति ज्ञान मनःपर्यय धर, पुण्यफला अरिहंत फले।
सो नमोऽस्तु कर विमलनाथ को, मुक्तिवधू को मन मचले॥
ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥
ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय से, छल कपटों का दम निकले।
सो नमोऽस्तु कर विमलनाथ को, मुक्तिवधू को मन मचले॥
ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

दसपूर्वों की नैया लेकर, प्रभु भवसागर तैर चले।
सो नमोऽस्तु कर विमलनाथ को, मुक्तिवधू को मन मचले॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

चौदहपूर्वों के गजरथ से, पर्व प्रतिष्ठा विघ्न टले।
सो नमोऽस्तु कर विमलनाथ को, मुक्तिवधू को मन मचले॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

(सोरठा)

धर अष्टांग-निमित्त, लोकालोक निहारते।
विमलनाथ के भक्त, करें नमोऽस्तु पुकारते॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

ऋद्धि-विक्रिया युक्त, होकर धर्म विचारते।
विमलनाथ के भक्त, करें नमोऽस्तु पुकारते॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

नर विद्याधर धार, दीक्षा मोक्ष निहारते।
विमलनाथ के भक्त, करें नमोऽस्तु पुकारते॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

चारण-ऋद्धि प्राप्त, कर चैतन्य संवारते।
विमलनाथ के भक्त, करें नमोऽस्तु पुकारते॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

ऋषि प्रज्ञाश्रमणत्व, निज अध्यात्म निखारते।
विमलनाथ के भक्त, करें नमोऽस्तु पुकारते॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

नभगामी बन मित्र, संयम को शृंगारते।
विमलनाथ के भक्त, करें नमोऽस्तु पुकारते॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

आशीर्विष को धार, आतम रूप बुहारते।
विमलनाथ के भक्त, करें नमोऽस्तु पुकारते॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

दृष्टिर्विष के दान, चेतन चरण पखारते।
विमलनाथ के भक्त, करें नमोऽस्तु पुकारते॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(चौपाई)

संत करें जो उग्र तपस्या, दुनियाँ की वो हरें समस्या।
जय हो! जय हो! विमल जिनेशा, भक्त नमोऽस्तु करें हमेशा॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

दीप्ततपों के साधक तपसी, बन जाते हैं निज अभिलाषी।
जय हो! जय हो! विमल जिनेशा, भक्त नमोऽस्तु करें हमेशा॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥

तप्ततपों की कसे कसौटी, ऋषिवर चढ़े मोक्ष की चोटी।
जय हो! जय हो! विमल जिनेशा, भक्त नमोऽस्तु करें हमेशा॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

महातपों की भड़की ज्वाला, मुक्तिवधू पहनाई माला।
जय हो! जय हो! विमल जिनेशा, भक्त नमोऽस्तु करें हमेशा॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

घोरतपों की चढ़कर घाटी, मोक्षभूमि की छूट दी माटी।
जय हो! जय हो! विमल जिनेशा, भक्त नमोऽस्तु करें हमेशा॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

घोरगुणों का घाट बनाया, निज को निज सम्राट बनाया।
जय हो! जय हो! विमल जिनेशा, भक्त नमोऽस्तु करें हमेशा॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(अर्द्ध शुभ्)

जो घोरपराक्रम ऋद्धि धरें, पुरुषार्थ मोक्ष का करते हैं।
श्री विमलप्रभु को नमोऽस्तु कर, चैतन्य स्वरूप निखरते हैं॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

जो घोरब्रह्मगुण विज्ञानी, विज्ञान नगर निज रचते हैं।
श्री विमलप्रभु को नमोऽस्तु कर, चैतन्य स्वरूप निखरते हैं॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

आमर्ष-औषधी जिन्हें मिली, वो कृपा सभी पर करते हैं।
श्री विमलप्रभु को नमोऽस्तु कर, चैतन्य स्वरूप निखरते हैं॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

जो खेल्ल-औषधी पाए वो, चित् पिण्ड अखण्ड विहरते हैं।
श्री विमलप्रभु को नमोऽस्तु कर, चैतन्य स्वरूप निखरते हैं॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

दे जल्ल-औषधी जीवों को, जो जन्म मरण दुख भरते हैं।
श्री विमलप्रभु को नमोऽस्तु कर, चैतन्य स्वरूप निखरते हैं॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

जो विप्रुष-औषध दान करें, सर्वज्ञ रूप वो धरते हैं।
श्री विमलप्रभु को नमोऽस्तु कर, चैतन्य स्वरूप निखरते हैं॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

(अर्द्ध शुद्ध गीता)

धरें जो सर्व-औषध को, करें जो स्वस्थ तन मन को।
बनें उज्जवल विमल हम सो, नमोऽस्तु हो विमलप्रभु को॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

मनोबल धारकर स्वामी, हरें जो मानसिक दुख को।
बनें उज्जवल विमल हम सो, नमोऽस्तु हो विमलप्रभु को॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

वचनबल के धनी होकर, वचन सिद्धि दो हम सबको।
बनें उज्जवल विमल हम सो, नमोऽस्तु हो विमलप्रभु को॥
ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

कर्म कषायें जीत चुके हैं, कायबली आहा।
ओम् ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

क्षमा सखी के साथ मस्त हैं, क्षीरस्त्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

आत्म साधना साध चुके हैं, सर्पिस्त्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

मुक्तिवधू को ब्याह चुके हैं, मधुरस्त्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

आत्म अमृत चख ही डाले, अमृतस्त्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

पा अक्षीण-महानस-आलय, दो आश्रम आहा।
ओम् ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

वर्धमान गुण पा ही चुके हैं, वर्धमान आहा।
ओम् ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

सिद्ध-आयतन बन ही चुके हैं, सिद्ध क्षेत्र मेंआहा।
ओम् ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

नग्न दिगम्बर साधु हमारे, णमोकार आहा।
ओम् ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाह॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप जिनवर, विमलनाथ सुनाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

विमलनाथ स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

विगत दोष गुण कोष हैं, विमलनाथ जिनदेव।
शिव नेता को भक्त के, शीश झुके स्वयमेव॥

(ज्ञानोदय)

जिनके दर्पण जैसे निर्मल, ज्ञान लोक में जग झलके।
विश्व मलों को नाश चुके जो,उन्हें नमन हों पल-पल के॥

ऐसे विमलनाथ हम सबको, निर्मल कर दें मल हर के।
इसी लक्ष्य से जिनको पूजें, चरणों में माथा धर के॥ १॥
विमलप्रभु जैसे बनने को, विनय सुनो हे! विमलेश्वर!
नाथ! आपके पद पर चलने, कहें कहानी चित देकर॥
पद्मसेन इक धर्मी राजा, एक छत्र जो राज्य करे।
कल्पवृक्ष सम प्रजा जनों के, न्याय नीति से काज करे॥ २॥
तथा प्रजा भी राजाज्ञा को, पाल-पालकर पली-पुषी।
राजा को प्रभु मिले केवली, तब नमोऽस्तु की खुशी-खुशी॥
प्रभु से धर्म स्वरूप जानकर, अगली पर्याएँ जानी।
केवल दो भव जग में हैं सो, उसने तप की भी ठानी॥ ३॥
ऐसा पर्व मनाया उसने, जैसे कि तीर्थंकर हो।
पद्मनाभ को राज्य सौंपकर, निकला स्वयं दिगम्बर हो॥
ग्यारह अंगों का अध्ययन कर, प्रभु ने की चाँदी-चाँदी।
नामकर्म के योग्य पुण्यकर, तीर्थंकर प्रकृति बाँधी॥ ४॥
चार-चार आराधन करके, अंत समय में मरण किए।
सहस्रार में सहस्रार की, इन्द्र विभूति वरण किए॥
जहाँ अठारह सागर उसकी, पूर्ण आयु थी भोगमयी।
चार हाथ ऊँचा तन उसका, जघन्य लेश्या शुक्लमयी॥ ५॥
वह आहार मानसिक करता, अणिमा-महिमा गुणवाला।
भोग-भोग चिरकाल स्वर्ग को, भूपर था आने वाला॥
तो काम्पिल्य नगर के राजा, कृतवर्मा की पटरानी।
जयश्यामा ने सोलह सपने, देख उन्हीं का फल जानी॥ ६॥
हुआ गर्भ कल्याणक तब ही, लहर खुशी की दौड़ी थी।

जयश्यामा ने पुत्र जन्म दे, अपनी राहें मोड़ीं थीं॥
देव जन्म-अभिषेक पूर्ण कर, नाम विमलवाहन रक्खे।
ताण्डव नृत्य इन्द्र ने करके, भक्ति रंग डाले पक्के ॥ ७॥
कुमारकाल बिताकर प्रभु का, पर्व राज्य अभिषेक हुआ।
बर्फ-नगीना, देख विलीना, प्रभु को झट वैराग्य हुआ॥
लौकान्तिक देवों ने आकर, प्रभु की हाँ में हाँ-हाँ की।
चले देवदत्ता शिविका से, बेलामय जिनदीक्षा ली॥ ८॥
नन्दनपुर के कनक-प्रभु तब, राजा ने पड़गाहन कर।
दे आहार दान सुख पाया, पंचाश्चर्य पुण्य पाकर॥
तीन वर्ष छद्मस्थ बिताकर, दीक्षावन में ध्यानी हो।
पूर्ण घातिया कर्म नशाए, पुजते केवलज्ञानी हो॥९॥
समवसरण में गंधकुटी में, सिंहासन कमलासन पर।
हुए विराजित जहाँ मेरु अरु, थे मंदर पचपन गणधर॥
विहार करके भव्य धान्य को, तुष्ट पुष्ट संतुष्ट किया।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, योग निरोध स्वरूप किया॥१०॥
आठ हजार छह सौ मुनियों सह, मोक्ष अष्टमी को पाया।
काल अष्टमी तब से जग में, पुजने लगी बनी माया॥
फिर सौधर्म इन्द्र ने आकर, अंतिम शुभ संस्कार किया।
ऐसे विमलनाथ को हमने, नमोऽस्तु बारम्बार किया॥ ११॥
बुद्धू को जो बुद्ध बना दें, शुद्ध करें अभिशापों से।
हमें बचा कर निर्मल कर दें, हिंसादिक सब पापों से॥
उनको बुध ग्रह तक सीमित कर, क्या? अज्ञान नहीं होगा।
मन से 'सुव्रत' जय तो बोलो, क्या? कल्याण नहीं होगा॥१२॥

(सोरठा)

सूकर जिनका चिह्न, विमलनाथ प्रभु नाम है।
सिद्ध बने हर काम, सादर अतः प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

विमलनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, विमलनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री विमलनाथ का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥

१. श्री विमलनाथ तीर्थंकर जी, हो परमेष्ठी जिनशंकर जी।
उद्धार सभी का करो मोक्ष के दाता, सो भक्त झुकाएँ माथा॥श्री..

२. जो सिंहपुरी में जन्म लिए, सम्मेदशिखर से मोक्ष गए।
श्री कौशल देश निवास किए सुखकारी, सो नमोऽस्तु बारी-बारी॥श्री..

३. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....

१. विमलनाथ भव कर्म विनाशी, हम तो पूजा के प्रत्याशी।-२
दर्शन के अभिलाषी, बाबा करूँ आरतिया ॥ करूँ...
२. कृतवर्मा जय श्यामा नंदन, कुंदन सी कर डाली चेतन।-२
मिला मोक्ष का आंगन, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. मेघ पटल के नाश ना भाये, त्यागी मोक्ष शिखर को पाए।-२
सुवीर कूट चमकाया, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ-२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

श्री अनन्तनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. तीर्थंकर श्री अनन्तप्रभु जी, चौदहवें जिनदेवा।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, मिले मुक्ति का मेवा॥
अंगदेश के नगर अयोध्या, सिंहसेन श्यामा के।
उल्कापात देख वैरागे, अनंत प्रभु सोने से॥ ओम्...
२. बने सहेतुक वन में ज्ञानी, सेही चिन्ह जिनंदा।
समवसरण से दिए देशना, पाने निज आनंदा॥
पद्मासन सम्मेदशिखर से, कूट स्वयंभू पाके।
मोक्ष गए सो करें नमोऽस्तु, 'सुव्रत' विद्या ध्याके॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
अनन्तनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री अनन्तनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

अनन्तगुणी है आतमा, सर्वसुखी भरपूर।
अनन्तप्रभु उसके प्रभु, नमोऽस्तु जिन्हें जरूर॥

(हरिगीतिका)

प्रभु आपकी पद वन्दना से, शुद्धता से उर खिले।
हर कष्ट कटते भव-भवों के, पुण्य की पंक्ति मिले॥
पातक कटें गुण चिंतनों से, शीघ्र ही निज भान हो।
फिर आप जैसी शुद्ध निर्मल, चेतना का ज्ञान हो॥
हम आपके पथ पर चलें, पदवी मिले अरिहंत की।
इससे रचाई अर्चना प्रभु, परमपूज्य अनन्त की॥
है प्रार्थना केवल हमारी, भक्ति नैया थाम लो।
मृत्यु महोत्सव हो हमारा, कण्ठ में प्रभु नाम हो॥

(दोहा)

अनन्त स्वामी को नमन, करें वन्दना आज।
भक्ति पुष्प हम, तुम करो, भक्त हृदय पर राज॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(पंचचामर/तोमर)

हमें मिली स्वजन्म से हि, मृत्यु की महा सजा।
मिला नहीं इलाज या, मिली नहीं यहाँ दवा॥
करें निजात्म को निरोग, नीर को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

अनादि से जले तपे, मिली सदा अशान्ति है।
कहाँ मिले जिनेन्द्र छाँव, आत्म रूप शान्ति है॥
करें निजात्म को सुशीत, शीत को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

विनाशवान ही हमें, मिला सदैव विश्व में।
दिखा स्वरूप आपका, मिले हमें भविष्य में॥
करें निजात्म अक्षयी, सुपुंज को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

जिसे स्व-वीतरागता, जिनेश रूप भाएगा।
विकार का विभाव काम, तो विराम पाएगा॥
करें निजात्म को सुशील, पुष्प को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

शरीर है नहीं शरीफ, भूख प्यास से दुखी।
अपूर्ण कामना न ज्ञान, के बिना रहे सुखी॥
करें निजात्म पूर्ण तृप्त, कामना चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

महान् मोह की घटाएँ, आत्मकक्ष ढाँकती।
महारती जिनेन्द्र की, महान् मोह नाशती॥
भरें निजात्म ज्ञान से, सुदीप ये जलाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

लकीर हाथ की भरी, विभाव गंध कीच से।
निकालिए हमें अनन्त, कर्म-बन्ध बीच से॥
भरें निजात्म गंध से, सुगंध को चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

अनन्त जन्म लक्ष्य के, अभाव में गँवा दिए।
फलों भरी चिदात्म को, कषाय से जला दिए॥
मिले निजात्म आत्म को, फलात्म के चढ़ाय के।
अनन्तनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

अनन्त विश्व में फँसे, अनन्त राग-द्वेष से।
अनन्त कष्ट भोगते, अनन्त बार क्लेश से॥
अनन्त बार नर्क की, अनन्त बार स्वर्ग की।
अनन्त बार वेदना, अनन्त बार दर्द की॥
अनन्त बार की कथा, अनन्त बार छोड़ दी।
अनन्त तो मिले नहीं, अनन्त शर्त तोड़ दी॥
हमें अनन्तनाथजी, बुलाइये अनन्त में।
अनन्त-धर्म दीजिये, मिलाइये अनन्त में॥

(सोरठा)

मिले यही वरदान, अनन्तप्रभु भगवान् से।
अर्पित अर्घ्य महान्, वन्दन मन वच प्राण से॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

एकम् कार्तिक कृष्ण को, तज सोलह सुर इन्द्र।
जयश्यामा के गर्भ में, आए अनन्त जिनेन्द्र॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्में बाल अनन्त।
सिंहसेन नृप के यहाँ, बाजे ढोल मृदंग॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

उसी जन्म तिथि में हुआ, शुभ दीक्षा कल्याण।
स्वामी संत अनन्त को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्णा चैत्र अमास को, कर्म नशा ये चार।
बने अनन्त अरिहंत जी, जिन्हें नमोऽस्तु बहुबार॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

उसी ज्ञान तिथि में गए, मोक्ष, अनन्त ऋषीश।
सम्मेदाचल को नमन, मिले अनन्ताशीष॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(नाराच)

आप पाप कर्म इन्द्रियाँ जयी जिनेन्द्र हैं,
सो जिनेन्द्र को भजें सुरेन्द्र वा नरेन्द्र हैं।
हे! अनन्तनाथ जी हमें अनन्त कीजिए,
है नमोऽस्तु आपको हमें महंत कीजिए॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१॥

अवधिज्ञान की मिलीं तुम्हें सुसम्पदा यहीं,
है इसीलिए जिनेन्द्र सा यहाँ सदा नहीं।

हे!अनन्तनाथ जी हमें अनन्त कीजिए,
है नमोऽस्तु आपको हमें महंत कीजिए॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि ज्ञान भी मिला विशेष आपको,
साधना अतः सुसाध विश्व पूज्य आप हो॥
हे! अनन्तनाथ जी हमें अनन्त कीजिए,
है नमोऽस्तु आपको हमें महंत कीजिए॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

ज्ञान सर्व अवधि का विकास आप में हुआ,
धर्म भक्त को मिला स्वमोक्ष आपको हुआ।
हे!अनन्तनाथ जी हमें अनन्त कीजिए,
है नमोऽस्तु आपको हमें महंत कीजिए॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

(सोरठा)

अनन्तावधि की जोत, जगी मिली धार्मिक धरा।
सादर नमोऽस्तु धोक, अनन्तप्रभु दो सुख खरा॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

कोष्टबुद्धि की भण्डार, सिद्धक्षेत्र दे दो हरा।
सादर नमोऽस्तु धोक, अनन्तप्रभु दो सुख खरा॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

बीजबुद्धि के धाम, अपने सम दे दो जरा।
सादर नमोऽस्तु धोक, अनन्तप्रभु दो सुख खरा॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी दीप, धर्म ज्ञान का घी भरा।
सादर नमोऽस्तु धोक, अनन्तप्रभु दो सुख खरा॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

(चौपाई)

जो संभिन्नश्रोतृ गुण धारी, मुक्तिवधू के वो अधिकारी।
अनन्तप्रभु को करके नमोऽस्तु, हम अपनी चाहें प्रिय वस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

स्वयंबुद्ध ऋषिराज निराले, भले भला करते रखवाले।
अनन्तप्रभु को करके नमोऽस्तु, हम अपनी चाहें प्रिय वस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

जो प्रत्येकबुद्ध जी भगवन, जिन सुमरण से मिले धर्म धन।
अनन्तप्रभु को करके नमोऽस्तु, हम अपनी चाहें प्रिय वस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

बोधितबुद्ध बड़ी बड़भागी, जिनसे प्रीत हमारी लागी।
अनन्तप्रभु को करके नमोऽस्तु, हम अपनी चाहें प्रिय वस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

ऋजुमति ज्ञान मनःपर्यय धर, सीधे गए मोक्षपुर के घर।
अनन्तप्रभु को करके नमोऽस्तु, हम अपनी चाहें प्रिय वस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय को, जो पाए वह करे विजय को।
अनन्तप्रभु को करके नमोऽस्तु, हम अपनी चाहें प्रिय वस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

दसपूर्वों की नाव चलाकर, तैर लिए भवजल उथला कर।
अनन्तप्रभु को करके नमोऽस्तु, हम अपनी चाहें प्रिय वस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

चौदह पूर्वों के वाहन से, निकल गए भव के दुखवन से।
अनन्तप्रभु को करके नमोऽस्तु, हम अपनी चाहें प्रिय वस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

(अर्द्ध ज्ञानोदय)

ले अष्टांग-निमित्त नाव को, भवसागर को पार किया।
सो अनन्तप्रभु तुम्हें नमोऽस्तु, सादर बारम्बार किया॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

ऋद्धि-विक्रिया सहित आपने, भक्तों का उद्धार किया।
सो अनन्तप्रभु तुम्हें नमोऽस्तु, सादर बारम्बार किया॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

नर विद्याधर धार तपस्या, कर्मों का संहार किया।
सो अनन्तप्रभु तुम्हें नमोऽस्तु, सादर बारम्बार किया॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

चारण-ऋद्धि आप प्राप्त कर, चित् चैतन्य विहार किया।
सो अनन्तप्रभु तुम्हें नमोऽस्तु, सादर बारम्बार किया॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

ऋषिवर प्रज्ञाश्रमण ऋद्धि से, पापों का परिहार किया।
सो अनन्तप्रभु तुम्हें नमोऽस्तु, सादर बारम्बार किया॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

नभगामी बन अंतर्यामी, निज रमणी श्रृंगार किया।
सो अनन्तप्रभु तुम्हें नमोऽस्तु, सादर बारम्बार किया॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

आशीर्विष के अस्त्र-शस्त्र से, आतम पर उपकार किया।
सो अनन्तप्रभु तुम्हें नमोऽस्तु, सादर बारम्बार किया॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

दृष्टिर्विष की दया दृष्टि से, सत्य अहिंसा सार दिया।
सो अनन्तप्रभु तुम्हें नमोऽस्तु, सादर बारम्बार किया॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(हाकलिका)

संत करें जो उग्र तपा, सब ने उनका नाम जपा।
अनन्तप्रभु की जय हो! जय!, करके नमोऽस्तु मिले विजय॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

दीप्ततपों के ऋषि तपसी, बन जाते हैं मोक्ष वसी।
अनन्तप्रभु की जय हो! जय!, करके नमोऽस्तु मिले विजय॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥

तप्ततपों की आग जला, सबका ऋषिवर करें भला।
अनन्तप्रभु की जय हो! जय!, करके नमोऽस्तु मिले विजय॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

महातपों के तापों से, बचा लिया जग पापों से।
अनन्तप्रभु की जय हो! जय!, करके नमोऽस्तु मिले विजय॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

घोरतपों की सिगड़ी से, हमें बचाते बिगड़ी से।
अनन्तप्रभु की जय हो! जय!, करके नमोऽस्तु मिले विजय॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

घोरगुणों की घानी से, चमके आतम ज्ञानी से।
अनन्तप्रभु की जय हो! जय!, करके नमोऽस्तु मिले विजय॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(अर्द्ध जोगीरासा)

घोरपराक्रम ऋद्धि धरें जो, निज पुरुषार्थ संभालें।
अनन्तप्रभु को करें नमोऽस्तु, दुख से वही बचा लें॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

घोरब्रह्मगुण धारें स्वामी, आतम ब्रह्म निखारें।
अनन्तप्रभु को करें नमोऽस्तु, दुख से वही बचा लें॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

धार ऋद्धि आमर्ष-औषधी, सबको गले लगा लें।
अनन्तप्रभु को करें नमोऽस्तु, दुख से वही बचा लें॥
ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥
खेल्ल-औषधी के खेतों से, धार्मिक फसल उगा लें।
अनन्तप्रभु को करें नमोऽस्तु, दुख से वही बचा लें॥
ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥
जल्ल-औषधी की वायु से, खरपतवार उड़ा लें।
अनन्तप्रभु को करें नमोऽस्तु, दुख से वही बचा लें॥
ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥
विप्रुष-औषध के बीमा से, वीतरागता पालें।
अनन्तप्रभु को करें नमोऽस्तु, दुख से वही बचा लें॥
ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

(अर्द्ध शुद्ध गीता)

जो धरें सर्व-औषध को, वो करें स्वस्थ तन मन को।
श्री अनन्तनाथ कल्याणी, हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥
जो अतुल मनोबल धारें, वो योग मानसिक टारें।
श्री अनन्तनाथ कल्याणी, हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥
जो सिद्ध वचनबल धारें, वो सत्य वचन आचारें।
श्री अनन्तनाथ कल्याणी, हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

कायबली भव कर्म कषायें, जीत चुके आहा।
ओम् ह्रीं अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

क्षीरस्रावि क्षायिक गुण पाकर, क्षमावान आहा।
ओम् ह्रीं अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥
सर्पिस्रावि शुद्धात्म साधना, साध चुके आहा।
ओम् ह्रीं अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥
मधुरस्रावि मुक्तात्म महात्मा, हो बैठे आहा।
ओम् ह्रीं अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥
अमृतस्रावि आतम अमृत, चख डाले आहा।
ओम् ह्रीं अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥
पा अक्षीण-महानस-आलय, साथ हुए आहा।
ओम् ह्रीं अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥
वर्धमान गुण वर्धमान पा, वर्धमान आहा।
ओम् ह्रीं अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥
सिद्ध आयतन सिद्ध क्षेत्र में, प्राप्त किए आहा।
ओम् ह्रीं अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥
णमोकार में नग्न दिगम्बर, साधु धर्म आहा।
ओम् ह्रीं अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप जिनवर, अनन्तनाथ सुनाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

अनन्तनाथ स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

अनन्त गुण भण्डार हैं, प्रभु अनन्त भगवान।
अनन्त गुण पाने करें, बारम्बार प्रणाम॥

(ज्ञानोदय)

जो कुछ नाथ! आपने चाहा, उसे आपने प्राप्त किया।
निजी वज्रपौरुष से स्वामी, भव का चक्र समाप्त किया॥
इतने-इतने उच्च उठे कि, लोकशिखर पर जा बैठे।
जो हम चाहें वो ना पाए, क्या हमसे तुम हो रूठे ?॥१॥
सुख माँगा दुख पाया हमने, माँगा स्वर्ग, नरक पाया।
माँगी शान्ति मिली अशान्ति, माँगा अमृत विष पाया॥
धूप मिली जब माँगी छाया, माँगा धैर्य मिली माया।
माँगा पुण्य, पाप तब पाया, भक्त समझने ये आया॥२॥
समझा दो जयश्यामा नन्दन!, सिंहसेन सुत समझा दो।
एक पद्मरथ राजा वाली, पुण्य-कथा भी बतला दो॥

एक दिवस वह सुने स्वयं प्रभ, जिनवर जी के दिव्य वचन।
जिनको सुनकर मन में गुनकर, छोड़ा राज्य पाठ यश धन॥३॥
राज्य पुत्र धनरथ को देकर, संयम धर आगम ध्याया।
तीर्थंकर प्रकृति को बाँधा, सल्लेखन कर सुर पाया॥
स्वर्ग त्याग कर नगर अयोध्या, सिंहसेन जयश्यामा के।
गर्भ जन्म कल्याणक उत्सव, सुर-रत्नों को वर्षा के॥४॥
बचपन गया बनें फिर राजा, देखा उल्कापात तभी।
बनें विरागी तो लौकांतिक, सुर अनुमोदन करे तभी॥
दीक्षा का आहार दान दे, विशाल राजा सुखी हुए।
दो छद्मस्थ वर्ष के गुजरे, केवलज्ञानी आत्म छुए॥५॥
जय आदिक पचास गणधर से, समवसरण की सभा भरी।
द्रव्य तत्त्व अध्यात्म शिखर की, प्यारी दिव्य-ध्वनि बिखरी॥
भव्य जनों को ज्ञान मार्ग दे, विहार करना छोड़ दिया।
तीर्थ स्वयंभूकूट शिखर पर, मासिक योग निरोध किया॥ ६॥
इकसठ सौ मुनियों को साथी, बना मोक्ष को पाया था।
शुभ अंतिम संस्कार सुरों ने, कर कल्याण मनाया था॥
जिनके नाम मात्र सुमरण से, अनन्त गुण यूँ ही मिलते।
उनको बुधग्रह तक सीमित कर, किसके खुशी बाग खिलते॥७॥
तब ही पुरुषोत्तम नारायण, फिर सुप्रभ बलभद्र हुए।
मधुसूदन प्रतिनारायण भी, इसी काल में हुए हुए॥
ऐसी श्री अनन्त जिनवर की, जय बोलो गुण गाओ तो।
फिर जो चाहो वो सब पाओ, इनकी शरणा आओ तो॥८॥
कर-कर याद आपकी बातें, रात-रात भर रोते हम।
भक्ति समर्पण का जल भरकर, पलकें अपनी धोते हम॥
माला फेरें करें अर्चना, बीज पुण्य का बोकर हम।
प्रभु 'सुव्रत' का भाग खिला दो, मस्त रहें खुश होकर हम॥९॥

(सोरठा)

सेही जिनका चिह्न, जो प्रभु अनन्तनाथ हैं।
वैभव मिले अनन्त, जिन चरणों में माथ हैं ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अनन्तनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, अनन्तनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय—श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री अनन्तनाथ का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
१. श्री अनन्तनाथ तीर्थंकर जी, हो परमेष्ठी क्षेमंकर जी।
कल्याण सभी का करो मोक्ष के दानी, सो करें नमोऽस्तु स्वामी॥श्री..
२. जो नगर अयोध्या जन्म लिए, सम्मेदशिखर से मोक्ष गए।
श्री सिंहसेन श्यामा नंदन सुखकारी, सो नमोऽस्तु बारी-बारी॥श्री..
३. प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता हैं, संसार मोक्षसुख कर्त्ता हैं।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥श्री..
४. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..
५. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
१. अनन्तप्रभु भव कर्म विरामी, हम तो चरणों के हैं धामी।-२
श्रद्धा के आसामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
२. सिंहसेन के राजदुलारे, श्यामा की आँखों के तारे।-२
अयोध्या में अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. उल्कापात देख वैरागे, अचल शिखर से भव को त्यागे।-२
कूट स्वयंभू वाले, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४.कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
५. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ-२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

श्री धर्मनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जी, पन्द्रहवें जिनराजा।
सो हम सादर करें नमोऽस्तु, पाएँ आतम पद को॥
अंगदेश की रत्नपुरी में, वज्रदंड के स्वामी।
भानुराज जी मातृ सुव्रता, जन्मे प्रभु कल्याणी॥ ओम्...
२. उल्कापात देख वैरागे, सोने जैसे तन में॥
बने शालवन में फिर ज्ञानी, सप्तच्छद तरुतल में।
सम्मेदाचल कूट दत्तवर, कायोत्सर्ग रचा के।
मोक्ष गए सो करें नमोऽस्तु, 'सुव्रत' विद्या ध्याके ॥ ओम्...

३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
धर्मनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री धर्मनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

धर्म सूर्य जब हो उदय, दिखता निज संन्यास।
धर्मनाथ को हो नमन, पाने ज्ञान प्रकाश॥

(गीतिका)

आप ही हो मात्र सुन्दर, आप ही अपने रहे।
आप ही हो मात्र साँचे, झूठ सब सपने रहे॥
आप तो लोकाग्र पर हो, भक्त क्यों हम दूर हैं।
चाहते हैं आपको पर, मिलन से मजबूर हैं॥
सात राजू उच्च स्वामी, वीतरागी नाथ हैं।
हम सरागी आप बिन तो, रोज-रोज अनाथ हैं॥
डोर श्रद्धा की हमारी, आप ही प्रभु थाम लो।
भाव भक्ति प्रार्थना सुन, भक्त पर कुछ ध्यान दो॥

(दोहा)

हृदय हमारे आइए, धर्मनाथ भगवान्।
सादर तुम्हें प्रणाम कर, करते पूजन ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

नीर श्रद्धा का लिया है, भक्ति के निज पात्र में।
ज्यों किया अर्पण तुम्हें तो, आत्म झलकी आप में॥

मैल मिथ्या पूर्ण धोने, जल हमें निज धाम दो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

क्रोध ज्वाला से जला है, प्राणियों का चित्-सदन।
इस सदन में आ विराजो तो, खिले आतम वतन॥
आतमा की शान्ति पाने, भक्त पर प्रभु छाँव हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

रत्न हीरे मोति आदिक, तो नहीं हैं पास में।
क्या चढ़ाएँ जो हमें भी, टेर लें प्रभु पास में॥
आतमा अक्षय बनाने, धर्म का पद धाम दो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

आतमा की पुष्प बगिया, आप तो महका रहे।
पंखुड़ी इक दो उसी की, क्यों हमें तड़पा रहे॥
मद के विजेता बन सकें हम, आप सम निष्काम हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

राग का ही स्वाद जाना, वीतरागी ना हुए।
खूब पुद्गल को चखा पर, भक्ति रस को ना छुए॥
स्वाद आतम का चखें बस, धर्म रस विज्ञान दो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

आज तक तो था अँधेरा, सूझता ना कुछ भला।
मोह की काली घटा में, धर्म का दीपक जला॥

आरती करके तुम्हारी, आतमा का भान हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

गंध खिलती आत्म की तो, कर्म कीड़े भागते।
धूप प्रभु को सौंपते तो, भाग्य अपने जागते॥
गंध से निज गंध पाने, धर्म का बस नाम लो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

आतमा क्वाँरी हमारी, भक्ति मण्डप रिक्त है।
आपकी नजरें पड़ें तो, मुक्ति वरता भक्त है॥
भक्ति मण्डप में पधारो, धर्म की फलमाल हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

देखने जग को दिखाने, अर्घ्य प्रभु को सौंपते।
धर्म बिन धर्मी कहा के, धर्म अपना झौंकते॥
हाय! दर्शन तज, प्रदर्शन, में फँसा संसार क्यों।
प्राप्त कर पर्याय दुर्लभ, कर रहा अपकार क्यों॥
धर्म को तज कर मिली है, शक्ति किसको बोलिए।
धर्म ही अंतिम शरण है, नयन अपने खोलिए॥
अर्घ्य श्रद्धा से चढ़ाएँ, धर्म से हर काम हो।
जाप जपकर धर्म प्रभु को, बार-बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

तेरस सुदि वैशाख को, त्याग अनुत्तर स्वर्ग।
धर्म हुए कल्याणमय, पाए सुप्रभा गर्भ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लत्रयोदश्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला माघ को, जन्मी धार्मिक साँच।
भानुराज के आँगने, दिल-दिल घोड़ी नाँच॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्मोत्सव की धूम में, लखकर उल्कापात।
धर्मनाथ मुनि बन पुजे, भक्त हुए नत माथ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष पूर्णिमा को हरे, घातिकर्म संसार।
धर्म संत अरिहंत को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल को, मोक्षधर्म प्रभु पाए।
सुदत्तकूट शाश्वत गिरि, जिनको शीश नवाये॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(अर्द्ध हरिगीतिका)

जो कर्म इन्द्री के जयी हैं, वो प्रभु जिनवर रहे।
श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र जिनको, तो नमोऽस्तु नित रहे॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१॥

जो ज्ञान अवधि प्राप्त करके, चारित्र के स्वामी रहे।
श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र जिनको, तो नमोऽस्तु नित रहे॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि का ज्ञान पाकर, पूज्य परमेष्ठी रहे।
श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र जिनको, तो नमोऽस्तु नित रहे॥
ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि की ज्ञान ऋद्धि, से सदा विकसित रहे।
श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र जिनको, तो नमोऽस्तु नित रहे॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

ऋद्धि अनन्तावधि प्रदाता, केवली पद पर रहे।
श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र जिनको, तो नमोऽस्तु नित रहे॥
ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

जो कोष्टबुद्धि प्राप्त करके, कमलासनी स्थित रहे।
श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र जिनको, तो नमोऽस्तु नित रहे॥
ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

जो बीजबुद्धि के हिमालय, धर्म के अंकुर रहे।
श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र जिनको, तो नमोऽस्तु नित रहे॥
ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

जो हैं पदानुसारी दीपक, धर्म की ज्योति रहे।
श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र जिनको, तो नमोऽस्तु नित रहे॥
ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

(सखी)

संभिन्नश्रोतृ गुण धारी, वो मुक्तिवधू अधिकारी।
श्री धर्मनाथ उपकारी, हो नमोऽस्तु बारम्बारी॥
ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

जो स्वयंबुद्ध ऋषिराजे, वो मन में साधु विराजे।
श्री धर्मनाथ उपकारी, हो नमोऽस्तु बारम्बारी॥
ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

प्रत्येकबुद्ध परमेश्वर, जिन सुमरण देता निज घर।
श्री धर्मनाथ उपकारी, हो नमोऽस्तु बारम्बारी॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

जो बोधितबुद्ध स्वभावी, वो रहे सुखों की चाबी।
श्री धर्मनाथ उपकारी, हो नमोऽस्तु बारम्बारी॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

जो ऋजुमति ज्ञान सँभाले, खुल गए मोक्ष के ताले।
श्री धर्मनाथ उपकारी, हो नमोऽस्तु बारम्बारी॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

जो ज्ञान विपुलमति धारी, हम उनके हैं आभारी दूर हो।
श्री धर्मनाथ उपकारी, हो नमोऽस्तु बारम्बारी॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

जो दसपूर्वों के देवा, सो दुनियाँ करती सेवा।
श्री धर्मनाथ उपकारी, हो नमोऽस्तु बारम्बारी॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

जो चौदहपूर्व चखे रे, वो धार्मिक बने सखे रे।
श्री धर्मनाथ उपकारी, हो नमोऽस्तु बारम्बारी॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

(चौपाई)

जो अष्टांग-निमित्त नाव को, ले पहुँचे हैं मुक्ति गाँव को।
धर्मनाथ जी हमें छाँव दो, सेवक करें नमोऽस्तु भाव को॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

ऋद्धि-विक्रिया जो प्रकटाए, भक्तों का मन वही लुभाए।
धर्मनाथ जी हमें छाँव दो, सेवक करें नमोऽस्तु भाव को॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

नर विद्याधर धार तपस्या, बन बेठे मुक्ति के हिस्सा।
धर्मनाथ जी हमें छाँव दो, सेवक करें नमोऽस्तु भाव को॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

चारण-ऋद्धि प्राप्त आप कर, कर बैठे हो मुक्ति स्वयंवर।
धर्मनाथ जी हमें छाँव दो, सेवक करें नमोऽस्तु भाव को॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

मुनिवर प्रज्ञाश्रमण ऋद्धि से, युक्त हुए सुख समृद्धि से।
धर्मनाथ जी हमें छाँव दो, सेवक करें नमोऽस्तु भाव को॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

नभगामी हो अंतर्यामी, बन बैठे हो केवलज्ञानी।
धर्मनाथ जी हमें छाँव दो, सेवक करें नमोऽस्तु भाव को॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

आशीर्विष के औजारों से, बचते कर्मों के वारों से।
धर्मनाथ जी हमें छाँव दो, सेवक करें नमोऽस्तु भाव को॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

दृष्टिर्विष के दरबारों से, पर गए हो संसारों से।
धर्मनाथ जी हमें छाँव दो, सेवक करें नमोऽस्तु भाव को॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(दोहा)

साधु करें जो उग्रतप, देते निज निर्वाण।
धर्मनाथ को भक्ति से, हो नमोऽस्तु कल्याण॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

दीप्ततपों के ऋषि करें, सुख से महाप्रयाण।
धर्मनाथ को भक्ति से, हो नमोऽस्तु कल्याण॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥

तप्ततपों के ऋषि दिए, तप करने वरदान।
धर्मनाथ को भक्ति से, हो नमोऽस्तु कल्याण॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

महातपों के मोह से, मोहा सबका ध्यान।
धर्मनाथ को भक्ति से, हो नमोऽस्तु कल्याण॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

घोरतपों को घोंट के, पाया निज रसपान।
धर्मनाथ को भक्ति से, हो नमोऽस्तु कल्याण॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

घोरगुणों के घर्षण से, चमका आतमज्ञान।
धर्मनाथ को भक्ति से, हो नमोऽस्तु कल्याण॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(हाकलिका)

घोरपराक्रम ऋद्धि धरें, आतम गुण की वृद्धि करें।
धर्मनाथ को नमोऽस्तु हो, सुख शांति समृद्धि हो॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

घोरब्रह्मगुण ऋद्धि धरें, भव से अपनी सिद्धि करें।
धर्मनाथ को नमोऽस्तु हो, सुख शांति समृद्धि हो॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

आमर्ष-औषधि ऋद्धि धरें, रोग हरें सुख शांति करें।
धर्मनाथ को नमोऽस्तु हो, सुख शांति समृद्धि हो॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

खेल्ल-औषधि ऋद्धि धरें, निर्मल निर्मल भूमि करें।
धर्मनाथ को नमोऽस्तु हो, सुख शांति समृद्धि हो॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

जल्ल-औषधी ऋद्धि धरें, जग दलदल की शुद्धि करें।
धर्मनाथ को नमोऽस्तु हो, सुख शांति समृद्धि हो॥
ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥
विप्रुष-औषधि ऋद्धि धरें, वीतराग सम मुक्ति करें।
धर्मनाथ को नमोऽस्तु हो, सुख शांति समृद्धि हो॥
ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

(अर्द्ध ज्ञानोदय)

सर्व-औषधी उद्घाटित कर, करें स्वस्थ जो चेतन को।
तीर्थंकर श्री धर्मनाथ को, सादर नमोऽस्तु वंदन हो॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥
सफल मनोबल धार रहे जो, स्वस्थ हृदय मन दें हमको।
तीर्थंकर श्री धर्मनाथ को, सादर नमोऽस्तु वंदन हो॥
ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥
सत्य वचनबल के आसामी, सत्य धर्म दे दें हमको।
तीर्थंकर श्री धर्मनाथ को, सादर नमोऽस्तु वंदन हो॥
ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

कर्म कालिमा कायबली ने, धो डाली आहा।
ओम् ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥
अपनी क्षमता क्षीरस्रावि जी, प्रकट किए आहा।
ओम् ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥
सिद्ध अवस्था सर्पिस्रावि, पा बैठे आहा।
ओम् ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

मधुर मधुर सी मधुरस्रावि को, मुनि पाए आहा।
ओम् ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

निजमंथन से अमृतस्रावि, मथ डाले आहा।
ओम् ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

पा अक्षीण-महानस-आलय, घर आए आहा।
ओम् ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

बढ़ा-बढ़ा के वर्धमान गुण, वीर बने आहा।
ओम् ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

सिद्धक्षेत्र हैं सिद्ध-आयतन, शुद्धातम आहा।
ओम् ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

णमोकार के धार्मिक साधु, धर्म दिए आहा।
ओम् ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप जिनवर, धर्मनाथ सुनाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

धर्मनाथ स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

अधर्म से ऊँचे उठे, छुए धर्म निज धाम।
यथा धर्म धर्मेश को, सादर रोज प्रणाम॥
मूलस्तंभ जो धर्म के, दिए धर्म सुखदान।
ऐसे धर्म जिनेश का, भक्त करें गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जय-जय धर्मनाथ धर्मेश्वर, जय-जय धर्म-पिता दाता।
जय-जय धर्मप्रचारक धर्मी, जय-जय धर्म-गुरु धाता॥
जय-जय धर्मधुरंधर धीरा, धर्म धर्मपति विख्याता।
जय-जय धर्मतीर्थ के पालक, अपना कैसा है नाता॥ १॥
जैसे नीरज का सूरज से, शिशु का माता से जैसे।
जैसे जीवों का साँसों से, मछली का जल से जैसे॥
जैसे खुशबू का फूलों से, पक्षी का नभ से जैसे।
जैसे आत्म ज्ञान दर्शन हैं, भक्त और भगवन् वैसे॥ २॥
एक बड़े राजा दशरथ थे, भाग्य बुद्धि बल यशक्षेमी।
धर्म प्रजापालक कल्याणी, प्रकृति उत्सव सुख प्रेमी॥
एक बार बैशाख पूर्णिमा, उत्सव से उल्लास बढ़े।
तभी देखकर चन्द्रग्रहण को, राजा कहीं उदास खड़े॥ ३॥

बने विरागी संयम धरकर, प्रकृति बाँधी तीर्थंकर।
समाधि कर सर्वार्थसिद्धि में, बन अहमिन्द्र तजे सुरपुर॥
माता को सोलह सपने दे, गर्भ जन्म कल्याण हुए।
सुमेरु पर फिर स्वर्ण घटों से, क्षीर-नीर से न्हवन हुए॥ ४॥
कुमारकाल पूर्ण भोगा फिर, राज्य अभ्युदय प्राप्त हुआ।
इक दिन उल्कापात दिखा तो, राजा को वैराग्य हुआ॥
काया-माया नहीं हमारी, धर्म ज्ञान दर्शन अपने।
राज्य सुधर्म पुत्र को देकर, निकल पड़े तप से सजने॥ ५॥
हो आरूढ़ नागदत्ता से, चले शालवन दीक्षा ली।
ज्ञान मनःपर्यय उपजा फिर, अगले दिन मुनि भिक्षा ली॥
पाटलिपुत्र नगर के राजा, धन्यषेण तब धन्य हुए।
तभी प्रसिद्ध दानशासन के, पंचाश्चर्य प्रसन्न हुए॥ ६॥
एक वर्ष छदमस्थ बिताकर, सप्तच्छद तरुतल में जा।
बेला कर नक्षत्र पुष्य में, बने केवली लगी सभा॥
धर्मतीर्थ जो धर्म रहित था, किया धर्म दे अग्रेसर।
मुख्य आर्यिका रही सुव्रता, तेतालीस रहे गणधर॥ ७॥
धर्मदेशना धर्मध्वजा दे, किए विहार बंद स्वामी।
श्रीसम्मेदशिखर पर जाकर, बन बैठे मासिक ध्यानी॥
आठ शतक नौ मुनियों के सह, धर्मनाथ प्रभु मोक्ष गए।
रहा पुष्य नक्षत्र जहाँ पर, मोक्षपर्व सब पूज रहे॥ ८॥
दशरथ नृप दस-रथों सरीखे, धर्म धार जिन बुद्ध बने।
धर्मनाथ बन धर्म-युद्ध कर , पाप कर्म हर शुद्ध बने॥

धर्मनाथ का केवल सुमरण, उलझन कष्ट कर्म हर ले।
रे! चेतन अब तनिक सोचकर, मन में तनिक धर्म धर ले॥९॥
तब बलभद्र सुदर्शन जन्मे, और पुरुषसिंह नारायण।
मघवा सनतकुमार चक्री भी, मधुक्रीड प्रतिनारायण॥
वहीं सनतकुमार चक्री जो, देवों से भी सुन्दर थे।
धर्म धारकर पाप नाशकर, चले मोक्ष के मंदिर थे॥ १०॥
उनको बुधग्रह में क्यों बाँधो, जो भू नभ में बँध न सके।
सबसे ऊँचे धर्म हमारे, मोहपंथ पै चल न सके॥
अतः अपने अनन्य भक्त को, अपना धर्म दिला दो ना।
श्रद्धालय से सिद्धालय में, 'सुव्रत' को बुलवालो ना॥ ११॥

(सोरठा)

वज्रदण्ड जिन चिह्न, धर्मनाथ प्रभु नाम है।
पन्द्रहवें धर्मेश, बारम्बार प्रणाम है॥
जब तक मिले न धर्म, चरण शरण हो आपकी।
फिर हरकर हर कर्म, करें शुद्धि निज आत्म की॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

धर्मनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, धर्मनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री धर्मनाथ का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
१. श्री धर्मनाथ धार्मिक नेता, हो मुक्तिवधू के मंगेता।
उपकार सभी का करते भाग्य विधाता, सो करें नमन नत माथा॥श्री..
२. जो नगर अयोध्या जन्म लिए, सम्मेदशिखर से मोक्ष गए।
श्री भानुराज वा मात सुव्रता नंदन, हम करते प्रभु अभिनंदन॥श्री..
३. प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता हैं, संसार मोक्षसुख कर्त्ता हैं।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥श्री..
४. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..
५. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
१. धर्मनाथ हैं धार्मिक स्वामी, पुण्य धर्म से संचित ज्ञानी।-२
श्रद्धा के वरदानी, बाबा करूँ आरतिया ॥ करूँ...
२. भानुराज के राजदुलारे, मात सुव्रता नयन सितारे।-२
अयोध्या में अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. उल्कापात देख वैरागे, सम्मेदाचल से भव त्यागे।-२
कूट दत्तवर वाले, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
५. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ-२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

श्री शान्तिनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. वृषभनाथ से महावीर तक, चौबीसों हम पूजें।
फिर भी शान्तिनाथ स्वामी के, जय-जयकारे गूँजें॥
विश्वसेन ऐरा के नंदन, हस्तिनागपुर जन्मे।
याद पूर्वभव कर वैरागे, सोने जैसे तन में॥ ओम्...
२. सहस्त्र आम्रवन में बन ज्ञानी, समवसरण में शोभें।
मोक्ष गए सम्मेदशिखर से, कूट कुदप्रभ मोहे॥
दुनियाँ के उपसर्ग शान्त, हों भय संकट ना आएँ।
'विद्या' के 'सुव्रत' को स्वामी, मंगल शान्ति दिलाएँ॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री शान्तिनाथ पूजन

स्थापना (शंभु)

हे! शान्ति प्रदाता शान्ति प्रभु, चैतन्य शान्ति के अधिवासी।
हो जीव मात्र के इष्ट तुम्हीं, हम विश्व शान्ति के अभिलाषी॥
सुख शान्ति शीघ्र तुम सम पाएँ, सो शान्ति प्रभु को पूज रहे।
प्रभु हृदय वेदिका पर तिष्ठो, भक्तों के नमोऽस्तु गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

है जन्म सुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ नव यौवन में।
है मरण दुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ इस जीवन में॥
दुख मातम रोग अशान्ति हरो, जल जैसी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

है भव भोगों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग माया में।
रिश्तों-नातों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ इस काया में॥
धन पद गृह युद्ध अशान्ति हरो, चन्दन सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

है स्वर्ग सुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ सिंहासन में।
चौरासी लाख योनियों में, है शान्ति कहाँ भव भटकन में॥
जग भागमभाग अशान्ति हरो, अक्षत सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

है घर गृहस्थी में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ सुर कन्या में।
है स्त्री सुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ विष कन्या में॥
स्त्री पुरुषों की अशान्ति हरो, पुष्पों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

है भूख प्यास में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ विष अमृत में।
छप्पन भोगों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ रस व्यंजन में॥
रस भोजन भोग अशान्ति हरो, नैवेद्य सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

है अंधकार में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ उजयारों में।
बिजली बल्बों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ नभ तारों में॥
दैनिक जीवन की अशान्ति हरो, दीपक सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

है दौड़-धूप में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ कर्मों में।
है राग-द्वेष में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ नो-कर्मों में॥
परिषह उपसर्ग अशान्ति हरो, धूपों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

खोने-पाने में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ घर भरने में।
निंदा ईर्ष्या में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ कुछ करने में॥
भय वैर विरोध अशान्ति हरो, फल जैसी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।
ओम ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

कृष्ण सप्तमी भाद्र को, तजकर स्वर्ग विमान।
ऐरा माँ के गर्भ में, वसे शान्ति भगवान्॥

ॐ ह्रीं भाद्रकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदह कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्मे शान्ति विराट।
विश्वसेन के आँगने, ज्ञान-बताशा बाँट॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म-तिथी में तप धरे, तजे अशान्ति शोर।
शान्तिनाथ मुनि को हुई, नमोऽस्तु चारों ओर॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दशमी शुक्ला पौष में, पाया केवलराज।
नमन शान्ति अर्हन्त को, करती भक्त समाज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस कृष्णा ज्येष्ठ को, मोक्ष गए शान्तीश।
कुन्दप्रभ कूट शाश्वतगिरि, को वंदन नत शीश॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(लय–माता तू दया करके...)

जय कर्म इन्द्रियाँ कर, जो पूज्य हुए जिनवर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १॥

जब अवधिज्ञान पाए, तो धर्म दिए हितकर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२॥

परमावधि ज्ञान किए, परमातम में वस कर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि ऋद्धि पा, सुख शान्ति दिए भर-भर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

गुण अनन्त-अवधि पाकर, आतम के गुण गाकर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं णमोअणंतोहिजिणाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

(लघु चौपाई)

कोष्टबुद्धि का पाकर सार, सबको दिए शान्ति भण्डार।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥६॥

बीजबुद्धि का पा आलोक, स्वामी हरें जगत के शोक।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥७॥

पदानुसारी पाकर धाम, शान्ति बनाएँ सबके काम।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥८॥

संभिन्नश्रोतृ पाकर ज्ञान, स्वामी करें जगत कल्याण।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमोसंभिण्णसोदाराणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

स्वयंबुद्ध से धर वैराग्य, शान्ति जगाएँ सबके भाग्य।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१०॥

(जोगीरासा)

रंग-बिरंगे जगत नजारे, हमको खूब लुभाएँ।
शान्तिनाथ जी जगत त्याग कर, शुद्धातम चमकाएँ॥

तीर्थंकर प्रत्येकबुद्ध जी, शान्तिनाथ कहलाएँ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, हमको शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

पर से पाकर गुण शिक्षाएँ, जीते सभी परीक्षा।
शुद्ध-बुद्ध एकत्व चेतना, ध्याने देते दीक्षा॥
बोधितबुद्ध देव तीर्थंकर, शान्तिनाथ कहलाएँ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, हमको शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१२॥

अपने पर के सरल विषय जो, मन के जान रहा हो।
फिर भी उनमें कभी न रमता, सम्यग्ज्ञान रहा वो॥
ज्ञान मनःपर्यय-ऋजुमति धर, शान्तिनाथ कहलाएँ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, हमको शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

अपने पर के कुटिल विषय जो, मन के जान रहा हो।
फिर भी उनमें कभी न रमता, सम्यग्ज्ञान रहा वो॥
ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय धर, शान्तिनाथ कहलाएँ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, हमको शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१४॥

(हाकलिका)

दसपूर्वों के जो ज्ञाता, भक्तों को दें सुख साता।
दस पूर्वी अखियाँ खोलो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१५॥

चौदहपूर्वी ऋद्धि धरें, भक्तों की समृद्धि करें।
चौदह पूर्वी सुख तो लो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१६॥

जो अष्टांग-निमित्त धरें, खुद को पर को मुक्त करें।
कुशल मंत्र चेतन धो लो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

अणिमा आदिक ऋद्धि धरें, निज-पर का उद्धार करें।
ऋद्धि विक्रिया ले डोलो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमोविउव्वणपत्ताणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१८॥

विद्याधर नर व्रतधारी, मुक्तिरमा के अधिकारी।
विद्याधर सम सुख घोलो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१९॥

चारणऋद्धि धरें स्वामी, रोग-शोक हरते स्वामी।
चारणऋद्धि मंत्र बोलो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

(सखी)

जो बिना पढ़े हों ज्ञानी, वो प्रज्ञा श्रमण निशानी।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

आकाशगमन जो करते, भक्तों की रक्षा करते।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

जो कभी न मारें प्राणी, आशीर्विष धर कल्याणी।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

जो कुपित दृष्टि ना धरते, हम सब पर करुणा करते।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२४॥

तप कठिन करें ले दीक्षा, कर्मों की करें परीक्षा।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

(शुद्ध गीता)

तपस्या खूब करके भी, चमकती देह है जिनकी।
उन्हीं की अर्चना करके, सँवरती जिन्दगी सबकी॥
धरें वह दीप्ततप हम भी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्तिप्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२६॥

करें आहार तो लेकिन, निहारों पर विजय पा ली।
मिला यह साधना का फल, दिए भक्तों को खुशहाली॥
धरें वह तप्ततप हम भी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्तिप्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२७॥

महातप खूब करके जो, ध्वजा जिनधर्म की धारें।
करें उपवास कल्याणी, उतारें पार भव तारें॥
महातप पूज लें हम भी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्तिप्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२८॥

तपस्या घोर करके जो, करें हर हल समस्या को।
इन्हीं की अर्चना करके, सफल अपनी तपस्या हो॥
भजें हम घोर तप स्वामी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्तिप्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

धरें ऋषि घोरगुण न्यारे, तपस्या के सहारे से।
हरें संसार की पीड़ा, बने सबके दुलारे से॥
धरें वह घोर गुण हम भी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्तिप्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(चौपाई)

विश्व विनाशक बल धारें पर, घोरपराक्रम करें हितंकर।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

महा अघोरब्रह्मगुण ज्ञानी, जगत हितैषी केवलज्ञानी।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

ऋषियों का तन छूकर आई, आमर्षौषधि ऋद्धि सुहाई।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

लार-थूक-कफ खेल्ल कहाएँ, तप से औषधि रूप सुहाएँ।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

देह पसीना जल्ल कहाएँ, तप से औषधि रूप सुहाएँ।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

(दोहा)

मल-मूत्रों को छू पवन, करे स्वस्थ तन प्राण।
विप्रुष-औषधि के धनी, शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

वायु तन छूकर करे, स्वस्थ सुखी इन्सान।
सर्वौषधि गुण के धनी, शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

बिना थके चिन्तन करें, मुहूर्त में श्रुतज्ञान।
मनोबली के नाथ हैं, शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

बिना थके वाचन करें, मुहूर्त में श्रुतज्ञान।
वचनबली के नाथ हैं, शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो वचिबलीणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(विष्णु)

वज्र समान कायबल पाकर, कभी न पाप करें।
मुक्तिवधू से व्याह रचाने, कायोत्सर्ग करें॥
भेद-ज्ञान के योग्य कायबल, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥४०॥

क्षीर समान भोज्य हो जाता, तप की महिमा से।
सम्यक् रूप तपस्या होती, प्रभु की गरिमा से॥
ऋद्धि क्षीरस्रावी ऋषियों को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

नीरस भोजन घी जैसा हो, तप की महिमा से।
सम्यक् रूप साधना होती, प्रभु की गरिमा से॥
सर्पिस्रावी गुण ऋषियों को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥४२॥

कटुक भोज्य भी मधुर मिष्ट हो, तप की महिमा से।
सम्यक् रूप अर्चना होती, प्रभु की गरिमा से॥
ऋद्धि मधुस्त्रावी ऋषियों को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

जहर बने अमृत के जैसा, तप की महिमा से।
सम्यक् रूप भावना होती, प्रभु की गरिमा से॥
अमृतस्त्रावी गुण ऋषियों को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

ऋषि आहार शेष ऐसा हो, तप की गरिमा से।
कटक पेट भर रहे साथ में, प्रभु की महिमा से॥
यह अक्षीण-महानस-आलय, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

तीनलोक के सिद्ध-आयतन, सिद्धशिला तक जो।
चरण धूल सिद्धों की पाने, सादर वन्दन हो॥
ओम नमः सिध्देभ्यः भजकर, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणंश्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

अवगुण त्यागें सद्गुण धारें, वर्धमान जैसे।
जिनके हम श्रदालु जिन बिन, रहें कहो कैसे॥
वर्धमान जैसी चर्या को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

जिनशासन में संचालित हो, आज वीरशासन।
सर्व साधुओं की धारा यह, करे धर्म रक्षण॥
गौतम-गुरु से विद्या-गुरु तक, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप शान्ति, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

शान्तिनाथ जिनवर करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धि सम्पन्न श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

विघ्न हरण मंगलकरण, शान्तिनाथ भगवान्।
जिनकी पूजन से मिले, वीतराग विज्ञान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! शान्ति प्रभो की, जय-जय अतिशयकारी की।
जय हो! जय हो! दया सिन्धु की, जय-जय मंगलकारी की॥
वीतराग - सर्वज्ञ - हितैषी, महिमा खूब तुम्हारी है।
सबके दिल पर छाए रहते, अजब-गजब बलिहारी है॥१॥

पिछले भव में रहे मेघरथ, राज-पाठ जिनने छोड़ा।
मुनि बन तीर्थंकरप्रकृति का, नाम कर्म बन्धन जोड़ा॥
फिर प्रायोपगमन धारण कर, कर संन्यासमरण उत्तम।
काया तज अहमिन्द्र बने फिर, हस्तिनागपुर लिया जनम॥२॥
विश्वसेन नृप ऐरा रानी, तुमको पाकर धन्य हुए।
गर्भ जन्म कल्याणक करके, सारे भक्त प्रसन्न हुए॥
शंख सिंह भेरी घण्टा से, जन्म सूचना पाकर के।
चार निकायों के देवों ने, पर्व मनाया आकर के॥३॥
गर्भ-भवन में शचि-इन्द्राणी, जाकर के माँ बालक को।
सुला दिया माया-निद्रा से, उठा लिया जिन-बालक को॥
सौंप दिया सौधर्म इन्द्र को, इन्द्र चले ऐरावत से।
सुमेरु पर जन्माभिषेक कर, नाम शान्तिनाथ रक्खे॥४॥
चक्र शंख सूरज चंदादिक, चिह्न सुनहरे थे तन में।
होकर कामदेव बारहवें, किन्तु रहे निज चेतन में॥
कुमारकाल बीत जाने पर, विश्वसेन निज राज्य दिए।
चौदह रत्न और नौ निधियाँ, प्रकट हुए जो भोग लिए॥ ५॥
शान्ति चक्रवर्ती ने इक दिन, दर्पण में दो मुख देखे।
आत्मज्ञान वैराग्य हुआ तो, क्षणभंगुर वैभव फैंके॥
ज्यों घर तजने का सोचे तो, लौकान्तिक अनुमोदन पा।
राज्य दिया नारायण सुत को, फिर दीक्षा अभिषेक हुआ॥ ६॥
तब सर्वार्थसिद्धि पालकी, से गृह तजने यतन किए।
सहस्र आम्रवन में दीक्षा ले, पंचमुष्ठि केशलौंच किए॥
शान्तिनाथ जब बने दिगम्बर, धरती अम्बर गूँज पड़े।
ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा तो, भक्ति पुण्य सब लूट चले॥७॥
मन्दिरपुर में सुमित्र राजा, दीक्षा का आहार दिए।
पंचाश्चर्य पुण्य पाया तो, सब ने जय-जयकार किए॥

सोलह वय छद्मस्थ बिता के, बने केवली शान्तीश्वर।
समवसरण फिर हुआ सुशोभित, थे छत्तीस पूज्य गणधर॥ ८॥
मासिक योगनिरोध धारकर, श्रीसम्मेदशिखर पर जा।
शुक्लध्यान से कर्म नशाकर, सिद्ध मोक्ष में बने अहा॥
जो श्रीषेण हुए राजा फिर, भोगभूमि में आर्य हुए।
देव हुए फिर विद्याधर जो, देव हुए बलभद्र हुए॥९॥
देव हुए वज्रायुध चक्री, फिर अहमिन्द्र मेघरथ बन।
मुनि सर्वार्थसिद्धि पहुँचे फिर, तीर्थंकर शान्ति भगवन्॥
ऐसे शान्तिनाथ भगवन् के, बारह-बारह भव सुन्दर।
शान्तिनाथ सा अन्य कौन जो, धर्म धुरंधर तीर्थंकर॥१०॥
कामदेव ने जन्म धारकर, जीती सब सुन्दरताएँ।
शान्तिनाथ ने चक्री बनकर, जय की सभी सम्पदाएँ॥
तीर्थंकर बन शान्तिनाथ ने, पाया मोक्ष कर्म कर क्षय।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, शान्तिप्रभु की बोलो जय॥११॥
कालचक्र वश लुप्त धर्म को, वृषभ आदि प्रभु दिखलाए।
फिर भी प्रसिद्ध अवधि अंत तक, बोलो कौन चला पाए?
किन्तु बाद में शान्तिप्रभु से, मोक्षमार्ग जो प्रकट हुआ।
अपनी निश्चित अवधिकाल तक, बिन बाधा के प्राप्त हुआ॥१२॥
ऐसे शान्तिनाथ भगवन् का, ध्यान निरन्तर धारो तो।
होगा भला शान्ति भी होगी, बुध ग्रह में मत बाँधो तो॥
आज आद्य गुरु शान्तिनाथ का, चमत्कार कुछ अलग दिखे।
खण्ड-खण्ड सौभाग्य पिण्ड भी, 'सुव्रत' पुण्य अखण्ड दिखे॥१३॥

(सोरठा)

हिरण चिह्न पहचान, शान्तिनाथ प्रभु नाम है।
त्रयपद मय भगवान्, बारम्बार प्रणाम है॥

पुण्य खरीदा आज, भक्ति मूल्य का दाम दें।
शान्तिनाथ जिनराज, स्वर्ग मोक्ष सुख धाम दें॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शान्तिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, शान्तिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री शान्तिनाथ का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥

१. श्री शान्तिनाथ तीनों पदधर, प्रभु कामदेव चक्री जिनवर।
हो शान्ति प्रदाता शान्ति विधाता स्वामी, चरणों में है प्रणमामि॥श्री..

२. श्री शान्तिनाथ अठमासी जी, बन बैठे हैं संन्यासी जी।
हैं शान्ति प्रदाता शान्तिनाथ जिन स्वामी, सो दुनियाँ करे नमामि ॥श्री..

३. जो हस्तिनापुर में जन्म लिए, सम्मेदशिखर से मोक्ष गए।
श्री विश्वसेन ऐरा के नंदन शान्ति, हम चाहें आतम शान्ति॥श्री..

४. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥ श्री..

आरती

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....

१. विश्वसेन के राज दुलारे, ऐरा माँ के नयन सितारे।-२
हस्तिनापुर अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
२. कामदेव चक्री तीर्थंकर, वीतराग सर्वज्ञ हितंकर।-२
विश्वशान्ति के सहारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. धर्मधार को आप बहाते, कर्मों के ग्रह रोग नशाते।-२
शान्तिधारा वाले, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४. आत्मशान्ति के हम अभिलाषी, विद्या गुरु के हम विश्वासी।२
'सुव्रत' के प्रत्याशी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

श्री कुंथुनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. कुंथुनाथ तीर्थंकर श्री जी, सत्रहवें सुखकारी।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, तीन-तीन पदधारी॥
सूर्यसेन श्रीदेवी नंदन, हस्तिनागपुर जन्मे।
याद पूर्व भव कर वैरागे, सोने जैसे तन में॥ ओम्...
२. बने सहेतुकवन में ज्ञानी, तिलक वृक्ष तरुतल में।
समवसरण से चले मोक्ष को, सिद्धों के संकुल में॥
कूट ज्ञानधर सम्मेदाचल, बकरा चिह्नित स्वामी।
मोक्ष गए सो करें नमोऽस्तु, 'सुव्रत' विद्या धामी॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
कुंथुनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री कुंथुनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

जीव-दया के स्तम्भ हैं, कुंथुप्रभु जिननाथ।
करुणा के अवतार को, झुकें भक्त के माथ॥

(राज, १९-मात्रिक)

भक्ति से हम कर रहे जिन वन्दना।
द्रव्य लाए साथ करने अर्चना॥
आप कुंथुनाथ प्यारे जिनवरम्।
आपने पाया स्वरूपी निज धरम्॥
आपको जिसने भी ध्याया ध्यान से।
विश्व ने पूजा उसे सम्मान से॥
कष्ट पीड़ा संकटों पर जय करे।
तोड़ कर के कर्मबन्धन क्षय करे॥
हम सफल मानव बनें धर्मात्मा।
आइए मन में यही है प्रार्थना॥
भक्ति से हम ...।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

पाप मिथ्या ने दिए जीवन मरण।
हमको साँची न मिली अब तक शरण॥
नीर के बदले हरो हर पाप को।
पूज्य कुंथुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

पा दशा प्रतिकूल हम ऊबे नहीं।
ज्ञान रस के कुण्ड में डूबे नहीं॥
चंदन के बदले हरो संताप को।
पूज्य कुंथुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

कौन क्या पाते दुखी इस राग से।
काँप कर क्यों भागते वैराग्य से॥
पुंज के बदले हरो भव-चाप को।
पूज्य कुंथुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

आत्मा का फूल अब तक ना खिला।
पा लिया सब किन्तु कुछ भी ना मिला॥
पुष्प के बदले हरो रति-नाथ को।
पूज्य कुंथुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

चख लिया पकवान हर इक कर्म का।
ना लिया रस आत्म का ना धर्म का॥
नैवेद्य के बदले हरो अभिशाप को।
पूज्य कुंथुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

आँखों के अंधे नयनसुख नाम है।
ऐसे ही मोही जनों का काम है॥
दीप के बदले हरो दुख-रात को।
पूज्य कुंथुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

कस्तूरी नाभि में ले मृग भ्रम रहा।
गंध निज की पाने पर में रम रहा॥
गंध के बदले हरो विधि-पाक को।
पूज्य कुंथुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

है कृपा सबसे बड़ी जिनदेव की।
जो मिले पा के कृपा गुरुदेव की॥
सुफल के बदले पुकारें आपको।
पूज्य कुंथुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

कुछ नहीं लाए चढ़ाने के लिए।
आए अपनी ही सुनाने के लिए॥
त्याग या अनुराग की इच्छा नहीं।
ली कभी चारित्र की दीक्षा नहीं॥
कोई भी आती नहीं सम्यक् कला।
अर्घ्य अर्पण के बिना क्या हो भला॥
इसलिए यह अर्घ्य सौपें आपको।
पूज्य कुंथुनाथ वन्दन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दशमी श्रावण कृष्ण को, सोलह स्वप्न दिखाए।
श्रीकान्ता के गर्भ में, कुंथुनाथ प्रभु आए॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रथम शुक्ल वैशाख को, जन्मे कुंथुजिनेश।
सूर्यसेन के आँगने, बाजे ढोल विशेष॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म तिथि में चक्र तज, कुंथुप्रभु तप धार।
जय-जय जिनशासन हुआ, जिन्हें नमन बहु बार॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल की तीज में, पा कैवल्य सुवस्तु।
कुंथुप्रभु अरिहंत को, हम तो करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लतृतीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शिखर ज्ञानधरकूट से, मोक्ष कुंथुप्रभु पाए।
मोक्ष जन्म तप साथ में, हम तो शीश नवाये॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्री कुंथुनाथ दीप अर्चना-विधान अर्घ्यावली

(शुद्ध गीता)

विजय जो कर्म इन्द्री कर, बने जिनवर हमारे हैं।
नमोऽस्तु कुंथु जिनवर को, भगत जिनके सहारे हैं॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१॥

अवधिज्ञानी हुए हैं जो, वही आगम हमारे हैं।
नमोऽस्तु कुंथु जिनवर को, भगत जिनके सहारे हैं॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परम ऋद्धि अवधिज्ञानी, वही देते किनारे हैं।
नमोऽस्तु कुंथु जिनवर को, भगत जिनके सहारे हैं॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

जिन्हें सर्वावधि ऋद्धि, मिली वो ही उजारे हैं।
नमोऽस्तु कुंथु जिनवर को, भगत जिनके सहारे हैं॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

मिली ऋद्धि अनन्त-अवधि, वही नैया उतारे हैं।
नमोऽस्तु कुंथु जिनवर को, भगत जिनके सहारे हैं॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

प्रकट कर कोष्टबुद्धि को, हमें देते इशारे हैं।
नमोऽस्तु कुंथु जिनवर को, भगत जिनके सहारे हैं॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

उदय कर बीजबुद्धि को, वही तो प्राण प्यारे हैं।
नमोऽस्तु कुंथु जिनवर को, भगत जिनके सहारे हैं॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी ऋद्धि से, गए जो मोक्ष द्वारे हैं।
नमोऽस्तु कुंथु जिनवर को, भगत जिनके सहारे हैं॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

(हाकलिका)

संभिन्नश्रोतृ गुण धारी, मृत्युंजय अतिशयकारी।
नमोऽस्तु कुंथुनाथ तुम्हें, ले लो अपनी शरण हमें॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

स्वयंबुद्ध गुण ऋषि धारें, भक्तातम निज शृंगारें।
नमोऽस्तु कुंथुनाथ तुम्हें, ले लो अपनी शरण हमें॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

जो प्रत्येकबुद्ध ऋद्धि, प्रकटा कर पाए सिद्धि।
नमोऽस्तु कुंथुनाथ तुम्हें, ले लो अपनी शरण हमें॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

बोधितबुद्ध महंत कहे, जिनशासन जयवंत रहे।
नमोऽस्तु कुंथुनाथ तुम्हें, ले लो अपनी शरण हमें॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

ऋजुमति ज्ञान मनःपर्यय, करे हमारी सदा विजय।
नमोऽस्तु कुंथुनाथ तुम्हें, ले लो अपनी शरण हमें॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

ज्ञान विपुलमति मनपर्यय, आओ उनकी बोलें जय।
नमोऽस्तु कुंथुनाथ तुम्हें, ले लो अपनी शरण हमें॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

दसपूर्वों के शासक जो, मोक्षमार्ग के भाषक वो।
नमोऽस्तु कुंथुनाथ तुम्हें, ले लो अपनी शरण हमें॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

चौदहपूर्व सिद्ध जिनको, करें वही प्रसिद्ध हमको।
नमोऽस्तु कुंथुनाथ तुम्हें, ले लो अपनी शरण हमें॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

(ज्ञानोदय)

वाहन ले अष्टांग-निमित्त का, उद्घाटित निज चित्र करें।
श्रद्धा दाता कुंथुनाथ को, हम तो नमोऽस्तु रोज करें॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

ऋद्धि विक्रिया प्राप्त किए सो, निज पर भ्रमण समाप्त करें।
श्रद्धा दाता कुंथुनाथ को, हम तो नमोऽस्तु रोज करें॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

नर विद्याधर संयम धरकर, मुक्तिमहल को प्राप्त करें।
श्रद्धा दाता कुंथुनाथ को, हम तो नमोऽस्तु रोज करें॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

चारण-ऋद्धि की चर्चा से, निज अर्चा को प्राप्त करें।
श्रद्धा दाता कुंथुनाथ को, हम तो नमोऽस्तु रोज करें॥
ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥
मुनिवर प्रज्ञाश्रमण बने सो, ज्ञान बुद्धि भण्डार भरें।
श्रद्धा दाता कुंथुनाथ को, हम तो नमोऽस्तु रोज करें॥
ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥
गगनविहारी कमलविहारी, भक्त मार्ग आसान करें।
श्रद्धा दाता कुंथुनाथ को, हम तो नमोऽस्तु रोज करें॥
ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥
आशीर्विष के कल्याणक से, भक्तों का उद्धार करें।
श्रद्धा दाता कुंथुनाथ को, हम तो नमोऽस्तु रोज करें॥
ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥
दृष्टिर्विष के की दया भाव से, सर्वसुखी संसार करें।
श्रद्धा दाता कुंथुनाथ को, हम तो नमोऽस्तु रोज करें॥
ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(सखी)

जो साधु उग्रतप करते, उनके अध्यात्म निखरते।
श्री कुंथुनाथ तप दाता, हो नमोऽस्तु बनने ज्ञाता॥
ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥
कर दीप्ततपों सेवा, ऋषिराज दिए निज मेवा।
श्री कुंथुनाथ तप दाता, हो नमोऽस्तु बनने ज्ञाता॥
ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥
पा तप्ततपों का मेला, संसार हुआ खुद चेला।
श्री कुंथुनाथ तप दाता, हो नमोऽस्तु बनने ज्ञाता॥
ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

सुन महातपों की ज्वाला, मुक्ती लाई वरमाला।
श्री कुंथुनाथ तप दाता, हो नमोऽस्तु बनने ज्ञाता॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

लख घोरतपों की बेला, रहे सके न भक्त अकेला।
श्री कुंथुनाथ तप दाता, हो नमोऽस्तु बनने ज्ञाता॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

जय घोरगुणों की गूँजी, सो मिली सुखों की पूँजी।
श्री कुंथुनाथ तप दाता, हो नमोऽस्तु बनने ज्ञाता॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(अर्द्ध जोगीरासा)

घोरपराक्रम ऋद्धि शस्त्र से, कर्म शत्रु ललकारें।
कुंथुनाथ को करके नमोऽस्तु, अपना भाग्य सँवारें ॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

घोरब्रह्मगुण ऋद्धि प्रकट कर, ऋषि के पैर पखारें।
कुंथुनाथ को करके नमोऽस्तु, अपना भाग्य सँवारें ॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

मिली जिन्हें आमर्ष-औषधी, सबके संकट टारें।
कुंथुनाथ को करके नमोऽस्तु, अपना भाग्य सँवारें ॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

खेल नहीं जो खेल्ल-औषधी, वो ही भाग्य संवारें।
कुंथुनाथ को करके नमोऽस्तु, अपना भाग्य सँवारें ॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

जल्ल-औषधी जान बूझकर, धर्म कथा विस्तारें।
कुंथुनाथ को करके नमोऽस्तु, अपना भाग्य सँवारें ॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

विप्रुष-औषधि ऋद्धि धरें सो, हमको पार उतारें।
कुंथुनाथ को करके नमोऽस्तु, अपना भाग्य सँवारें ॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

(चौपाई)

सर्व-औषधी पाई जिन्होंने, मुक्तिवधू अपनाई उन्होंने।
कुंथुनाथ को करके नमोऽस्तु, बनें सफल निज करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

आत्म मनोबल प्रकटा जिनका, पाप कर्म दल मिटता उनका।
कुंथुनाथ को करके नमोऽस्तु, बनें सफल निज करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

वचनबली को मिला वचनबल, काट रहा कर्मों का जंगल।
कुंथुनाथ को करके नमोऽस्तु, बनें सफल निज करें जयोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

कायबली कुंथु जीवों पर, कृपा करें आहा।
ओम् ह्रीं कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

क्षीरस्रावि जी क्षेमंकर बन, क्षमा करें आहा।
ओम् ह्रीं कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

सर्पिस्रावि सिद्ध साधना, करते हैं आहा।
ओम् ह्रीं कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

मधुरस्रावि जी महा साधना, साध रहे आहा।
ओम् ह्रीं कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

अमृतस्रावि अजर अमर हों, अरिहंता आहा।
ओम् ह्रीं कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

पा अक्षीण-महानस-आलय, तीर्थंकर आहा।
ओम् ह्रीं कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

वर्धमान चारित्र गुणी हों, वीतराग आहा।
ओम् ह्रीं कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

सिद्ध-आयतन शुद्धातम दें, सिद्धचक्र आहा।
ओम् ह्रीं कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

णमोकार ओमकार रूप हैं, जैन साधु आहा।
ओम् ह्रीं कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप कुंथु, नाथ अपने नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

कुंथुनाथ स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र--ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री कुंथुनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

कर्म हरण मुक्तिवरण, कुंथुप्रभु के स्थान।
यूँ ही मिलते भक्त को, अतः करें गुणगान॥
चक्रवर्ति छठवे रहे, तेरहवे रतिनाथ।
सत्रहवे तीर्थेश की, करें भक्ति नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

साधारण निगोद को तजकर, दुर्लभ तन प्रत्येक धरें।
एकेन्द्री को तजकर मणिसम, दुर्लभ तन त्रस प्राप्त करें॥
त्रस तजकर पंचेन्द्रिय दुर्लभ, पशू नारकी सुर-बनना।
नार नपुंसक भव को तजकर, अति दुर्लभ है नर बनना॥ १॥
जन्म धारना उस भारत में, जहाँ अहिंसा कर्म पले।
देव-शास्त्र-गुरुओं की पूजा, श्रमण संस्कृति धर्म चले॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित की, बहे त्रिवेणी धरती पर।
ऐसे दुर्लभ दया धर्म को, बता रहे कुंथु जिनवर॥ २॥
यही कुंथुप्रभु पिछले भव थे, रिपु-विजयी सिंहरथ राजा।
तब ही उल्कापात देखकर, धर्मी बन गए मुनिराजा॥
कैसे हो कल्याण विश्व का, जब रोया यों अन्तर-मन।
इतनी बढ़ी विशुद्धि तब ही, शुद्ध हुआ सम्यग्दर्शन॥ ३॥
तब तीर्थंकरप्रकृति बाँधी, और समाधिमरण करके।
स्वर्ग अनुत्तर पाया जिसको, त्याग दिया नर बन करके॥
सूरसेन नृप श्री कान्ता माँ, हस्तिनागपुर हुए खुशी।
इन्द्र जन्म अभिषेक पर्व कर, नाम कुंथु रख हुए सुखी॥ ४॥
राजा बने मण्डलेश्वर फिर षट्खण्डों के अधिकारी।
जातिस्मरण से आत्म ज्ञान पा, की शिवपथ की तैयारी॥
लौकान्तिक का अनुमोदन पा, चले पालकी विजया से।
तुरत सहेतुक वन में जाकर, हुए सुशोभित दीक्षा से॥ ५॥

धर्ममित्र ने पंचाश्चारी, दीक्षा का आहार दिया।
सोलह वय छद्मस्थ बिताकर, तेला वाला नियम लिया॥
तिलक वृक्ष के नीचे स्वामी, बन बैठे केवलज्ञानी।
समवसरण की सभा लगी तो, सबने सुनी दिव्यवाणी॥ ६॥
श्री सम्मेदशिखर पर जाकर, मासिक योग निरोध किए।
कर्म हरण कर मुक्ति वरण कर, मोक्ष कुंथुप्रभु प्राप्त किए॥
कामदेव को काय-कान्ति तो, कुछ भी नहीं सुहाई थी।
चक्रेश्वर को कनक-कामिनी, कभी लुभा ना पाई थी॥ ७॥
तीर्थंकर को कर्मन-कड़ियाँ, कस न सकी चट-चट टूटीं।
त्रय पदधारी कुंथुनाथ की, कर्म-कालिमा झट छूटी॥
कुंथु नाम बस कर्म हरे सब, बुध ग्रह की क्या बात रही?
कनक-कामनी तज, कंचन सी, आतम पाते भक्त सही॥ ८॥
जैसा आप कहोगे स्वामी, वैसा हम क्या कर न सकें?
किन्तु अकेले तड़प रहे हम, विरह वेदना सह न सकें॥
अतः रिझाने तुम को आए, हम पर नाथ रीझ जाओ।
'सुव्रत' तो हो चुके तुम्हारे, तुम 'सुव्रत' के हो जाओ॥ ९॥

(सोरठा)

बकरा जिनका चिह्न, कुंथुनाथ प्रभु नाम है।
करुणाकर चैतन्य, प्रभु को सतत प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

कुंथुनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, कुंथुनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री कुंथुनाथ का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
१. श्री कुंथुनाथ करुणाकर हैं, सो जग–वैभव सब नौकर हैं।
सो श्रद्धालु को परम दयालु स्वामी, बस कर दो केवलज्ञानी॥श्री..
२. जो हस्तीनागपुर जन्म लिए, सम्मेदशिखर से मोक्ष गए।
श्री सूर्यसेन श्रीदेवी माँ के प्यारे, जो तीन–तीन पदधारे॥श्री..
३. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..
४. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी–ध्यानी॥श्री..

आरती

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
१. कुंथुनाथ प्रभु परम दयालु, धर्मालु के हम श्रद्धालु।–२
करुणा करो कृपालु, बाबा करूँ आरतिया ॥ करूँ...
२. सूर्यसेन के राज में दुलारे, श्रीदेवी के नयन सितारे।–२
हस्तिनापुर अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. तीन–तीन पद धर जग त्यागे, याद पूर्व भव कर वैरागे।–२
कूट ज्ञानधर वाले,बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि–सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ–२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

श्री अरनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण

(जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. अरहनाथ अट्ठारहवें जिन, मीन चिह्न के धारी।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, तीन-तीन पदधारी॥
हस्तीनागपुर जन्मे अपने, अरहनाथ बड़भागी।
राज सुदर्शन मित्रा नंदन, मेघ देख वैरागी॥ ओम्...
२. बने सहेतुकवन में ज्ञानी, आम्रवृक्ष के नीचे।
समवसरण से भक्त भूमि में, धर्मामृत रस सींचे॥
नाटक कूट तुम्हें न भाये, सम्मेदाचल त्यागे।
मोक्ष गए सो करें नमोऽस्तु, 'सुव्रत' विद्या जागे॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
अरहनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री अरनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

अन्तरंग बहिरंग की, लक्ष्मी के भगवंत।
परमपूज्य अरनाथ को, नमन रहे जयवंत॥

(ज्ञानोदय)

फूलों जैसे कामदेव प्रभु, बने चक्रवर्ती जिनवर।
तीन तीन पद धारी प्रभु जी, आन विराजो मन मंदिर॥

भक्त प्रार्थना सुनकर स्वामी, पूजा का अवसर दे दो।
हम तो करें नमोस्तु स्वामी, अरहनाथ पद रज दे दो॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(शुद्धगीता)

लिए श्रद्धा सरस जल हम, विनय से अब चढ़ाएंगे।
यही विश्वास है हमको, निजातम शुद्ध पाएंगे॥
जरा-सा नीर तो छिड़को, तुरत हम जाग जाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

रसायन मंत्र मणियों में, न शान्ति है तो क्यों जाएँ।
तभी चंदन चढ़ाके हम, प्रभु सम शान्ति झलकाएँ॥
जरा समता जिनामृत दो, निराकुल रूप पाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

बड़े दुर्लभ मगर आसाँ, सहज नाते हमारे हैं।
हृदय में तुम हमारे हो, चरण में हम तुम्हारे हैं॥
चढ़ाकर पुंज हम तुमको, तुम्हीं में डूब जाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

हुई सुर पुष्प वृष्टि जो, न उल्टे हों गिरे नीचे।
विकारी भाव हरने को, तुम्हारे रूप पर रीझे॥
सुकोमल पुष्प सा आतम, चढ़ा हम पुष्प पाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

चखा हर स्वाद दुनियाँ का, मगर ना तृप्त हो पाए।
तेरी इक बूँद के प्यासे, तभी जिन तीर्थ पर आए॥
बहा दो ज्ञान की धारा, निजी नैवेद्य पाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

सदा तुमको निहारें हम, हमें क्यों तुम निहारो ना।
अँधेरे में फँसे हमको, उजाला क्यों दिखाओ ना॥
तुम्हारी आरती करके, तुम्हीं सम जगमगाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

पका दो इस तरह हमको, घड़ा कोई पके जैसे।
करम की मार सब सह लें, कि चमके शुद्ध सोने से॥
चढ़ाकर धूप हम तुमको, करम-काजल जलाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

नहीं कुछ भी दिया तुमने, मगर सब कुछ तुम्हारा है।
मिलन तुमसे हमारा ही, मिलन हमसे हमारा है॥
मिटाने दूरियाँ सारी, चरण में फल चढ़ाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

जमाने में उलझकर हम, तुम्हारा नाम खो बैठे।
सुलझने की दिलाशा में, भुलाकर आत्म रो बैठे॥
भुला दो नाथ भूलें तो, चढ़ा हम अर्घ्य पाएंगे।
नमोऽस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जाएंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

फाल्गुन शुक्ला तीज को, तजकर स्वर्ग जयंत।
मित्रसेना के गर्भ में, वसे अरह भगवंत॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस अगहन शुक्ल में, जन्मे अरह अडोल।
पिता सुदर्शन के यहाँ, भक्त बजाएँ ढोल॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दशमी अगहन शुक्ल को, देखे मेघ विनाश।
संत अरह प्रभु को नमन, जो धारे संन्यास॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस कार्तिक शुक्ल को, हरे घातिया धूल।
अरह केवली को नमन, अर्पित श्रद्धा फूल॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत अमावस कृष्ण में, मोक्ष लिए प्रभु लूट।
नमन करें अरनाथ को, पूजें नाटक कूट॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(अर्द्ध जोगीरासा)

कर्म इन्द्रियों पर जय करके, जिनवर जो बन जाते।
अरहनाथ को करके नमोऽस्तु, भक्त सफलता पाते॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१॥

अवधिज्ञानी ऋषिवर अपने, पद अध्यात्म लुटाते।
अरहनाथ को करके नमोऽस्तु, भक्त सफलता पाते॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि की ऋद्धि प्राप्त कर, पावन हमें बनाते।
अरहनाथ को करके नमोऽस्तु, भक्त सफलता पाते॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि की ऋद्धि धारकर, पारस हमें बनाते।
अरहनाथ को करके नमोऽस्तु, भक्त सफलता पाते॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

अनन्तावधि की मिली ऋद्धि सो, अघ अज्ञान मिटाते।
अरहनाथ को करके नमोऽस्तु, भक्त सफलता पाते॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

कोष्टबुद्धि को प्राप्त किए सो, प्रभु कैवल्य लुटाते।
अरहनाथ को करके नमोऽस्तु, भक्त सफलता पाते॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

बीजबुद्धि को वपन किए सो, सुख की फसल उगाते।
अरहनाथ को करके नमोऽस्तु, भक्त सफलता पाते॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी ऋद्धि प्राप्त कर, परमेष्ठी कहलाते।
अरहनाथ को करके नमोऽस्तु, भक्त सफलता पाते॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

(दोहा)

धरकर संभिन्नश्रोतृ गुण, स्वामी दिए विवेक।
अरहनाथ दें लक्ष्य सो, हो नमोऽस्तु सिर टेक॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

स्वयंबुद्ध गुण ऋषि धरें, बने अनेकानेक।
अरहनाथ दें लक्ष्य सो, हो नमोऽस्तु सिर टेक॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

जो प्रत्येकबुद्ध हुए, काट कर्म के लेख।
अरहनाथ दें लक्ष्य सो, हो नमोऽस्तु सिर टेक॥
ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥
बोधितबुद्ध महात्मा, काटें दुख की रेख।
अरहनाथ दें लक्ष्य सो, हो नमोऽस्तु सिर टेक॥
ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥
ऋजुमति मनपर्यय मिला, मिटा कष्ट अतिरेक।
अरहनाथ दें लक्ष्य सो, हो नमोऽस्तु सिर टेक॥
ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥
ज्ञान विपुलमति ऋद्धि से, आतम एकम-एक।
अरहनाथ दें लक्ष्य सो, हो नमोऽस्तु सिर टेक॥
ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥
दसपूर्वों के ज्ञान से, विश्व भजे सिरटेक।
अरहनाथ दें लक्ष्य सो, हो नमोऽस्तु सिर टेक॥
ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥
चौदह पूर्व विधान से, लिखे मोक्ष आलेख।
अरहनाथ दें लक्ष्य सो, हो नमोऽस्तु सिर टेक॥
ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

(शुद्ध गीता)

निमित-अष्टांग की नैया, बना दे मोक्ष की धामी।
करो अरनाथ जी करुणा, नमोऽस्तु हो तुम्हें स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥
मिली ऋद्धि-विक्रिया सो, बने अध्यात्म के ध्यानी।
करो अरनाथ जी करुणा, नमोऽस्तु हो तुम्हें स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

मनुज विद्या धरे संयम, बने मुक्ति के आसामी।
करो अरनाथ जी करुणा, नमोऽस्तु हो तुम्हें स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

जिन्हें चारण मिली ऋद्धि, बने चैतन्य के धामी।
करो अरनाथ जी करुणा, नमोऽस्तु हो तुम्हें स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

बने प्रज्ञा श्रमणसागर, वही परमात्म विज्ञानी।
करो अरनाथ जी करुणा, नमोऽस्तु हो तुम्हें स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

विहारी जो कमल नभ के, वही हैं भेद विज्ञानी।
करो अरनाथ जी करुणा, नमोऽस्तु हो तुम्हें स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

मिली आशीर्विष ऋद्धि, वही है नाथ कल्याणी।
करो अरनाथ जी करुणा, नमोऽस्तु हो तुम्हें स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

मिली दृष्टिर्विष ऋद्धि, वही सर्वज्ञ हैं स्वामी।
करो अरनाथ जी करुणा, नमोऽस्तु हो तुम्हें स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(हाकलिका)

उग्र तपस्या संत करें, सदा सदा जयवंत रहें।
अरहनाथ को नमो-नमो, करके नमोऽस्तु स्वस्थ बनो॥
ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

दीप्ततपों की सेवाएँ, देकर संत मोक्ष पाएँ।
अरहनाथ को नमो-नमो, करके नमोऽस्तु स्वस्थ बनो॥
ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥

तप्ततपों की मालाएँ, ऋषियों की खुशबू लाएँ।
अरहनाथ को नमो-नमो, करके नमोऽस्तु स्वस्थ बनो॥
ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

महातपों के अंगारे, शीतलता देते प्यारे।
अरहनाथ को नमो-नमो, करके नमोऽस्तु स्वस्थ बनो॥
ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

घोरतपों की महिमाएँ, ज्ञान घटाएँ बरसाएँ।
अरहनाथ को नमो-नमो, करके नमोऽस्तु स्वस्थ बनो॥
ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

घोरगुणों के भण्डारी, धर्म बाग की दें क्यारी।
अरहनाथ को नमो-नमो, करके नमोऽस्तु स्वस्थ बनो॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(चौपाई)

घोरपराक्रम ऋद्धि विजेता, मोक्षमार्ग के सम्यक् नेता।
अरहनाथ प्रभु सुनके नमोऽस्तु, दो आशीष कहो शुभमस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

घोरब्रह्मगुण ऋद्धि साधकर, त्याग दिया भव कर्म बाँधकर।
अरहनाथ प्रभु सुनके नमोऽस्तु, दो आशीष कहो शुभमस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

मिली जिन्हें आमर्ष-औषधी, करें कराएँ साधु समाधि।
अरहनाथ प्रभु सुनके नमोऽस्तु, दो आशीष कहो शुभमस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

खेल्ल-औषधी खेल न होती, जैन धर्म के हीरे मोती।
अरहनाथ प्रभु सुनके नमोऽस्तु, दो आशीष कहो शुभमस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

जो समझे हैं जल्ल-औषधी, पाएँ जीवन भर समृद्धि।
अरहनाथ प्रभु सुनके नमोऽस्तु, दो आशीष कहो शुभमस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

जिन्हें औषधी-विप्रुष भायी, उन्हें देख मुक्ति शर्मायी।
अरहनाथ प्रभु सुनके नमोऽस्तु, दो आशीष कहो शुभमस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

(सखी)

जो सर्व-औषधी पाएँ, वह सब को स्वस्थ बनाएँ।
दो अरहनाथ वह वस्तु, हम सादर करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

जो आत्म मनोबल पाए, वो पाप व्यसन नशवाए।
दो अरहनाथ वह वस्तु, हम सादर करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

जो वचनबली की वाणी, वह भक्तों की कल्याणी।
दो अरहनाथ वह वस्तु, हम सादर करें नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

कर्म काटकर बने केवली, कायबली आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

क्षार खार तज क्षमा धार कर, क्षीरस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

साहस धारी करें साधना, सर्पिस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

मोह मार कर धार महाव्रत, मधुरस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

अमृतस्रावि विषय विषों को, त्याग बने आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

पा अक्षीण-महानस-आलय, निज रम लो आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

वर्धमान चारित्र बनाता, तीर्थंकर आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

मोक्ष महल दे सिद्ध-आयतन, मुक्तिवधू आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

जिनशासन के पता पताका, नग्न साधु आहा।
ओम् ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप श्री अरनाथ अपने नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

अरहनाथ स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अरनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

परम पूज्य अरनाथ जो, हैं सप्तम चक्रेश।
चौदहवे रतिनाथ हैं, अष्टदशम् तीर्थेश॥
त्रिजग-ईश त्रय कर्म हर, भव-सागर के पार।
जय-जय की जयमालिका, कहें त्रियोग सँभार॥

(ज्ञानोदय)

जय-जय श्री अरनाथ जिनेश्वर, आप सर्वगुण सुन्दर हैं।
पर भावों में अतः फसे ना, बन गए पूर्ण दिगम्बर हैं॥
षट्-खण्डों के रहे विजेता, फिर भी नित्य निरम्बर हैं।
इसीलिए तो चरण शरण में, झुकते धरती अम्बर हैं॥ १॥
इनके दर्शन-भर करने से, उर में निर्मलता आती।
पूजन से सब पातक कटते, पुण्य-आवली शर्माती॥
चिंतन मनन ध्यान जप-तप से, निज स्वभाव सा झलक रहा।
तभी आपके गुणगाने को, हृदय हमारा ललक रहा॥ २॥
ज्ञानी ध्यानी सुर विद्याएँ, कह न सके कवि पण्डित जो।
उनके गुण हम क्या गाएंगे, आप स्वयं में मण्डित जो॥
फिर भी जहाँ सूर्य ना जाता, वहाँ दीप क्या जलें नहीं?
बच्चे बाहें फैलाकर क्या, सागर का जल कहें नहीं?॥ ३॥

पिछले भव में धनपति राजा, तीर्थंकरप्रकृति बाँधें।
गए स्वर्ग संन्यासमरण कर, मनुज बने जब सुर त्यागें॥
गर्भ जन्म का पर्व सुदर्शन, राजा रानी पाए थे।
स्वर्ग-सुखों को त्याग-त्यागकर, देव पर्व में आए थे॥ ४॥
चौदह रत्न नवो निधि भोगी, पर देखा जब मेघ विलय।
आत्मज्ञान वैराग्य हुआ तब, लौकान्तिक बोले जय-जय॥
राज्य दिया अरविन्द पुत्र को, स्वयं वैजयंती से जा।
लिए सहेतुक वन में दीक्षा, चौथा ज्ञान तुरत उपजा॥ ५॥
चक्रपुरी नृप अपराजित के, हुई पारणा दीक्षा की।
आम्र तरू-तल बने केवली, जगह वही थी दीक्षा की॥
बारह भरी सभाएँ जिनको, तत्त्वज्ञान अरनाथ दिए।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, महामोक्ष प्रभु प्राप्त किए॥ ६॥
किया धर्म-पुरुषार्थ तभी तो, तीन-तीन पद अपनाये।
किया काम-पुरुषार्थ तभी तो, पुत्र रत्न निज घर आए॥
किया अर्थ-पुरुषार्थ तभी तो, चक्र रत्न खुद प्रकटाए।
किया मोक्ष-पुरुषार्थ तभी तो, सिद्धचक्र अर प्रभु पाए॥ ७॥
कामदेव का जन्म हुआ पर, काम-देव ना जन्म सका।
चक्री के उस चक्ररत्न का, जिन पर चलकर चल न सका॥
तीर्थंकर ने कर्म-चक्र की, चुन-चुन कर चटनी बाँटी।
विधि चोटी पर चोट लगाकर, चढ़े मोक्ष की प्रभु घाटी॥ ८॥
जिनका नाम अकेला सुनकर, निधियाँ रत्न चक्र दौड़ें।
उनका नाम कहो बुध ग्रह में, सीमित करके क्यों जोड़ें ?
पाप शत्रु का मान मरोड़े, राज-रसोड़े जो छोड़े।

राज-रमा घट-दासी जैसी, चक्ररत्न घट-सा छोड़े॥ ९॥
इसी तीर्थ में सुभौम चक्री, नन्दिषेण बलभद्र हुए।
पुण्डरीक छठवे नारायण, प्रतिनारायण निशुम्भ हुए॥
ऐसे श्री अरनाथ देव से, एक प्रार्थना बस यह हो।
रत्नत्रय से मुक्तिवधू से, चट मँगनी पट विवाह हो॥ १०॥
किया नमोऽस्तु यदि जिनवर को, बिन मन से बिन समझे में।
उतना फल तो अन्य जगह पर, मिल न सकेगा जीवन में॥
फिर 'सुव्रत' ने त्रियोग पूर्वक, किए नमोऽस्तु चरण भजे।
दिवस दशहरा रात दिवाली, फिर क्या ना हो मजे-मजे॥ ११॥

(सोरठा)

चरण शरण में मीन, चिह्न सदा ही शोभता।
जो हैं कमलासीन, उन्हें जगत् नित खोजता॥

वो हैं अर जिनराज, जो शुद्धातम सुख भरें।
उन्हें नमोऽस्तु आज, हम पर भी करुणा करें॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

अरहनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, अरहनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री अरहनाथ का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
१. श्री अरहनाथ वैभव धारी, सो मोहित जिन पर नर नारी।
हैं कामदेव चक्री तीर्थंकर स्वामी, बस कर दो ज्ञानी ध्यानी॥श्री..
२. जो हस्तिनागपुर जन्म लिए, सम्मेदशिखर से मोक्ष गए।
जो रहे सुदर्शन मित्रा माँ के लाला, कर लिए मुक्ति वरमाला ॥श्री..
३. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..
४. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
१. अरहनाथ मुक्ति के गहने, सुंदर-सुंदर नाथ सलोने।-२
षट्खण्डों के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
२. सुदर्शन नृप के राजदुलारे, मित्रा माँ के नयन सितारे।-२
हस्तिनापुर अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. तीन-तीन पदवी के धारी, देखे मेघ बने अनगारी।-२
नाटक कूट विराजे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ-२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

श्री मल्लिनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर, मल्लिनाथ जी दूजे।
सोने जैसे कलश चिह्नमय, भगवन दुनियाँ पूजे॥
मिथिलापुर में मल्लिनाथ जी, जन्मे श्री भगवन जी।
कुंभराज वा प्रभावती के, अठमासी नंदन जी॥ ओम्...
२. बिजली चमक देख वैरागे, मुनि दीक्षा श्रृंगारे॥
अशोक तरु तल हो जिन ज्ञानी, समवसरण स्वीकारे।
संवर कूट त्याग पद्मासन, सम्मेदाचल त्यागे।
मोक्ष गए सो करें नमोऽस्तु, 'सुव्रत' विद्या जागे॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
मल्लिनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री मल्लिनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

होकर जो आत्मस्थ भी, रहें चराचर व्याप्त।
दृष्टा हर व्यापार के, फिर भी निःसंग आप्त॥
ऐसे मल्लिनाथ प्रभु, दूजे बाल यतीश।
पुराण पुरुष परमेश को, सविनय टेकें शीश॥

(लय : जीवन है पानी की बूँद...)

मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]
द्रव्यों की थाली (हाँ-हाँ)[२], हम आज सजाए रे॥

नाथ! आप सब देखो पर, कौन आपको देख सके।
नाथ! आप सब जानो पर, कौन आपको जान सके॥
अतः आपकी खुद महिमा, हम भक्तों से तो न हुई।
सो दर्शन पूजा वाली, अन्तस्-भाव वर्गणा हुई॥
काल अनन्त व्यर्थ खोया, पर-तत्परता लौ लागी।
किन्तु आपके दर्शन से वीतरागता सी जागी॥
पूजन में आओ! (हाँ-हाँ)२, हम भक्त बुलाएँ रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।२

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

इतने जन्म लिए हमने, पर सम्यक् न जन्म सके।
इतने मरण किए हमने, लेकिन सम्यक् मर न सके॥
जन्म-मरण प्रभु के जैसे, करके शुद्धातम पाएँ।
अतः भक्ति श्रद्धा जल ले, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
जीना अरु मरना, (हाँ-हाँ)२, हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।२

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

खस चंदन से अतिशीतल, कुछ भी मिल ना पाएंगे।
देह ताप को किन्तु वही, और अधिक धधकाएंगे॥
अतः आप सम त्याग इन्हें, समता निज रस को पाएँ।
अतः समर्पित चंदन कर, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
जलना भव तपना (हाँ-हाँ)२, हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।२

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

सकल विश्व हम जान रहे, पर निज से अनजान रहे।
अक्षयपुरवासी होकर, नश्वर अपना मान रहे॥
हमें भेद-विज्ञान मिले, सिद्ध क्षेत्र प्रभु सा पाएँ।
अतः समर्पित अक्षत कर, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
तृष्णा भव मूर्च्छा (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

कैसे आप विरागी हो, कैसे पर के त्यागी हो।
बनकर बालब्रह्मचारी, मुक्तिवधू के रागी हो॥
कालजयी, हे! कामजयी, तुम पर हम भी ललचाएँ।
अतः समर्पित पुष्प करें, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
पर की आसक्ति (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

पर-रस सरस अरस हों पर, आतम सदा रसीला हो।
जले गले ना सड़े कभी, रात्रि त्याग ना इसका हो॥
रस त्यागी निज के रसिया, कैसे तुमको हम पाएँ।
अतः भेंट नैवेद्य करें, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
काया भव व्याधि (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

नाथ! आपकी निज ज्योति, हम भक्तों से ना होती।
सूरज चंदा की ज्योति, दीप ज्योति से क्या? होती॥
केवल तुम्हें निरख कर हम, अपने नयन सफल पाएँ।
अतः आरती दीप जला, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥

मोही भव गलियाँ (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

अच्छा बुरा करो कुछ भी, कुछ तो लोग कहेंगे ही।
त्याग तपस्या अतः करो, लोग विरोध करेंगे ही॥
करो साधना चुपके से, शोर आप खुद हो जाएँ।
अतः सुगंधी खेकर हम, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
कर्मों के शत्रु (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

सुख-दुख की परवाह न की,निज-कर्त्तव्य निभाए तुम।
लाख आँधियों संकट में, पथ से चिग ना पाए तुम॥
उपादान को निमित्त से, तुम सम हम भी प्रकटाएँ।
अतः भेट फल निजफल को, करें नमोऽस्तु गुण गाएँ॥
सुख-दुख भव पीड़ा (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

भक्ति नमोऽस्तु पूजन में, झुकना धर्म सिखाता है।
झुका-झुकाकर भक्तों को, स्वयं उच्च कहलाता है॥
जो झुकते वे उठते हैं, बिना झुके क्या उठ पाएँ।
अतः मोक्ष तक उठने को, भक्त अर्घ्य ले झुक जाएँ॥
दूरी-मजबूरी (हाँ-हाँ)[२], हम हरने आए रे...।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाए रे।[२]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

चैत्र शुक्ल एकम् पुजी, जब तज स्वर्ग विमान।
प्रभावती के गर्भ में, वसे मल्लि भगवान॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, जन्मे मल्लि जिनन्द।
कुम्भराज गृह राज्य में, शोर-बुलौआ-नन्द॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

चंचल बिजली की चमक, जन्म तिथी में देख।
मल्लिप्रभु दीक्षित हुए, जिन्हें नमन सिर टेक॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण की दूज में, पाए प्रभु कैवल्य।
मल्लिप्रभु तीर्थेश को, नमन हरे अब शल्य॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पाँचें फागुन शुक्ल में, मोक्ष मल्लिप्रभु पाए।
शाश्वत संबलकूट को, हम तो शीश झुकाए॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लपंचम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ॠद्धि विधान अर्घ्यावली

(अर्द्ध अडिल्ल)

कर्म इन्द्रियाँ जयकर जिनवर जो बने।
मल्लिनाथ को अपने नमोऽस्तु हों घने॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१॥

अवधिज्ञानी ऋषिवर स्वामी जो बने।
मल्लिनाथ को अपने नमोऽस्तु हों घने॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि के परमेष्ठी प्रभु जो बने।
मल्लिनाथ को अपने नमोऽस्तु हों घने॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि सर्वज्ञ जिनेश्वर जो बने।
मल्लिनाथ को अपने नमोऽस्तु हों घने॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

अनन्तावधि अरिहंत जिनेश्वर जो बने।
मल्लिनाथ को अपने नमोऽस्तु हों घने॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

कोष्टबुद्धि से केवलज्ञानी जो बने।
मल्लिनाथ को अपने नमोऽस्तु हों घने॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

बीजबुद्धि से वीतराग प्रभु जो बने।
मल्लिनाथ को अपने नमोऽस्तु हों घने॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी से परमातम जो बने।
मल्लिनाथ को अपने नमोऽस्तु हों घने॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

(चौपाई)

गुण संभिन्नश्रोतृ को धरकर, गए महात्मा जगत त्याग कर
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, मल्लिनाथ जी कहो तथाऽस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

स्वयंबुद्ध की साध साधना, पूरी करते भक्त भावना।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, मल्लिनाथ जी कहो तथाऽस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

जो प्रत्येकबुद्ध के वीरा, सचमुच हैं आतम के हीरा।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, मल्लिनाथ जी कहो तथाऽस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

बोधितबुद्ध महा वैरागी, प्रीत उन्हीं से अपनी लागी।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, मल्लिनाथ जी कहो तथाऽस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

ऋजुमति ज्ञान मनःपर्यय को, पाने निकले निज आलय को।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, मल्लिनाथ जी कहो तथाऽस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय को, पा बैठे हैं मोक्ष निलय को।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, मल्लिनाथ जी कहो तथाऽस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

दसपूर्वों के पाठ भजन से, जुड़े चेतना होम हवन से।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, मल्लिनाथ जी कहो तथाऽस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

चौदहपूर्वों के वाहन से, मिल बैठे हैं निज साजन से।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, मल्लिनाथ जी कहो तथाऽस्तु॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

(दोहा)

ऋषि अष्टांग-निमित्त धर, हरें अशुभ संयोग।
मल्लिनाथ को नमोऽस्तु कर, बने सुखद संयोग॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

ऋद्धि-विक्रिया धारकर, हों चेतन के भोग।
मल्लिनाथ को नमोऽस्तु कर, बने सुखद संयोग॥
ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥
व्रत विद्याधर नर धरें, दूर करें भव रोग।
मल्लिनाथ को नमोऽस्तु कर, बने सुखद संयोग॥
ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥
चारणऋद्धि साधकर, बने मोक्ष की योग्य।
मल्लिनाथ को नमोऽस्तु कर, बने सुखद संयोग॥
ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥
प्रज्ञाश्रमण मुनींद्र ही, भजें जगत के लोग।
मल्लिनाथ को नमोऽस्तु कर, बने सुखद संयोग॥
ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥
नभचारण के यान से, ना हों इष्ट वियोग।
मल्लिनाथ को नमोऽस्तु कर, बने सुखद संयोग॥
ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥
आशीर्विष आशीष से, ना अनिष्ट संयोग।
मल्लिनाथ को नमोऽस्तु कर, बने सुखद संयोग॥
ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥
दृष्टिर्विष से दूरियाँ, दूर करें ऋषि लोग।
मल्लिनाथ को नमोऽस्तु कर, बने सुखद संयोग॥
ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(अर्द्ध ज्ञानोदय)

संत करें जो उग्र तपस्या, मंत्र मुक्ति के दान करें।
मल्लिनाथ को करके नमोऽस्तु, धर्मात्मा कल्याण करें॥
ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

दीप्ततपों के होम हवन को, देख देव गुणगान करें।
मल्लिनाथ को करके नमोऽस्तु, धर्मात्मा कल्याण करें॥
ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥

तप्ततपों के तेज ताप से, कर्म बाग वीरान करें।
मल्लिनाथ को करके नमोऽस्तु, धर्मात्मा कल्याण करें॥
ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

महातपों की महानता से, मौन शक्ति सम्मान करें।
मल्लिनाथ को करके नमोऽस्तु, धर्मात्मा कल्याण करें॥
ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

घोरतपों की घोर घटाएँ, भक्तों को आसान करें।
मल्लिनाथ को करके नमोऽस्तु, धर्मात्मा कल्याण करें॥
ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

घोरगुणों के ज्ञाता दृष्टा, निज में केवलज्ञान करें।
मल्लिनाथ को करके नमोऽस्तु, धर्मात्मा कल्याण करें॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(अर्द्ध जिनगीतिका)

जो घोर ऋद्धि धर पराक्रम, धर्म के ज्ञाता बने।
वो मल्लिनाथ जिनेन्द्र अपने, लाड़ले नेता बने॥
ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

जो ब्रह्मगुण की घोर ऋद्धि, साधकर साधु बने।
वो मल्लिनाथ जिनेन्द्र अपने, लाड़ले नेता बने॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

आमर्ष-औषध ऋद्धि से जो, केवली कुंदन बने।
वो मल्लिनाथ जिनेन्द्र अपने, लाड़ले नेता बने॥
ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

जो खेल्ल गुण की औषधी से, रोग की औषध बने।
वो मल्लिनाथ जिनेन्द्र अपने, लाड़ले नेता बने॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

जो जल्ल-औषध के जतन से, जंतुओं के सुख बने।
वो मल्लिनाथ जिनेन्द्र अपने, लाड़ले नेता बने॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

गुण औषधी विप्रुष जिन्होंने, प्राप्त की वो शिव बने।
वो मल्लिनाथ जिनेन्द्र अपने, लाड़ले नेता बने॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

(हाकलिका)

सर्व-औषधी के धारी, वीतराग जी हितकारी।
मल्लिनाथ को नमो-नमो, करके नमोऽस्तु ब्रह्म रमो॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

आत्म मनोबल के द्वारा, किया पराजित जग सारा।
मल्लिनाथ को नमो-नमो, करके नमोऽस्तु ब्रह्म रमो॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

सिद्ध वचनबल करते जो, मुक्ति स्वयंवर रचते वो।
मल्लिनाथ को नमो-नमो, करके नमोऽस्तु ब्रह्म रमो॥

ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

कर्म देह तज बने केवली, कायबली आहा।
ओम् ह्रीं मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

क्षमा गुणों के पहने गहने, क्षीरस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

सर्पिस्त्रावि के श्रृंगारों से, सुंदर हों आहा।
ओम् ह्रीं मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥
मधुरस्त्रावि की महिमाओं से, मोह हरें आहा।
ओम् ह्रीं मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥
अमृतस्त्रावि की आभा से, निज चमके आहा।
ओम् ह्रीं मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥
अक्षीण-महानस-आलय, मिले भवन आहा।
ओम् ह्रीं मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥
तीर्थंकर चारित्र बनाता, वर्धमान आहा।
ओम् ह्रीं मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥
सिद्ध आयतन मुक्तिवधू दे, सिद्धालय आहा।
ओम् ह्रीं मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥
जिनशासन की ध्वज फहराते, श्रमण साधु आहा।
ओम् ह्रीं मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप जिनवर, स्वामि मल्लिनाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥

सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

मल्लिनाथ स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

जग में पूज्य विशेष हैं, मल्लिनाथ योगीश।
जयमाला के नाम से, मिले हमें आशीष॥
कर्म-शरण संसार दे, धर्म-शरण दे तार।
पाने शरण विशेष अब, आए प्रभु के द्वार॥

(ज्ञानोदय)

ज्यों विशाल-तन गज-झुण्डों पर, एक शेर बस कर ले जय।
जैसे घोर अँधेरे को भी, लघु दीपक ही कर दे क्षय॥
नाग-पाश ज्यों मोर-कूक से, ढीले पड़कर हुए विलय।
मल्लिप्रभु त्यों मोह-मल्ल की, शल्य हरें सो बोलो जय॥ १॥
एक वैश्रवण राजा देखे, जब बरगद का पेड़ गिरा।
जब इतना मजबूत गिरा तो, अपना तो हो हाल बुरा॥
इसी दृश्य से हो वैरागी, राज रमा जग छोड़ गए।
मुनि बन तीर्थंकरप्रकृति धर, कर सल्लेखन स्वर्ग गए॥ २॥
स्वर्ग त्याग मिथिला नगरी के, राजा कुम्भ बड़े प्यारे।

जिनकी प्रजावती रानी को, देकर स्वप्न जन्म धारे॥
गर्भ जन्म कल्याणक विधि से, मल्लिनाथ यह नाम रखा।
सौ वर्षों का कुमारकाल जब, बीता तो सब नगर सजा॥ ३॥
तभी याद आई स्वर्गों की, कहाँ त्याग का फल पावन।
और कहाँ यह लज्जादायक, बिडम्बना विवाह बन्धन॥
ऐसे विवाह की निन्दा कर, दीक्षा का उद्योग किया।
तब लौकान्तिक देवों ने आ, अनुमोदन सहयोग किया॥ ४॥
अहो! अहो! कौमार्य दशा में, नर-इन्द्रों को जो दुष्कर।
वही विषय तज चले श्वेत-वन, बैठ जयन्त पालकी पर॥
'प्रशान्त रूपाय दिगम्बराय' को, धरा 'नमः सिद्धेभ्यः' कह।
हुई पारणा मिथिलानगरी, नंदिषेण राजा के गृह॥ ५॥
बस छह दिन छद्मस्थ बिताकर, अशोक तरु-तल थित होकर।
बेला कर, हर घाति-कर्म को, बने केवली तीर्थंकर॥
अट्ठाईस गणधर से शोभित, समवसरण में दिशा दिए।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, मोक्ष स्वयं को दिला दिए॥ ६॥
जनम-मरण की जहाँ तरंगें, भँवरे इच्छा की रखता।
भवसागर दुख जल से पूरित, मिथ्या चंदा से बढ़ता॥
मल्लिप्रभु ने देह रूप इस, मगरमच्छ को तज करके।
ध्यान नाव से भवसागर को, तैरा मोक्ष प्राप्त करके॥ ७॥
तब ही पद्म चक्रवर्ती अरु, नन्दिमित्र बलदेव हुए।
तब बलीन्द्र प्रतिनारायण भी, नारायण तब दत्त हुए॥
जिनका नाम मोह ग्रह हर ले, फिर क्या बात केतु ग्रह की।
अतः नमोऽस्तु मल्लिनाथ को, जो दें राह मोक्षगृह की॥ ८॥

धर्मोदय के तप-मधुवन के, आप रहे तोता-मिट्ठू।
काव्य कला के नन्दनवन के, आप रहे कोकिल किट्टू॥
चरित-मल्लिका के तुम भँवरे, पुण्य कमल सरवर हंसा।
तुम्हें पूजकर निज-भूषण हो, हम भक्तों की यह मंसा॥ ९॥
स्वर्ग मोक्ष सुख के इच्छुक जन, सब वास्तव में दुखी रहें।
मल्लिप्रभु बिन ज्ञानी ध्यानी, कौन तपस्वी सुखी रहें॥
किन्तु भक्त जो मल्लि प्रभु के, वचन सुनें चारित्र धरें।
स्वर्ग मोक्ष यूँ ही पाते वे, जीवन आत्म पवित्र करें॥ १०॥
अतः आपसे एक प्रार्थना, हम भक्तों की है स्वामी।
सोकर उठें आँख जब खोलें, तो दर्शन देना स्वामी॥
सब मंगल में पहला मंगल, जिन-दर्शन स्वीकारा है।
सर्व सिद्धि 'सुव्रत' की होगी, यदि सान्निध्य तुम्हारा है॥ ११॥

(सोरठा)

कलश चरण में चिह्न, मल्लिनाथ प्रभु नाम है।
आतम मिले अभिन्न, इससे सदा प्रणाम है॥
हे निर्मोही! आप्त, करो एक हम पर नजर।
दुख गम करो समाप्त, कालसर्प-भवयोग हर॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

मल्लिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, मल्लिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री मल्लिनाथ का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
१. श्री मल्लिनाथ अठमासी जी, बन बैठे हैं संन्यासी जी।
हैं बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर स्वामी, सो दुनियाँ करे नमामि॥श्री..
२. जो मिथिलापुर में जन्म लिए, सम्मेदशिखर से मोक्ष गए।
जो कुंभराज माँ प्रभावती के लाला, जो दिए धर्म सुख प्याला ॥श्री..
३. प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता हैं, संसार मोक्षसुख कर्त्ता हैं।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥श्री..
४. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..
५. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
१. कुंभराज के राजदुलारे, प्रभावती के नयन सितारे।-२
मिथिलापुर अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
२. बाल ब्रह्मचारी पदधारी, बिजली देख बने अनगारी।-२
संवरकूट विराजे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ-२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

श्री मुनिसुव्रतनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४

१. वर्तमान चौबीसी में मुनि-सुव्रतनाथ निराले।
मन के गोरे तन के काले, संकट हरने वाले॥
भय दुख संकट शनिश्चरों से, ये दुनियाँ घबराई।
मिले नहीं संकटमोचक सो, याद आपकी आई॥ ओम्...

२. कुशाग्रपुर के सुमित्र सोमा, पुत्र जगत कल्याणी।
याद जन्म कर संत बने फिर, चंपक तरु तल ध्यानी॥
समवसरण को त्याग विराजे, निर्जर कूट जिनंदा।
मोक्ष गए सम्मेदशिखर से, 'सुव्रत' के आनंदा॥ ओम्...

३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
सुव्रत प्रभु को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

मुनिसुव्रत भगवान् की, महिमा के कुछ बोल।
गाने को उद्यत हुए, मन की अखियाँ खोल॥

(शंभु)

हे मुनिसुव्रत ! हे मुनिसुव्रत, हे मुनिसुव्रत ! जिनराज ! अहा!
हे संकटमोचन ! जगलोचन !, हे भविभूषण ! सिरताज! महा॥
बस नाम आपका लेने से, हम भक्तों के संकट टलते।

फिर मन मंदिर में प्रेम दया के, फूल खिलें दीपक जलते॥
कुछ पाप घटे कुछ पुण्य बढ़े, सो भक्तों की आई टोली।
कर दर्शन पूजन खुशी-खुशी, हो जिनवर की जय-जय बोली॥
हम यथा-शक्ति से द्रव्य लिए, कुछ भाव-भक्तिमय शब्द लिए।
हम तुम्हें पुकारें हे भगवन्!, अब आओ! आओ! भव्य हिये॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

जनम हमारा जब होता तब, हम रोते पर सब हँसते।
गर सुधरा फिर जरा-मरण तो, सब रोते पर हम हँसते॥
जनम जरा वा मरण नशाने, प्रासुक जल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं ...।

मौसम या सूरज का तपना, कभी-कभी तो रुच जाए।
पर मन का संताप जीव को, सदा-सदा ही झुलसाए॥
भव-भव का संताप नशाने, यह चंदन स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं ...।

कहीं-कहीं सम्मान मिले पर, कहीं-कहीं अपमान मिले।
आपाधापी की दुनियाँ में, किस्मत से जिनधाम मिले॥
पद की सम्पद आपद हरने, ये तंदुल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ...।

नासा का आकार फूल सा, सौरभ पाने ललचाए।
जिससे आतम पापी बनती, काम व्यथा यों तड़फाये॥

काम, विवादों की जड़ हरने, पुष्प गुच्छ स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

मरें भूख से कम प्राणी पर, खा-खा के मरते ज्यादा।
फिर भी खाने को सब दौड़ें, मरे भूख का ना दादा॥
क्षुधारोग आतंक हरण को, नैवेद्यक स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ...।

सूर्य हजारों किरणों वाला, महामोह तम हर न सके।
नाथ! आपकी एक किरण से, नशे वही कुछ कर न सके॥
मोह हरण को मिले उजाला, भक्ति दीप स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ...।

सोने की संगत से कपड़े, मूल्यवान यशवान हुए।
तो फिर भक्त आपके बनकर, क्या? अपने ना काम हुए॥
अष्ट कर्म कालिख हरने को, धूप गंध स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ -जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ...।

अरे! फलों से लदे पेड़ तो, धरती पर नत-मस्तक हों।
वैसे नाथ! आपको नमकर, भक्त आपके उन्नत हों॥
उन्नत होकर मोक्ष प्राप्ति को, प्रासुक फल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ...।

नीर भाव वंदन चंदन है, अक्षत पुंज पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप आशा का, धूप प्रीत की फल मुक्ति॥

ऐसा अर्घ्य-अनर्घपदक को, दिलवाने स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

श्रावण दूजा कृष्ण को, तज प्राणत सुर इन्द्र।
सोमा माँ के गर्भ में, आए सुव्रत नंद॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

वैशाख कृष्ण दशमी तिथि, जन्मे सुव्रतनाथ।
सुमित्रनृप के आँगने, सुर नर नाँचे साथ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

दशमी वदि वैशाख को, परिग्रह का गृह छोड़।
मुनिसुव्रत तप से सजे, सो नमोऽस्तु कर जोड़॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नवी कृष्ण वैशाख को, हर ली संकट रात।
भज चाहें कैवल्य हम, जय मुनिसुव्रत नाथ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

फागुन द्वादश कृष्ण को, इक हजार मुनि साथ।
मोक्ष गये सम्मेद से, नमोऽस्तु सुव्रतनाथ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ॠद्धि विधान अर्घ्यावली

(लघु चौपाई)

कर्म इन्द्रियाँ करके अंत, जिनवर बने प्रभु अरिहंत।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥
ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १॥

अवधिज्ञान का पा आलोक, हरें जगत के सारे शोक।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥
ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि का मिला प्रकाश, परमातम में किए निवास।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥
ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि का पाकर सार, किए स्वस्थ सारा संसार।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

अनन्तावधि का पा आधार, हुए पार पहुँचाओ पार।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥
ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

कोष्टबुद्धि का पाकर ज्ञान, स्वामी रखें सभी का ध्यान।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥
ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

बीजबुद्धि की करके खोज, सुख-धन बाँटो सबको रोज।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥
ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी चलकर पंथ, स्वामी करो हमें निर्ग्रंथ।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥
ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

संभिन्नश्रोतृ देकर गीत, पक्की करो हमारी जीत।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

(सखी)

हे! स्वयंबुद्ध वैरागी, दुख हरो हमारे त्यागी।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

प्रत्येकबुद्ध संन्यासी, हम चरण-शरण के वासी।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

हे! बोधितबुद्ध निरंजन, प्रभु दूर करो आक्रन्दन।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

ऋजुमति मनःपर्यय पाए, सो मन में आप समाए।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१३॥

मनःपर्यय विपुलमति को, प्रकटाए निज शक्ति को।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

दसपूर्व ज्ञान के धारी, कब दोगे मुक्ति सवारी।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

चौदहपूर्वों के ज्ञानी, कर दो हमको विज्ञानी।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

अष्टांग-निमित्त निखारे, सो हमने चरण पखारे।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

गुण अणिमा आदि सँभारे, सो सबको मिले किनारे।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमोविउव्वणपत्ताणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

(जोगीरासा)

विद्याधर नर त्याग असंयम, संत बने अनगारी।
संयम धारी मुक्तिवधू के, पूज्य बने अधिकारी॥
विद्याधर मुनियों के स्वामी, सबके कष्ट मिटाएँ।
हम तो सादर करके नमोऽस्तु, मुनिसुव्रत को ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

चारण-ऋद्धि प्रकटा के मुनि, जग को स्वस्थ बनाएँ।
जहाँ चरण धरती पर रख दें, चारण मंत्र सिखाएँ॥
चारण ऋद्धि ऋषियों के प्रभु, हमको पार लगाएँ।
हम तो सादर करके नमोऽस्तु, मुनिसुव्रत को ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२०॥

आगम पढ़े बिना हों ज्ञानी, प्रज्ञाश्रमण मुनिंदा।
मंदबुद्धि के दोष नशाएँ, देते ज्ञान चुनिंदा॥
व्यसन पाप अज्ञान बुराई, जग से पूर्ण मिटाएँ।
हम तो सादर करके नमोऽस्तु, मुनिसुव्रत को ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

(हाकलिका)

जो आकाशगमन करते, दया प्राणियों पर करते।
मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

आशीर्विष को जो धारें, किन्तु जीव न वो मारें।
मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

दृष्टिर्विष को जो धारें, हम भक्तों को वो तारें।
मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

उग्रतपों के जो धारी, कर्मों के हैं संहारी।
मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

दीप्ततपों के जो धारी, सबको देते दीवाली।
मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥

तप्ततपों के जो धारी, देते ऊर्जा हितकारी।
मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

महातपों के जो धारी, मंगलमय मंगलकारी।
मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

घोरतपों के जो धारी, करें तपस्याएँ न्यारी।
मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

घोरगुणों के जो धारी, व्यसन बुराई हर्तारी।
मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(शुद्ध गीता)

पराक्रम घोर बल पाकर, लगाते ना बुराई में।
करें कल्याण जीवों के, लगाते मन भलाई में॥
सभी के लाड़ले सुव्रत, रखो कुछ ध्यान भक्तों का।
करें हम भी नमोऽस्तु तो, करो कल्याण हम सबका॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

पराक्रम ब्रह्म अघोर गुण से, जिन्होंने कष्ट टाले हैं।
सभी को बाँटते संबल, उन्हीं के हम हवाले हैं॥
सभी के लाड़ले सुव्रत, रखो कुछ ध्यान भक्तों का।
करें हम भी नमोऽस्तु तो, करो कल्याण हम सबका॥

ॐ ह्रीं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

धरें आमर्ष-औषध जो, उन्हें करुणा सुहाती है।
कभी न मारते प्राणी, दया सबको लुभाती है॥
सभी के लाड़ले सुव्रत, रखो कुछ ध्यान भक्तों का।
करें हम भी नमोऽस्तु तो, करो कल्याण हम सबका॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

(दोहा)

खेल्ल-औषधि धारके, हरते रोग तमाम।
सुव्रत सबके लाड़ले, हम सबके भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

जल्ल-औषधि धारके, करके स्वस्थ जहान।
सुव्रत सबके लाड़ले, हम सबके भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

विप्रुष-औषधि धारके, हरें मैल अज्ञान।
सुव्रत सबके लाड़ले, हम सबके भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

सर्व-औषधि धारके, सुखी करें तन प्राण।
सुव्रत सबके लाड़ले, हम सबके भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

मुहूर्त में चिंतन करें, बिना थके श्रुतज्ञान।
सुव्रत सबके लाड़ले, हम सबके भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

मुहूर्त में वाचन करें, बिना थके श्रुतज्ञान।
सुव्रत सबके लाड़ले, हम सबके भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो वचिबलीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(विष्णु)

उत्तम संहनन कायबली ने, मुक्तिवधू हेतु।
कायोत्सर्ग धार कर त्यागे, पापों के सेतु॥
संयम योग्य कायबल पाने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

पाणिपात्र का भोजन तप से, होता क्षीर समान।
त्याग तपस्या की यह महिमा, ऋषियों का वरदान॥
क्षीर स्रावियों ऋषिगण को तो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

कर-पात्रों का भोजन तप से, होता जैसे घी।
सुव्रत संयम की यह महिमा, सबको भाये जी॥
सर्पिस्रावी ऋषिगण को तो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

कड़वा-कड़वा भोजन तप से, होता मधुर समान।
महाव्रतों की मंगल-महिमा, दें चेतन रसपान॥
मधुस्रावी सब ऋषिगण को तो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

विष-जहरीला भोजन तप से, होता अमृत सा।
सकल चरित की पूजित महिमा, आतम स्वाद वसा॥
अमृतस्रावी ऋषिगण को तो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

शेष रहा ऋषि भोजन तप से, कटक पेट भर दे।
व्रत-चर्या की पावन महिमा, सबको निज घर दे॥
यह अक्षीण-माहनस-आलय, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

दोष त्याग के पूज्य गुणों का, आरोहण करते।
अपवादों से दूर जगत को, प्रभु क्षण-क्षण करते॥
वर्धमान चारित्र धारने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

ढाईद्वीप से सिद्धशिला तक, सिद्धक्षेत्र सारे।
भक्तों की ये सिद्ध-भक्तियाँ, आतम शृंगारे॥
ओम् णमो सिद्धाणं जप के, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

नग्न साधुओं से संचालित जिनशासन होता।
णमो लोए सव्वसाहूणं, मंत्र पाप खोता॥
पूज्य आर्ष मुनि परम्परा को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

तीर्थकरों के रूप सुव्रत, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

मुनिसुव्रत स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धि सम्पन्न श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

गुण गण के भण्डार हैं, मुनिसुव्रत भगवान्।
जयमाला के नाम हम, करते कुछ गुणगान॥

(सुविद्या)

भरतक्षेत्र के मगधदेश में, रहा राजगृह धाम।
उसमें सुमित्र नामक राजा, करें राज्य के काम॥
उनकी रानी बड़ी सुशीला, सोमा जिसका नाम।
उनको सोलह सपने देकर, आए श्री भगवान्॥ १॥
बीस धनुष की ऊँची काया, मोर कण्ठ सम नील।
सभी लक्षणों से शोभित थे, सुव्रतलाल सुशील॥

कुशल राज्य के संचालन में, एक मिला संयोग।
हाथी का वैराग्य देखकर, बनें विरागी योग॥ २॥
आत्मज्ञान पा तजे परिग्रह, बने निरम्बर नाथ।
एक हजार राज-राजा ने, दीक्षा ली थी साथ॥
चार ज्ञान के धारी भगवन्, पाए केवलज्ञान।
समवसरण में हुए सुशोभित,दिए मुक्ति का ज्ञान॥ ३॥
श्री सम्मेदशिखर पर जाकर, हजार मुनि के साथ।
प्रतिमायोग धार कर पाए, महा मोक्ष विख्यात॥
नाथ! आपकी नीली काया, करे मोह तम नाश।
वचन सूर्य की किरणें जग में, करतीं सदा प्रकाश॥ ४॥
आप रहे हरिवंश गगन के, निर्मल चन्दा रूप।
भव्य कुमुद को विकसित करते, दे दो हमें स्वरूप॥
नाथ! आप के तीर्थकाल में, चक्री था हरिषेण।
राम लखन रावण जन्मे थे, रामायण रूपेण॥ ५॥
कथा आपकी व्यथा नशाए, नाम करे सब काम।
फिर भी लोगों ने शनि ग्रह में, बाँध रखा प्रभु-नाम॥
मोह परिग्रह संकट बाधा, उसके होते नाश।
रोम-रोम में जिसके करते, 'सुव्रत' नाथ निवास ॥ ६॥

(दोहा)

आप गुणों के सिंधु हो, भक्ति हमारी नाँव।
हम क्या पावें पार तुम, पहुँचाओ शिव गाँव॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

मुनिसुव्रत स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, मुनिसुव्रत जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री मुनिसुव्रत का पाठ, करो दिन-रात, ठाठ से प्राणी,
हो मंगलमय कल्याणी।
१. श्री सुव्रतनाथ निराले हैं, प्रभु बाबा काले काले हैं।
हैं विघ्न विनाशक संकट मोचक ज्ञानी, प्रभु नाम जगत कल्याणी॥श्री..
२. श्री मुनिसुव्रत प्रभु अठमासी, हैं मोक्ष निवासी संन्यासी।
हैं नाशक मिथ्या तंत्र-मंत्र के स्वामी, सो हम तो करें नमामि॥श्री..
३. जो कुशाग्रपुर में जन्म लिए, सम्मेदशिखर से मोक्ष गए।
श्री सुमित्र राजा सोमा माँ के नंदन, हम करें अर्चना वंदन॥श्री..
४. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभुकी कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

(लय–छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
१. श्री मुनिसुव्रतनाथ हमारे, हम सबको प्राणों से प्यारे।
जग के हो उजयारे, बाबा करूँ आरतिया ॥ करूँ...
२. सुमित्र राज के राजदुलारे, सोमा माँ के नयन सितारे।-२
कुशाग्रपुर अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. नीले नीले खड्गासन से, मोक्ष गए सम्मेदशिखर से।-२
निर्जर कूट विराजे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ।
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

श्री नमिनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४

१. तीर्थंकर श्री नमिनाथ जी, इक्कीसवें जिनदेवा।
काम इक्कीसा करके स्वामी, किए स्वयं की सेवा॥
नमन करें सब देव तुम्हें तुम, हो देवों के देवा।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, मिले मुक्ति का मेवा॥ ओम्...

२. विजय वप्पिला माँ के नंदन, तपे हुए सोने से।
नीलकमल पहचान आपकी, लगते हो नौने से॥
गिरि सम्मेदशिखर से प्रभु जी, कूट मित्रधर पाके।
मोक्ष गए सो करें नमोऽस्तु, 'सुव्रत' विद्या ध्याके॥ ओम्...

३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
नमिनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री नमिनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

मंगलमय नमिनाथ हैं, करें सर्व उपकार।
आत्मज्ञान रस लीन हैं, भव-सागर के पार॥
जिनके चरण सरोज में, विनम्र चारों धाम।
तारण-तरण जहाज को, बारम्बार प्रणाम॥

(शंभु)

हे परम पूज्य नमिनाथ प्रभो! हे परमपूज्य जगनाथ प्रभो!
प्रभु लोक शिखर के तुम वासी, फिर भी घट-घट में वास करो॥

दुनियाँ के बन्धन टूट पड़े, जब नाम ध्यान में आता है।
दर्शन पूजन जप तप करके, हर आत्म बन्ध खुल जाता है॥
जब चरण-शरण तेरी हो तो, भव भोग शरीर रुचें कैसे।
हर पुण्य लगे सार्थक लेकिन, हम रहें आप बिन अब कैसे॥
इसलिए रचाई जिन-पूजन, बस अपनी पूर्ण मिटे दूरी।
नत माथ नमोऽस्तु करते हम, हो मनोकामना झट पूरी॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

सब पूज रहे प्रभु के चरणा, जिनसे मिलता निज रूप घना।
वह आतम का श्रृंगार करें, वह शीघ्र हमें भव पार करें॥
अब जन्म मृत्यु का दुख हरने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, जल स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

विपरीत समय में डर न उन्हें, जिन पर करुणा प्रभु बरसाते।
कर चारु चन्द्र सम चिन्तन वो, चैतन्य चिदातम निज ध्याते॥
कारुण्य धार वह पाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, शीत् स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

आशीष आपका सब चाहें, जो हर लेता संकट आहें।
चित्-पिण्ड अखण्ड प्रदान करें, दें मोक्षमहल शाश्वत राहें॥
आशीष हाथ तेरा पाने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, पुंज स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

अनकूल रहें प्रतिकूल रहें, यों रहें खुशी ज्यों फूल रहें।
सम्मान मिले अपमान मिले, बस प्रभु चरणों की धूल मिले॥

वह चरण धूल प्रभु की पाने, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, पुष्प स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।
इन नयन कटोरों में केवल, पकवान वसे भगवान् नहीं।
भगवान् बिना निजज्ञान नहीं, निजज्ञान बिना कल्याण नहीं॥
भगवान् वसो इन नयनों में, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, चरु स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।
इस पाप अँधेरे के कारण, निज आत्मज्योति आच्छादित है।
जो करे आरती दीप जला, वह पाता ज्ञान प्रकाशित है॥
वह आत्म ज्योति प्रकटाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, दीप स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।
निज-निधियों पर शिव-गलियों पर, अत्यन्त ठोस है कर्म शिला।
पर धूप-कुदाल लिया जिसने, निज-वैभव उसको शीघ्र मिला॥
वह कर्म शिला चटकाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, धूप स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।
भगवान् यही वरदान मिले, प्रभु शीघ्र हमें तुम अपना लो।
जो मोक्षसिंधु तक फैली है, उस जिन-गंगा में नहला लो॥
जिन से निज के प्रक्षालन को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, फल स्वाहा करने आए हैं॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।
हम अर्घ्य चढ़ाएँ गुण गाएँ, हम करें नमोऽस्तु जिन-सेवा।
क्या? इससे नाथ तुम्हें मिलता, पर हमें प्राप्त हो सुख मेवा॥

निज-मुक्ति भक्ति से पाने को, हम भेंट नमोऽस्तु लाए हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, सब स्वाहा करने आए हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

क्वाँर कृष्ण की दूज को, तज अपराजित स्वर्ग।
आए प्रभु नमिनाथ जी, वप्पिला माँ के गर्भ॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दसें कृष्ण आषाढ़ को, जन्मे प्रभु नमिनाथ।
लड्डू राजा विजय ने, बाँटे, नाँचे साथ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

संत जन्म तिथि में बने, पा रत्नत्रय वस्तु।
निर्ग्रन्थी नमिनाथ को, बारम्बार नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, हुआ ज्ञान कल्याण।
परमपिता नमिनाथ को, दुनियाँ करे प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस कृष्ण वैशाख को, मोक्ष गए नमिनाथ।
शिखर मित्रधरकूट को, नमन करें नत माथ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(हाकलिका)

इन्द्री कर्म विजेता जो, मोक्षमार्ग के नेता वो।
परम-पूज्य नमिनाथ जिनम, सादर करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १॥

अवधिज्ञान के स्वामी हैं, सुंदर अंतरयामी हैं।
परम-पूज्य नमिनाथ जिनम, सादर करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि के धारी हो, दाता अतिशयकारी हो।
परम-पूज्य नमिनाथ जिनम, सादर करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि के ईश तुम्हीं, देते हो आशीष तुम्हीं।
परम-पूज्य नमिनाथ जिनम, सादर करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

तुम्हीं अनन्तावधि ज्ञानी, मुक्तिवधू के वरदानी।
परम-पूज्य नमिनाथ जिनम, सादर करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

कोष्टबुद्धि के धारक हो, भक्तों के भी तारक हो।
परम-पूज्य नमिनाथ जिनम, सादर करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

बीजबुद्धि के हो धाता, श्रद्धालु के वरदाता।
परम-पूज्य नमिनाथ जिनम, सादर करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी मंत्र दिए, जिनशासन जयवंत किए।
परम-पूज्य नमिनाथ जिनम, सादर करें नमोऽस्तु हम॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

(शुद्ध गीता)

सुनो! संभिन्नश्रोतृ से, जिन्होंने दुख नशाए हैं।
महाभारत तरह के भय, जिन्हें छूने न पाए हैं॥
जिन्होंने प्रार्थना सुनकर, सहारा दे दिया सबको।
उन्हीं नमिनाथ स्वामी को, हमारा भी नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

जिन्हें संसार की माया, न छू सकती है सपने में।
बने वो ही स्वयंभू जो, लगाएँ चित्त अपने में॥
जिन्होंने अर्चना सुनकर, किनारा दे दिया सबको।
उन्हीं नमिनाथ स्वामी को, हमारा भी नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

महाव्रत आचरण कर जो, जगत के कष्ट हरते हैं।
वही प्रत्येक बुद्ध उनको, महा ऋषिराज कहते हैं॥
जिन्होंने वंदना सुनकर, उजाला दे दिया सबको।
उन्हीं नमिनाथ स्वामी को, हमारा भी नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

जिन्होंने थामकर उँगली, हमें चलना सिखाया हैं।
कि बोधित बुद्ध हैं वो तो, उन्हीं में सुख समाया हैं॥
जिन्होंने वेदना सुनकर, ठिकाना दे दिया सबको।
उन्हीं नमिनाथ स्वामी को, हमारा भी नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

(चौपाई)

ऋजुमति ज्ञान मनःपर्यय जो, विघ्न विनाशक देता जय को।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय जो, दिग्दर्शक दे आत्म निलय को।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

दसपूर्वों को धार रहे जो, ज्ञान दान दे तार रहे जो।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

चौदहपूर्वों के अभियंता, मोक्षनगर के सिद्ध महंता।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

प्रभु अष्टांगनिमित्त निखारें, भक्त आपके पाँव पखारें।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

तुम्हीं विक्रिया-ऋद्धि सँभाले, सबको उत्सव देने वाले।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

नर विद्याधर संयमधारी, सबके स्वामी अतिशयकारी।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

चारण ऋद्धीश्वर विज्ञानी, रोग-शोक हर्त्ता वरदानी।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

प्रज्ञाश्रमण तुम्हीं कहलाते, देकर ज्ञान मार्ग दिखलाते।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

गगनविहारी कमलविहारी, नाथ! आप हो अतिशयकारी।
दुख नमिनाथ मिटाते सारे, सादर तुम्हें नमोऽस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

(दोहा)

आशीर्विष को धारकर, दूर किए विषपान।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

दृष्टिर्विष को धारकर, दे डाले वरदान।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

उग्रतपों को धारकर, कर डाले कल्याण।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

दीप्ततपों को धारकर, पाए केवलज्ञान।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥

तप्ततपों को धारकर, पा बैठे निर्वाण।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

महातपों को धारकर, दूर करे अज्ञान।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

घोरतपों को धारकर, हरे कर्म तूफान।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

घोरगुणों को धारकर, किए भेद विज्ञान।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

घोरपराक्रम धारकर, विजय किए अपमान।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

घोरब्रह्मगुण धारकर, किए ब्रह्म रसपान।
हम सबके हैं लाड़ले, नमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

(सखी)

आमर्ष-औषधी धारी, छूकर हर लो बीमारी।
नमिनाथ जिनेश्वर ज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

प्रभु खेल्ल-औषधी धारी, दुख रोग शोक हर्त्तारी।
नमिनाथ जिनेश्वर ज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

प्रभु जल्ल-औषधी धारी,जिन स्वस्थ करो संसारी।
नमिनाथ जिनेश्वर ज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

प्रभु विप्रुष-औषधी धारी, कर दो सुन्दर सुखकारी।
नमिनाथ जिनेश्वर ज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

प्रभु सर्व-औषधी धारी, सब पूज रहे नर नारी।
नमिनाथ जिनेश्वर ज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

प्रभु सकल मनोबल धारी, संबल साहस दातारी।
नमिनाथ जिनेश्वर ज्ञानी, हो तुम्हें नमोऽस्तु स्वामी॥
ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

(अर्द्ध-विष्णु)

वचन दोष सम्पूर्ण मिटाएँ, वचनबली आहा।
ओम् ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

शौर्य शक्ति सम्पन्न बनाएँ, कायबली आहा।
ओम् ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

नीर-क्षीर का गुण सिखलाएँ, क्षीरस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

घी जैसा आतम झलकाएँ, सर्पिस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

कड़वा तीखा पाठ नशाएँ, मधुरस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

अजर-अमर ज्ञानामृत जैसा, अमृतस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

दें अक्षीण-महानस-आलय, निज घर रस आहा।
ओम् ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

दें सर्वोच्च सफल उन्नत गुण, वर्धमान आहा।
ओम् ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

सिद्धालय दें सिद्ध-आयतन, सिद्ध शिला आहा।
ओम् ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

णमो लोए सव्वसाहूणं मय, णमोकार आहा।
ओम् ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, शुद्धातम सरताज।
ऐसे प्रभु नमिनाथ को, करें नमोऽस्तु आज॥

(काव्य रोला)

करें नमोऽस्तु आज, काज केवल गुणगाना।
गुणगाने का राज, राज आतम का पाना॥
आतम पाके धाम, मोक्ष शाश्वत अपनाना।
शाश्वत नमि भगवान्, अतः सिर तुम्हें झुकाना॥

(ज्ञानोदय)

जय नमिनाथ परम अवतारी, आप अंत संसारी हो।
शुद्ध मोक्ष निज के रसिया पर, हितकारी संसारी को॥
अद्वितीय यह कला आपकी, खूब रुचे संसारी को।
चरण-शरण में रहे कहे गुण, रह न सके संसारी वो॥ १॥
पिछले भव सिद्धार्थ नाम के, राजा ने जिनदीक्षा ली।
तीर्थंकरप्रकृति बाँधी फिर, मृत्युमहोत्सव शिक्षा ली॥

अपराजित के स्वर्ग भोगकर, धरती पर अवतरित हुए।
तब मिथिला के राजा रानी, विजय वप्पिला जन्म दिए॥ २॥
गर्भ जन्म के पर्व देव कर, नामकरण नमिनाथ किए।
ढाई हजार वर्ष का भोगा, कुमारकाल फिर राज्य किए॥
पाँच हजार वर्ष का भोगा, राज्यकाल फिर कर चिन्तन।
इस प्राणी ने स्वयं फँसाया, काल कोठरी में चेतन॥ ३॥
ज्यों पिंजड़े में पक्षी दुखिया, बँधा हुआ हाथी रोता।
त्यों विषयों में मस्त जीव यह, निज अध्यात्म तत्त्व खोता॥
विष्ठा के कीड़े के जैसे, पाप-राग नित करता है।
हाय! हाय! फिर आर्त रौद्र कर, बिन रत्नत्रय मरता है॥ ४॥
तब लौकान्तिक देव सराहे, नमिनाथ के चिंतन को।
जग तज बैठ मनोहर शिविका, स्वामी चले चैत्र-वन को॥
बने दिगम्बर धरती अम्बर, गूँजे जय-जयकारों से।
दंतराज के हुई पारणा, पंचाश्चर्य नगाड़ों से॥५॥
जब छद्मस्थ वर्ष नव बीते, तभी बकुल तरुतल में जा।
बेला का संकल्प निभाकर, केवलज्ञान लिया उपजा॥
समवसरण में दिव्य-देशना, 'पुण्यफला' ने दे डाली।
जिससे सबने राग-रमा की, भव पर्याय भुला डाली॥ ६॥
मरण-मूलधन लेकर प्राणी, कर्जदार हो मृत्यु का।
जन्म-जन्म में कष्ट भोगता, कर्ज बढ़ाए दुर्गति का॥
किन्तु जीव रत्नत्रय धन का, जब तक अर्जन करे नहीं।
तब तक मृत्यु साहुकार का, ब्याज मूलधन चुके नहीं॥ ७॥
अतः धारकर रत्नत्रय को, स्वस्थ बनो आतम-भोगी।
तत्त्व देशना ऐसी देकर, नाथ! बने प्रतिमायोगी॥
श्री सम्मेदशिखर से नमिजिन, चतुर्दशी को मोक्ष गए।

मोक्ष पर्व से पुण्य कमाकर, देव स्वर्ग को लौट गए॥ ८॥
इसी तीर्थ में ग्यारहवें जयसेन चक्रवर्ती जन्मे।
चौदह रत्न नवो निधियाँ थीं, दसों भोग थे जीवन में॥
इक दिन उल्कापात देखकर, राज-पाठ वैभव छोड़े।
तप करके अहमिन्द्र बने सो, तपोधनों को सिर मोड़ें॥ ९॥
ऐसे प्रभु नमिनाथ देव ने, हर कर्मों से युद्ध किया।
अहित जीतकर मुक्ति प्रीतकर, अपना आतम शुद्ध किया॥
जिनके दिल में नमिनाथ हैं, शुद्ध बुद्ध खुद बनते वे।
उन्हें रहे क्या बुध ग्रह पीड़ा, मोक्ष महल में वसते वे॥ १०॥
लेकिन दूरी मिटी न अपनी, लक्ष्य दूर है राह बड़ी।
छोटे से हम भक्तों के दिल, फँसे न जग में फिकर खड़ी॥
वैरी दुनियाँ नित मारे पर, उसका कुछ भी असर नहीं।
'सुव्रत' पर बस यही कृपा हो, जिसकी जग को खबर नहीं॥११॥

(सोरठा)

नीलकमल है चिह्न, तीर्थंकर नमिनाथ हो।
हम पर रहो प्रसन्न, निजानुभव को साथ दो॥
हे स्वामी! जिनदेव, स्वार्थ रहित ये भक्तियाँ।
करती हैं स्वयमेव, भक्त जगत् की मुक्तियाँ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

नमिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नमिनाथ का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
१. श्री नमिनाथ प्रभु कल्याणी, जिनके पूजक दुर्लभ प्राणी।
सम्मेदशिखर से मोक्ष गए विज्ञानी, सुख शान्ति प्रादाता स्वामी॥श्री..
२. प्रभु विजयराज के पुत्र रहे, वर्मिला माँ की संतान रहे।
हो मिथिलापुर के भगवन अंतर्यामी, हो भक्तों के वरदानी॥श्री..
३. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..
४. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
१. विजयराज के राज दुलारे, वर्मिला माँ के नयन सितारे।-२
मिथिलापुर अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
२. देवों ने अतिशय दिखलाये, नमिनाथ भगवन प्रकटाए।-२
सबके चित्त चुराए, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ-२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

श्री नेमिनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. पंच बालयति हुए उन्हीं में, नेमिनाथ बड़भागी।
चढ़ी न हल्दी रँगी न मेहँदी, राज रमा के त्यागी॥
शौरीपुर के समुद्रविजय व, शिवदेवी के नंदन।
देख प्राणियों के बंधन को, हुए विरागी भगवन॥ ओम्...
२. सेसावन गिरनार शिखर पर, बने केवली स्वामी।
समवसरण से दिव्य देशना, दिए मोक्ष के गामी॥
हम भी तो गिरनार चढ़ें फिर, मोक्षमहल की सीढ़ी।
नेमिनाथ को करके नमोस्तु, 'सुव्रत' माढ़ें श्रेणी॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
नेमिनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री नेमिनाथ पूजन

स्थापना

(दोहा)

निज निर्ग्रन्थ निवास में, जो निरखें निजधाम।
ऐसे नेमिजिनेश को, पूजें करें प्रणाम॥

(लय : माता तू दया करके...)

श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।
जब कुछ नहिं सूझा तो, हाथों को हि जोड़ चले॥

हे! नेमिनाथ जिनवर, चैतन्य विरामी हो।
रह के कण-कण में भी, प्रभु अंतर्यामी हो॥
तुम जीव दया करने, त्यागे अपनी खुशियाँ।
हम भले उजड़ जाएँ, पर सुखी रहे दुनियाँ॥
फिर राज-भोग छोड़े, राजुल भी ना भायी।
तो चेतन की खुशबू, झट मुक्ति वधू लायी॥
हे! दयामूर्ति हम पर, प्रभु एक दया कर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, मन-चिदानन्द भर दो॥
श्रद्धा की केशरिया...।

(दोहा)

भक्ति सुमन ये भेंटकर, नाँच उठे मन मोर।
हृदय वसो तो हम चलें, मोक्षमहल की ओर॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

अपनों ने हि जन्म दिया, अपनों ने हि मार दिया।
फिर भी अपनों से क्यों, हमने तो प्यार किया॥
अपनों का अपनापन, जल से हम भी हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

अपनों ने हि ईर्ष्या से, अपनों को जला दिए।
फिर भी ना राख हुए, कितने भव गवाँ दिए॥
अपनों की यह ईर्ष्या, चंदन से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥ श्रद्धा की...

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

अपनों ने हि घाव दिए, तो आँसू भी झलके।
हम उन्हें मित्र मानें, जो साथी नहिं पल के॥
अपनों की ये पीड़ा, अक्षत से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥ श्रद्धा की...

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपनों ने जो जाल रचे, उनमें अपने ही फँसे।
काँटों से बच निकले, पर फूलों में उलझे॥
अपनों की उलझ-सुलझ, पुष्पों से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥ श्रद्धा की...

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

अपनों की तलाश में हम, नित भूख-प्यास सहते।
हम जिनको अमृत दें, वे हमें जहर देते॥
अपनों के विष-अमृत, नैवेद्य से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥ श्रद्धा की...

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अपनों ने ही भटका के, दर-दर की ठोकर दीं।
हम रहें अँधेरे में, अपना सब खोकर भी॥
अपनों की यह भटकन, दीपों से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥ श्रद्धा की...

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

अपनों ने हि धोखे से, अपना सब कुछ छीना।
जीने की आश न थी, फिर भी तो पड़ा जीना॥
अपनों के ये धोखे, प्रभु धूप से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥ श्रद्धा की...

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

अपनों की मृग-तृष्णा, सपनों को दिखाकर के।
हमको लूटे तो हम, भागे मुँह छिपाकर के॥
अपनों के ये सपने, फल से हम भी हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥ श्रद्धा की...

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अपनों ने हि साथ दिया, जब सुख से दिन गुजरे।
सब छोड़ गए हम को, जब भाग्य कमल उजड़े॥
फिर भी अपनों का यह, हम राग न छोड़ सके।
प्रभु सामने हैं पर हम नाता न जोड़ सके॥
प्रभु के रंग में हम भी, अब रंगने को आए।
जो है शाश्वत अपना, वह संग पाने आए॥
अपनों की यह भ्रमणा, प्रभु अर्घ्य से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
जब हुआ गर्भ कल्याणक था, तब रत्न-दृश्य मनमोहक था।[२]
फिर शौर्यपुरी में आन पधारे नेमि-जिससे दुनियाँ हर्षानी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....।

(दोहा)

कार्तिक षष्ठी शुक्ल में, शिवदेवी के गर्भ।
नेमिप्रभु जी आ वसे, तजकर जयन्त स्वर्ग॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु जन्म लिए तो सुर पहुँचे, नृप समुद्रविजय के घर नाँचे।[२]
अभिषेक मेरु पै देव करें वरदानी, प्रभु पाण्डुकशिला विरामी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

श्रावण षष्ठी शुक्ल में, हुआ जनम का शोर।
समुद्रविजय के आँगने, नेमि किए किलकोर॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु देख प्राणियों का क्रन्दन, झट तजे राज राजुल बन्धन।[२]
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना-पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

श्रावण षष्ठी शुक्ल में, पशुओं की सुन त्राण।
नेमिप्रभु तप से सजे, हम तो करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु ध्यान लगाकर जब बैठे, तब घातिकर्म बन्धन टूटे।[२]
फिर समवसरण में दिए देशना ज्ञानी, सबने पूजी जिनवाणी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

शुक्ला एकम् क्वांर को, घाति कर्म जयोऽस्तु।
मोक्षमार्ग अध्यात्म-दा, नेमि प्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लप्रतिपदायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सब कर्म हरे गिरिनारी से, फिर मिले मुक्ति की नारी से।[२]
देवों ने उत्सव करने की फिर ठानी, अब हम तो करें नमामि॥

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
आठें (सातें) शुक्ल अषाढ़ को, प्राप्त किए निर्वाण।
नेमिप्रभु गिरनार को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्ल-अष्टम्यां (सप्तम्यां) मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(सखी)

जय कर्म इन्द्रियाँ कर जो, अरिहंत बने जिनवर वो।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोऽस्तु गूँजे॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १॥

पा अवधिज्ञान की ज्योति, गति सुगम जीव की होती।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोऽस्तु गूँजे॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२॥

परमावधि ज्ञान कला से, प्रभु मिले मुक्ति माला से।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोऽस्तु गूँजे॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३॥

सर्वावधि ज्ञान दिवाकर, दुख रात हरो जिन-भास्कर।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोऽस्तु गूँजे॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥४॥

पा लिए अनन्तावधि को, कर लिए पार भवदधि को।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोऽस्तु गूँजे॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥५॥

हो कोष्ठबुद्धि के ज्ञानी, हर काम बनाओ स्वामी।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोऽस्तु गूँजे॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥६॥

बो बीजबुद्धि की फसलें, संरक्षित कर दी नस्लें।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोऽस्तु गूँजे॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥७॥

पा पदानुसारी रथ को, निर्देशित करते पथ को।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोऽस्तु गूँजे॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥८॥

संभिन्नश्रोतृ की वीणा, हरती हम सबकी पीड़ा।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोऽस्तु गूँजे॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥९॥

(हाकलिका)

स्वयंबुद्ध से हो ज्ञानी, हरो सभी की हैरानी।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोऽस्तु करते हम चेले॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१०॥

हे! प्रत्येकबुद्ध त्यागी, हमें बना लो वैरागी।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोऽस्तु करते हम चेले॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥११॥

बोधितबुद्ध निराले हो, हम सबके रखवाले हो।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोऽस्तु करते हम चेले॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१२॥

ऋजुमति ज्ञान मनःपर्यय, दे हम सबको शत्रु विजय।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोऽस्तु करते हम चेले॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१३॥

ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय, भटकन हर दे निज आलय।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोऽस्तु करते हम चेले॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१४॥

दसपूर्वों के हो ज्ञाता, सबको देते सुख साता।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोऽस्तु करते हम चेले॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

चौदहपूर्वों के पाठी, सबसे अलग राह छाँटी।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोऽस्तु करते हम चेले॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

धर अष्टांग-निमित्तों को, गले लगाते भक्तों को।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोऽस्तु करते हम चेले॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

अणिमा आदिक ऋद्धि धरें, हम में सुख समृद्धि भरें।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोऽस्तु करते हम चेले॥

ॐ ह्रीं णमोविउव्वणपत्ताणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१८॥

(शुद्ध गीता)

असंयम त्याग विद्याधर, करें स्वीकार संयम को।
वहीं पर आत्मा झलके, जहाँ थामें निजातम को॥
सभी के लाड़ले नेमि, हमें प्राणों से प्यारे हैं।
करें सादर नमोस्तु हम, हमारे भाग्य जागे हैं॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१९॥

मिली चारण महा ऋद्धि, खिली आतम ऋषीश्वर की।
जहाँ रख दें चरण अपने, दिखे मूरत मुनीश्वर की॥
सभी के लाड़ले नेमि, हमें प्राणों से प्यारे हैं।
करें सादर नमोस्तु हम, हमारे भाग्य जागे हैं॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

बिना पढ़ के हुए ज्ञानी, वही प्रज्ञाश्रमण होते।
नशाएँ दोष भक्तों के, वही अज्ञान दुख खोते॥

सभी के लाड़ले नेमि, हमें प्राणों से प्यारे हैं।
करें सादर नमोस्तु हम, हमारे भाग्य जागे हैं॥
ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२१॥

(लघु चौपाई)

कर आकाशगमन स्वीकार, करें स्वस्थ-सुखिया संसार।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोऽस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥
ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२२॥

मर जा कहने पर मर जाएँ, पर ये वचन प्रयोग न लाएँ।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोऽस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥
ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२३॥

जहरीली नजरों को धार, अहित न करती मुनि-सरकार।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोऽस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥
ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२४॥

दीक्षा ले करते तप उग्र, कर्मों को कर देते क्षुद्र।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोऽस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥
ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

बेला आदिक कर उपवास, बढ़े कायबल दीप्त प्रकाश।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोऽस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥
ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२६॥

कर आहार न हुआ निहार, तप्त तपों की जय-जयकार।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोऽस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥
ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२७॥

महा तपस्याएँ उपवास, हरें समस्याएँ दुख-वास।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोऽस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥
ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२८॥

करें साधना तपसी घोर, जग को छोड़ चले शिव ओर।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोऽस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

घोरगुणों को करके प्राप्त, दोष त्याग दें अर्हम-आप्त।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोऽस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

जगत विनाशक पा सामर्थ्य, घोरपराक्रम करें न व्यर्थ।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोऽस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३१॥

अघोरब्रह्म से हरते रोग, स्वामी हरें पाप संयोग।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोऽस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥

ॐ ह्रीं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

(जोगीरासा)

जिनकी काया छूकर होती, दुनियाँ स्वस्थ निरोगी।
त्याग तपस्या की यह महिमा, हमें बना दे योगी॥
परम पूज्य आमर्ष औषधि, हमको स्वस्थ बनाएँ।
नेमिप्रभु को करके नमोऽस्तु, गिरनारी चढ़ जाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३३॥

लार थूक कफ आदि ऋषि के, खेल्ल कहाते सारे।
बनें तपस्या से सब औषधि, रोग-शोक परिहारे॥
खेल नहीं ये खेल्ल-औषधि, हमको स्वस्थ बनाएँ।
नेमिप्रभु को करके नमोऽस्तु, गिरनारी चढ़ जाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

दूर व्याधियाँ हो जाती हैं, छूकर बूँद पसीना।
रत्नत्रय जल पा कर चमके, आतम रत्न नगीना॥

जीवन दे ये जल्ल-औषधि, हमको स्वस्थ बनाएँ।
नेमिप्रभु को करके नमोऽस्तु, गिरनारी चढ़ जाएँ॥
ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

ऋषि के मल-मूत्रों को छूकर, पवन जहाँ भी जाए।
करें निरोगी जीव मात्र को, सबको स्वस्थ बनाए॥
विकार हरती विप्रुष औषधि, सारे दोष नशाएँ।
नेमिप्रभु को करके नमोऽस्तु, गिरनारी चढ़ जाएँ॥
ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

सर्वौषधि को धार ऋषीश्वर, रोग व्याधियाँ टालें।
थोड़ा हम पर नाथ! ध्यान दो, आत्म शान्ति हम पा लें॥
सर्वौषधि सुख देकर जग से, सारे दोष नशाएँ।
नेमिप्रभु को करके नमोऽस्तु, गिरनारी चढ़ जाएँ॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

(दोहा)

एक मुहूरत में करें, चिंतन श्री श्रुतज्ञान।
थोड़ा हम पर ध्यान दो, नेमिनाथ भगवान॥
ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

एक मुहूरत में करें, वाचन श्री श्रुतज्ञान।
थोड़ा हम पर ध्यान दो, नेमिनाथ भगवान॥
ॐ ह्रीं णमो वचिबलीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(विष्णु)

कायोत्सर्ग धारने लायक, किए साधनाएँ।
उत्तम संहनन पाकर साधक, सबका हित ध्याएँ॥
मुक्ति योग्य कायबल पाने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥
ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥४०॥

ऋषियों का आहार क्षीर सम, हुआ तपस्या से।
चरण-शरण जिनकी पाकर हम, बचें समस्या से॥
पूज्य क्षीरस्त्रावी ऋषिगण को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

ऋषियों का भोजन घी जैसा, हुआ साधना से।
छत्र-छाँव जिनकी पाकर हम, जुड़ें प्रार्थना से॥
सर्पिस्त्रावी ऋषिगण को तो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥४२॥

ऋषियों का भोजन घी जैसा, हुआ साधना से।
छत्र-छाँव जिनकी पाकर हम, जुड़ें प्रार्थना से॥
सर्पिस्त्रावी ऋषिगण को तो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

विषाक्त भोजन अमृत जैसा, हुआ भावना से।
नाम-मंत्र जिनका जपकर हम, बचें याचना से॥
अमृतस्त्रावी ऋषिगण को तो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥४४॥

शेष भोज्य से कटक पेट भर, एक जगह रह लें।
चरण-धूल जिनकी पाकर के, सम्यक् तप कर लें॥
यह अक्षीण-माहनस-आलय, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

आतम गुण को प्रकटाने को, सभी दोष त्यागे।
गुण-गण का भण्डार देख कर, जग पीछे भागे॥
वर्धमान चारित्र गुणी को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

तीन लोक के सिद्धक्षेत्र सब, तीन काल वाले।
सिद्ध-भक्तियों से भक्तों के, कर्म कटें काले॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः जप के, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

जिनशासन की पता-पताका, नग्न साधु होते।
यही रहे स्तम्भ धर्म के, पाप कर्म खोते॥
दिगम्बरत्व की परम्परा को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

तीर्थकरों के रूप नेमि, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

नेमिनाथ स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋिद्धि सम्पन्न श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

धार्मिक रथ की जो धुरी, धर्मचक्र की हाल।
जिनवर नेमि दयेश की, अब कहते जयमाल॥

(ज्ञानोदय)

जिनके तपश्चरण की चर्चा, तीन लोक में गूँज रही।
जीवदया वैराग्य कथा को, सारी दुनियाँ पूज रही॥
अन्य-सभी तीर्थंकर से भी, जिनके अतिशय भिन्न रहे।
ऐसे नेमिनाथ जिनवर के, गुण गा हृदय प्रसन्न रहे॥ १॥
अतः करें गुणगान भक्त हम, आश्रय ले जयमाला का।
जो पिछले भव अपराजित थे, ऐसे प्रभु जग-पाला का॥
अपराजित कर मृत्यु महोत्सव, सोलहवे सुर जन्म लिए।
स्वर्ग त्यागकर सुप्रतिष्ठ बनकर, उल्कापातन देख लिए॥ २॥
धर वैराग्य लिए दीक्षा फिर, तीर्थंकरप्रकृति पाए।
समाधिमरण कर स्वर्ग गए फिर, स्वर्ग त्याग भू पर आए॥
शिवदेवी को सोलह सपने, दिए गर्भ कल्याणक में।
ऐरावत से चले मेरु पर, प्रभो! जन्म कल्याणक में॥ ३॥
धर्मचक्र की धुरा धरी सो, नेमिनाथ शुभ नाम पड़ा।
जिन्हें देख आनन्द बरसता, विश्व जोड़कर हाथ खड़ा॥
बचपन बीता अणुव्रत जैसा, फिर जिन पर यौवन छाया।
तभी मनोहर जलक्रीड़ा का, एक सुखद अवसर आया॥ ४॥
वहाँ सत्यभामा के ऊपर, नेमिनाथ जल उछलाए।
वस्त्र नहाने का तुम धो दो, यूँ कहकर कुछ इठलाए॥

क्या तुम काम श्याम के जैसे, कर सकते भामा बोली।
अगर नहीं तो हुक्म करो क्यों?, ये बोली बन गई गोली॥ ५॥
नेमिनाथ ने शंख फूँककर, नवयौवन की ध्वनि कर दी।
राजीमति से विवाह बन्धन, करने को मँगनी कर ली॥
तभी श्याम को हुई आशंका, कहीं कभी ना हो ऐसा।
नेमिनाथ जी राज्य हमारा, ले ना लें तो हो कैसा॥ ६॥
अतः उन्हें वैराग्य कराने, को षड्यन्त्र रचा डाले।
मृग पशुओं को शिकारियों को, बाड़ी में भरवा डाले॥
जूनागढ़ बारात गयी तो, नेमि उन्हीं का दुख देखे।
धर वैराग्य तजे राजुल को, विवाह बन्धन भी फेंके॥ ७॥
चले देवकुरु शिविका से ली, गिरिनारी में मुनिदीक्षा।
पीछे - पीछे राजुल पहुँची, बनी आर्यिका ली दीक्षा॥
द्वारावति के जो राजा थे, श्री वरदत्त महा न्यारे।
वहीं पारणा दीक्षा की हुई, पंचाश्चर्य हुए प्यारे॥ ८॥
छप्पन दिन छद्मस्थ बिता के, गिरिनारी पर्वत पर जा।
बने बाँस के नीचे ध्यानी, केवलज्ञान तभी उपजा॥
ज्ञान पर्व देवों ने करके, समवसरण भी सजा दिया।
ग्यारह गणधर की संसद को, नेमिनाथ ने जगा दिया॥ ९॥
भव्यजनों के नेमिनाथ ने, कहे भवांतर जैसे ही।
सभी पाण्डवों ने दीक्षा ले, धारा संयम वैसे ही॥
कुन्ती सुभद्रा और द्रौपदी, बनी आर्यिका सुर-वासी।
विहार करते शत्रुंजय पर, पाण्डव पहुँचे संन्यासी॥ १०॥
दुर्योधन के भांजे ने फिर, वहाँ घोर उपसर्ग किए।
दो पाण्डव तो स्वर्ग सिधारे, तीन मोक्ष को गमन किए॥

इधर नेमिप्रभु गिरिनारी पर, योग निरोध किए स्वामी।
कर्मनष्ट कर मोक्ष पधारे, हम चरणों में प्रणमामि॥ ११॥
ब्रह्मदत्त भी जरासंध भी, पद्म कृष्ण भी तब जन्मे।
तब ही हुआ महाभारत था, नेमिनाथ के शासन में॥
द्वन्द्व-फन्द हर्त्ता को बाँधो, गुरु दिन राहु-ग्रह में क्यों।
ऋद्धि-सिद्धि हों काम बनें सब, प्रभु की जय बस बोलो तो॥१२॥
सजा-धजा था विवाह मण्डप, नेंग और दस्तूर हुए।
सजे बराती शोभे दुल्हन, नेमि सभी से दूर हुए॥
राजुल जैसे हमें न छोड़ो, थामो नाजुक हाथों को।
'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, हर लो गम की रातों को॥ १३॥

(सोरठा)

चरण शरण में शंख, नेमिनाथ का चिह्न है।
मिले भक्ति के पंख, उड़कर भक्त प्रसन्न हैं॥
परम शुद्ध अध्यात्म, लोक शिखर शिवधाम है।
नेमिनाथ दो दान, सादर अतः प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

नेमिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नेमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिनाथ का पाठ, करो दिन-रात, ठाठ से प्राणी,
हो मंगलमय कल्याणी।
१. श्री नेमिनाथ कल्याणी हैं, जिनके पूजक हर प्राणी हैं।
हैं बाल ब्रह्मचारी आतम के ज्ञानी, सुख शांति प्रदाता स्वामी॥श्री..
२. प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता हैं, संसार मोक्ष सुख कर्त्ता हैं।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥श्री..
३. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..
४. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभुकी कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

(लय–छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥छूम छूम...
१. नेमिनाथ भगवान हमारे, हम सबको प्राणों से प्यारे।-२
जग के हो उजयारे, बाबा करूँ आरतिया ॥ करूँ...
२. समुद्रविजय के राज दुलारे, शिवदेवी के नयन सितारे।-२
शौरीपुर अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ।
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ..

===

श्री पार्श्वनाथ दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. चार-चार पुरुषार्थ करें जो, वो तीर्थंकर ज्ञानी।
पंच बालयति हुए उन्हीं में, पारस अंतर्यामी॥
चढ़ी न हल्दी रँगी न मेहँदी, सचमुच ये तो हीरा।
जय चैतन्य चमत्कारी जो, बन बैठे भव तीरा॥ ओम्...
२. काशी जी के अश्वसेन व, वामाजी के नंदन।
याद पूर्वभव कर वैरागे, ध्यान किए फिर भगवन॥
समवसरण से धर्म सिखाकर, मोक्षसप्तमी पाए।
स्वर्णभद्र सम्मेदशिखर को भजने 'सुव्रत' आए॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
पार्श्वनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री पार्श्वनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

निर्बलता अब छोड़ कर, निर्मल भजो जिनेश।
प्रभु-पूजा वरदायिनी, वर पा बनो महेश॥

(शंभु)

हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ! उपसर्गजयी।
हे चिंतामणि! अंतर्यामी!, हे पार्श्वनाथ! परिषह विजयी॥
जिनने अपने मानस तल पर, प्रभु! नाम किया अंकित तेरा।

वे अतिशय ऊर्जावान हुए, पा शक्ति, मुक्ति का पथ डेरा॥
तूफान घटा हो या आँधी, तो पार्श्वनाथ के भक्त कभी।
ना चंचल हों ना धैर्य तजें, हैरान नहीं हों दास सभी॥
वे कर्मजयी हों दयामयी, जो पार्श्वनाथ को पाते हैं।
हम करें अर्चना कल्याणी, हो विश्वशान्ति यह ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

जनम-मरण का क्या कहना? पर, असमय मरण कभी सोचे।
माँ के आँसू इतने बरसे, सागर पड़े बड़े छोटे॥
जल से जनम मरण हरने को, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

आपस की टकरार भयंकर, जलें महावन भी इससे।
भवाताप का क्या कहना हो?, भव-भव में जलते इससे॥
चंदन से भव-ताप मिटाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

धरा रहेगी, धरा रहेगा, हमको तो निश्चित जाना।
मुट्ठी बाँधे सब आते पर, हाथ पसारे ही जाना॥
पुंज चढ़ा अक्षयपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन बस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय-अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

काँटों से हम बचते रहते, तभी फूल ना खिल पाते।
सम्यक् ना पुरुषार्थ करें तो, आत्म शान्ति भी ना पाते॥

पुष्प चढ़ाकर काम नशाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भोजन कर ज्यों मौज उड़ाते, अगर बुराई त्यों खाएँ।
देह-व्याधियाँ लूट-मार सब, तत्क्षण जग से नश जाएँ॥
ये नैवेद्य क्षुधा रुज हरने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

दीप जला आरति करने से, शाम-रात क्या हट सकती?
पर श्रद्धा दीपक से अपनी, शाम-रात भी टल सकती॥
अपना श्रद्धा दीप जलाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

धूप जले खुद, पर जग महके, उसे पराये राख करें।
ऐसे ही आतम का सौरभ, कर्म कीच रज नाश करे॥
खेकर धूप कर्म-रज हरने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

आज सँभालो कल सँभलेगा, हर मुश्किल का हल होगा।
पल मत खोना छल मत करना, मंजिल-पथ समतल होगा॥
विधिफल त्याग मोक्ष फल पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥

अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दूज कृष्ण वैशाख को, तज प्राणत सुर धाम।
वामा माँ के गर्भ में, वसे पार्श्व भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण ग्यारस तिथि, जन्मे पार्श्वकुमार।
विश्वसेन काशी करे, नाँच-नाँच त्यौहार॥

ॐ ह्रीं श्री पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण एकादशी, पार्श्व बने निर्ग्रन्थ।
तप कल्याणक हम भजें, हो नमोऽस्तु जयवंत॥

ॐ ह्रीं श्री पौषकृष्ण-एकादश्यां तपमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्ण चतुर्थी चैत्र को, जीते सब उपसर्ग।
पार्श्व प्रभु को नमोऽस्तु कर, करें ज्ञान का पर्व॥

ॐ ह्रीं श्री चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, मोक्ष सप्तमी पर्व।
नमोऽस्तु पार्श्व निर्वाण को, भजें शिखरजी सर्व॥

ॐ ह्रीं श्री श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(चौपाई)

इन्द्री कर्म विजेता प्यारे, मोक्षमार्ग के नेता न्यारे।
संकटमोचक पारसनाथ, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १॥

अवधिज्ञान के स्वामी ज्ञाता, सुंदर अंतरयामी दाता।
संकटमोचक पारसनाथ, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि के प्रभु धारी हो, बाबा तुम अतिशयकारी हो।
संकटमोचक पारसनाथ, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि के ईश जिनेश्वर, आशीर्वाद हमें दो भर भर।
संकटमोचक पारसनाथ, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

ज्ञान अनन्तावधि के ज्ञाता, मुक्तिवधू के आप विधाता।
संकटमोचक पारसनाथ, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

कोष्टबुद्धि को धार रहे हो, भक्तों को भी तार रहे हो।
संकटमोचक पारसनाथ, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

बीजबुद्धि के हो भण्डारी, श्रद्धालु के हो हितकारी।
संकटमोचक पारसनाथ, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी मंत्र सिखाते, जिनशासन जयवंत कराते।
संकटमोचक पारसनाथ, हम नमोऽस्तु कर टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्री पार्श्वनाथ- जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

(शुद्ध गीता)

सदा संभिन्नश्रोतृ से, हमारे दुख नशाते हैं।
महा संग्राम सेनानी, उन्हीं को हम बताते हैं॥
हमारी प्रार्थना सुनकर, हमें देना सहारा जी।
कि पारसनाथ स्वामी को, नमोऽस्तु हो हमारा भी॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

हमें संसार माया से, जिन्होंने दी सुरक्षाएँ।
वही अपने स्वयंभू जो, लिए जैनेन्द्र दीक्षाएँ॥
हमारी प्रार्थना सुनकर, हमें देना सहारा जी।
कि पारसनाथ स्वामी को, नमोऽस्तु हो हमारा भी॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

जगत के कष्ट हरने को, महाव्रत आचरण करते।
वही प्रत्येकबुद्ध उनको, महा ऋषिराज हम कहते॥
हमारी प्रार्थना सुनकर, हमें देना सहारा जी।
कि पारसनाथ स्वामी को, नमोऽस्तु हो हमारा भी॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

जिन्होंने धर्म देकर के, हमें जीना सिखाया है।
कि बोधितबुद्ध वो अपने, उन्हीं को सिर झुकाया है॥
हमारी प्रार्थना सुनकर, हमें देना सहारा जी।
कि पारसनाथ स्वामी को, नमोऽस्तु हो हमारा भी॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

(हाकलिका)

ऋृजुमति ज्ञान मनःपर्यय, विघ्न विनाशक देता जय।
पार्श्वनाथ की जय बोलो, कर नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय, उच्चासन दे आत्म निलय।
पार्श्वनाथ की जय बोलो, कर नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

दसपूर्वों के धारक जो, योगी योग निवारक वो।
पार्श्वनाथ की जय बोलो, कर नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

चौदहपूर्वी ज्ञाता जो, सबके भाग्य विधाता वो।
पार्श्वनाथ की जय बोलो, कर नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

प्रभु अष्टांग-निमित्त धरें, सबकी नैया पार करें।
पार्श्वनाथ की जय बोलो, कर नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

ऋद्धि-विक्रिया धारी जो, हमको मोक्ष सवारी दो।
पार्श्वनाथ की जय बोलो, कर नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

विद्याधर नर व्रतधारी, सबके प्रभु अतिशयकारी।
पार्श्वनाथ की जय बोलो, कर नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

चारणऋद्धी के स्वामी, हमें सिद्धि दो आगामी।
पार्श्वनाथ की जय बोलो, कर नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

प्रज्ञाश्रमण जिनेश्वर जो, हम सबके परमेश्वर वो।
पार्श्वनाथ की जय बोलो, कर नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

प्रभु आकाशगमन करते, वैर विरोध शमन करते।
पार्श्वनाथ की जय बोलो, कर नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥
ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥
आशीर्विष के धारी हो, देते सुख संसारी को।
पार्श्वनाथ की जय बोलो, कर नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥
ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥
दृष्टिर्विष के भण्डारी, आगम के आज्ञाकारी।
पार्श्वनाथ की जय बोलो, कर नमोऽस्तु अखियाँ खोलो॥
ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(सखी)

प्रभु उग्रतपों को धारो, दे धर्म जगत को तारो।
दो शान्ति हरो दुख वस्तु, हो पार्श्वप्रभु को नमोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥
प्रभु दीप्ततपों को धारो, दे केवलज्ञान उतारो।
दो शान्ति हरो दुख वस्तु, हो पार्श्वप्रभु को नमोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥
प्रभु तप्ततपों को धारो, निर्वाण नगर उजयारो।
दो शान्ति हरो दुख वस्तु, हो पार्श्वप्रभु को नमोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥
प्रभु महातपों को धारो, भक्तों के हृदय पधारो।
दो शान्ति हरो दुख वस्तु, हो पार्श्वप्रभु को नमोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥
प्रभु घोरतपों को धारो, तूफान कर्म के टारो।
दो शान्ति हरो दुख वस्तु, हो पार्श्वप्रभु को नमोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

प्रभु घोरगुणों को धारो, दुख घोर वेदना टारो।
दो शान्ति हरो दुख वस्तु, हो पार्श्वप्रभु को नमोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥
प्रभु घोरपराक्रम धारो, सब के चैतन्य निखारो।
दो शान्ति हरो दुख वस्तु, हो पार्श्वप्रभु को नमोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥
प्रभु घोरब्रह्मगुण धारो, भक्तों को पार उतारो।
दो शान्ति हरो दुख वस्तु, हो पार्श्वप्रभु को नमोऽस्तु॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

(दोहा)

धरो ऋद्धि आमर्ष को, करो स्वस्थ संसार।
पार्श्वनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥
खेल्ल-औषधी धारकर, देते सुख भण्डार।
पार्श्वनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥
जल्ल-औषधी धारकर, हरो कष्ट व्यापार।
पार्श्वनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥
विप्रुष-औषधी धारकर, दे दो सुन्दर हार।
पार्श्वनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥
सर्व-औषधी धारकर, तार रहे नर नार।
पार्श्वनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥
ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

सकल मनोबल धारकर, बल साहस दातार।
पार्श्वनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

वचन दोष नाशें सभी, वचनबली सरकार।
पार्श्वनाथ भगवान को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

हमें भीम जैसा बल देते, कायबली आहा।
ओम् ह्रीं पारसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

हमें बुद्धि दें नीर-क्षीर की, क्षीरस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं पारसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

घृत जैसा आतम रस देते, सर्पिस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं पारसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

मधुर-मधुर सा रस झलकाएँ, मधुरस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं पारसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

विष जैसा संसार नशाएँ, अमृतस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं पारसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

दें अक्षीण महानस आलय, अपना घर आहा।
ओम् ह्रीं पारसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

पार्श्वनाथ भी वर्धमान हैं, वर्धमान आहा।
ओम् ह्रीं पारसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

सिद्ध शिला दें सिद्ध आयतन, शुद्धातम आहा।
ओम् ह्रीं पारसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

णमोकार के साधु जनों को, हो नमोऽस्तु आहा।
ओम् ह्रीं पारसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

तीर्थकरों के रूप पारस, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

पार्श्वनाथ स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

दुनियाँ में यशवान हैं, पार्श्वनाथ जिनराज।
गुण गाते हम, तुम करो, हमरे दिल पर राज॥

(ज्ञानोदय)

संकट उपसर्गों से डरकर, जिनको जीवन दुख लगता।
पाप त्यागने से जो डरते, मोक्षमार्ग से भय लगता॥
अपनी हिम्मत हारे चुके जो, टूट चुके जो बिखद्धम्नर चुके।
वो पाकर पारस का सम्बल, ऋद्धि-सिद्धि पर सँवर चुके॥१॥
दुख संकट उपसर्ग उन्हें अब, कभी सता ना सकते हैं।
उनका जीवन कुन्दन सम हो, जो पारस को भजते हैं॥
जी हाँ! ये वो ही पारस जो, जन्म बनारस लेते हैं।
अश्वसेन के राज दुलारे, वामा माँ के बेटे हैं॥२॥
मोक्ष गए सम्मेदशिखर से, तेईसवें तीर्थेश रहे।
आओ! उनकी कथा वाँच लें, जो हम सब के ईश रहे॥
भरतक्षेत्र के पोदनपुर में, जब राजा अरविन्द्र हुए।
विश्वभूति वा अनुन्धरी के, कमठ अनुज मरुभूति हुए॥३॥
दोनों राजा के मंत्री थे, दुर्जन कर्मठ रहा विष सा।
मरुभूति सुन्दर पत्नी का, स्वामी सज्जन अमृत सा॥
मरुभूति को मार कमठ ने, पत्नी पर अधिकार किया।
मरुभूति ने वज्रघोष के, हाथी वाला जन्म लिया॥४॥
फिर क्रमशः सुर रश्मिवेग सुर, वज्रनाभि नर-चक्रेश्वर।
ग्रैवेयिक अहमिन्द्र देव हो, फिर आनन्द मण्डलेश्वर॥
राजा ने मुनिराजा बनकर, तीर्थंकर प्रकृति बाँधी।
सल्लेखन कर प्राणत सुर से, इन्द्र त्याग आए काशी॥५॥
वामा माँ के आँगन में फिर, हुआ गर्भ कल्याणक था।
सोलह सपनों का मंगल फल, अश्वसेन ने वाँचा था॥

रत्नों की वर्षा सुखकारी, हुआ जन्म कल्याणक फिर।
शचि सौधर्म इन्द्र ने प्रभु को, लिया गोद में खुश होकर॥६॥
कर अभिषेक इन्द्र ने प्रभु का, नाम रखा फिर पार्श्वकुमार।
हरे रंग के बालक पारस, यौवन-क्रीड़ा किए बिहार॥
तो देखा कि तापस नाना, पंच-अग्नि तप को मचले।
सो लकड़ी कटने के पहले, पारस समझाने निकले॥७॥
बोले आप 'इसे मत काटो', पर नाना जी काटे थे।
सो दो सर्प-सर्पिणी कटकर, दो हिस्सों में बांटे थे॥
जो पारस के उपदेशों को, सुनकर स्वर्ग सिधारे थे।
पद्मावति धरणेन्द्र हुए जो, शान्ति-भाव को धारे थे॥८॥
इस विध पारस तीस वर्ष की, कुमारदशा गुजारे थे।
किन्तु एक दिन भेंट देखकर, भवसुख से वैरागे थे॥
तप कल्याणक में दीक्षा ली, साथ तीन सौ थे राजे।
गुल्मखेट में धन्यराज के, ढोल पारणा के बाजे॥९॥
यूँ छद्मस्थ चार माहों के, बाद कमठ के प्राणी ने।
दस भव के रिपु शम्बर बनकर, कष्ट दिए अभिमानी ने॥
सात दिनों तक महाभयंकर, उपसर्गों को पार्श्व छुए।
पद्मावति ने छत्र लगाया, फणारूप धरणेन्द्र हुए॥१०॥
दूर हुआ उपसर्ग कमठ का, प्रभु को केवलज्ञान हुआ।
समवसरण में दिव्यध्वनि दे, पारस को निर्वाण हुआ॥
स्वर्णभद्र की कूट शिखरजी, श्रावण शुक्ल सप्तमी को।
किए मोक्ष कल्याणक उत्सव, सबने मोक्ष सप्तमी को॥११॥
तब से अब तक पारस प्रभु के, जय-जयकारे गूँज रहे।

प्रभु जैसे उपसर्ग विजेता, बनने हम सब पूज रहे॥
क्षमा धरें भव पार करें हम, पूजा का फल यह देना।
'विद्या' के 'सुव्रत' को पारस, पारसमणि सम कर देना॥१२॥

(दोहा)

पारसमणि सोना करे, पारस पारसनाथ।
सो पारस बनने करें, हम नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्गविजेता! श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

पार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पार्श्वनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय-श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री पार्श्वनाथ का पाठ, करो दिन-रात, ठाठ से प्राणी,
हो मंगलमय कल्याणी ।

१. श्री पार्श्वनाथ कल्याणी हैं, जिनके पूजक हर प्राणी हैं।
हैं बाल ब्रह्मचारी आतम के ज्ञानी, सुख शान्ति प्रदाता स्वामी॥श्री..
२. जो नगर बनारस जन्म लिए, सम्मेदशिखर से मोक्ष गए।
उपसर्ग विजेता संकट मोचक स्वामी, हम सबके हैं वरदानी॥श्री..
३. प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता हैं, संसार मोक्ष सुख कर्त्ता हैं।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥श्री..

४. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..
५. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभुकी कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
१. भगवन पारसनाथ हमारे, हम सबको प्राणों से प्यारे।-२
जग के हो उजयारे, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
२. अश्वसेन के राज दुलारे, वामा माँ के नयन सितारे।-२
काशी में अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
३. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ।२
'सुव्रत'को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...

===

श्री महावीर दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४
१. वर्तमान शासननायक जी, महावीर भगवंता।
जिनकी कृपा बड़ी वरदानी, देती सम्यक पंथा॥
जिनसूत्रों पर चल कर पाते, समवसरण अर्हन्ता।
वर्तमान के वर्धमान को, हो नमोऽस्तु जयवंता॥ ओम्...
२. कुण्डलपुर के सिद्धारथ व, त्रिशला माँ के नंदन जी।
याद पूर्वभव कर वैरागे, बने केवली भगवन॥
पावापुर से मोक्ष पधारे, दीवाली के दीए जले।
महावीर को करके नमोस्तु, 'सुव्रत' को उपहार मिले॥ ओम्...
३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
वीर प्रभु को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्...

(पुष्पांजलिं...)

श्री महावीर पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

जय महावीर-जय महावीर,
शासननायक-जय महावीर।
जय बोलें हम महावीर की, इतना बस वरदान मिले।
महावीर से महा वीर का, बनने का बस ज्ञान मिले॥
''जियो और जीने दो'' सबको, समझ बूझकर अपनाएँ।
करें भक्ति से महा अर्चना, महावीर के गुण गाएँ॥

अष्ट द्रव्य की थाल सजाई, भक्ति भाव से खुशी-खुशी।
अगर न आए मन में प्रभु तो, अपनी होगी सुनो हँसी॥
अर्जि हमारी मर्जि तुम्हारी, अपनालो या ठुकरा दो।
आज नहीं तो कल जब चाहो, नाँव हमारी तिरवा दो॥
जय महावीर-जय महावीर, शासननायक-जय महावीर।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

यह दुनियाँ तो सूख रही पर, नयन हमारे बरस रहे।
दर्शन पूजन के प्यासे हैं, आकुल-व्याकुल तरस रहे॥
अर्पण यह जल मिले कृपा-जल, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जल जलकर इतने जल बैठे, भस्मसात ज्यों जंगल हों।
मिला न कंचन खिला न उपवन, हरो ताप अब शीतल हों॥
अर्पण चंदन त्रिशलानन्दन, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

दर्शन और प्रदर्शन करके, हम भूले प्रभु की बतियाँ।
रागी बने, नहीं वैरागी, तभी भटकते भव-गतियाँ॥
पुंज चढ़ाएँ शिव पद पाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

ना माला ना बाग बगीचा, नहीं बनें हम गुलदस्ता।
बस छोटा सा पुष्प बनें हम, जो प्रभु के पद में वसता॥

पुष्प चढ़ाएँ काम नशाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी नमक से कभी नीर से, कभी छका-छक भोगों से।
भूखे प्यासे मन बहलाया, किन्तु बचे ना रोगों से॥
क्षुधा मिटे नैवेद्य चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

ना बनना सूरज ना चंदा, ना जुगनूँ ना ही बिजली।
बस छोटा सा दीप बनें जो, करे आरती भली-भली॥
मोह मिटाने दीप चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

सम्यक् तप बिन राख हुए पर, कर्म झुलस भी ना पाए।
अब खुद को ही धूप बनाकर, कर्म जलाने हम आए॥
जगत्-भूप को धूप चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

संकल्पों की धरती पर तो, लगें सफलता के फल ही।
हमें वही संकल्प दान दो, तुम्हें चढ़ाएँ हम फल भी॥
मिले मोक्ष फल अर्पण ये फल, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥

ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

षष्ठी शुक्ल अषाढ़ को, तज अच्युत सुरधाम।
माँ त्रिशला के गर्भ में, आए वीर महान्॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला चैत्र को, जन्मे वीर जिनेश।
सिद्धारथ घर आँगने, उत्सव किए सुरेश॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अगहन दसवीं कृष्ण को, तजा मोह परिवार।
बने तपस्वी तप सजे, होती जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं मगशिरकृष्णदशम्यां तपमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दसें शुक्ल वैशाख को, पाया केवलज्ञान।
शासन-नायक बन पुजे, महावीर भगवान्॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक कृष्ण अमास को, हरे कर्मरज सर्व।
पावापुर से मोक्ष जा, दिए दिवाली पर्व॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण-अमावस्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(दोहा)

कर्म इन्द्रियाँ जीत कर, बने जितेन्द्रिय नाथ।
महावीर भगवान को, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १॥

अवधिज्ञान पाकर हुए, मृत्युंजय जिननाथ।
महावीर भगवान को, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

जिन परमावधि ज्ञान से, हो परमेष्ठी नाथ।
महावीर भगवान को, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

जिन सर्वावधि ज्ञान से, हरें विघ्न विख्यात।
महावीर भगवान को, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

अनन्तावधि जिनज्ञान से, हरे रोग दुख-रात।
महावीर भगवान को, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

कोष्ठबुद्धि जिनज्ञान से, मिले बुद्धि विख्यात।
महावीर भगवान को, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

बीजबुद्धि जिनज्ञान से, मोक्षबीज शुरुआत।
महावीर भगवान को, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी ज्ञान से, जगत-पूज्यपद प्राप्त।
महावीर भगवान को, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

संभिन्नश्रोतृ जिनज्ञान से, भेदज्ञान हो साथ।
महावीर भगवान को, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमोसंभिण्णसोदाराणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

स्वयंबुद्ध परमात्म से, मिले सिद्ध सौगात।
महावीर भगवान को, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१०॥

प्रत्येकबुद्ध परमात्म से, कर्म-वर्ग नश जात।
महावीर भगवान को, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

जिनवर बोधितबुद्ध से, हो शुभ विद्या प्राप्त।
महावीर भगवान को, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

(सखी)

जो सीधा सादा मन की, बातें जाने जन-जन की।
वो है ऋजुमति मनपर्यय, श्री महावीर प्रभु की जय॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

जो मन की जान कुटिलता, दुख व्यथा मानसिक हरता।
वो विपुलमति मनपर्यय, श्री महावीर प्रभु की जय॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्री महावीरजिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

जो दसों दिशा में चमके, अज्ञान हरे आतम के।
वो दसपूर्वित्व जिनालय, श्री महावीर प्रभु की जय॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१५॥

जो चौदह गुणस्थानी, दे ज्ञान बनाते ज्ञानी।
चौदहपूर्वित्व शिवालय, श्री महावीर प्रभु की जय॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्रायदीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

अष्टांग शुभाशुभ फल को, जो कहें करें मंगल को।
वह है अष्टांग महालय, श्री महावीर प्रभु की जय॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

जो अणिमा आदिक ऋद्धि, हम सबको दें समृद्धि।
वो पूज्य विक्रिया आलय, श्री महावीर प्रभु की जय॥

ॐ ह्रीं णमोविउव्वणपत्ताणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

(चौपाई)

विद्याधर नर संयमधारी, मंगल करें अमंगल हारी।
विद्याधर सुख के विद्यालय, महावीर स्वामी की जय-जय॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

तप बल से मुनि चलें जहाँ पर, जीव घात ना हुए वहाँ पर।
चारणऋद्धि ज्ञान हिमालय, महावीर स्वामी की जय-जय॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

बिना पठन-पाठन हों ज्ञानी, धार्मिक कृपा बड़ी वरदानी।
प्रज्ञाश्रमण करें भाग्योदय, महावीर स्वामी की जय-जय॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

तप बल से नभ में चल सकते, जीव दयाकर निज में रमते।
हैं आकाशगमन ज्ञानोदय, महावीर स्वामी की जय-जय॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

मर जा कहने पर मर जाते, पर यह बल उपयोग न लाते।
हैं आशीर्विष ऋद्धि दयोदय, महावीर स्वामी की जय-जय ॥॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२३॥

रोष नजर से जिसको देखें, वो मर जाये अतः न देखें।
ऋद्धि दृष्टिविष है जैनोदय, महावीर स्वामी की जय-जय॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(हाकलिका)

दीक्षा ले संन्यास धरें, महा कठिन उपवास करें।
पूज्य उग्रतप ऋद्धि अभय, महावीर स्वामी की जय॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

तप करके भी तन चमके, अतिशय हैं जिनशासन के।
पूज्य दीप्ततप ऋद्धि सदय, महावीर स्वामी की जय॥
ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२६॥
कर आहार निहार न हो, चमत्कार तप बल से हो।
पूज्य तप्ततप ऋद्धि निलय, महावीर स्वामी की जय॥
ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२७॥
महा-महा उपवास करें, कष्ट हरें विश्वास भरें।
पूज्य महातप ऋद्धि अजय, महावीर स्वामी की जय॥
ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२८॥
घोर तपस्या तूफानी, करके कर्म हरें ज्ञानी।
पूज्य घोरतप ऋद्धि विजय, महावीर स्वामी की जय॥
ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥
दुख दुर्भिक्ष हरें तपसे, मैत्री भाव रखें सबसे।
पूज्य घोरगुण ऋद्धि उदय, महावीर स्वामी की जय॥
ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥
जग संहारक बल पाकर, धर्म अहिंसा परमो धर।
घोरपराक्रम ऋद्धि हृदय, महावीर स्वामी की जय॥
ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

(लघु चौपाई)

महा अघोर-ब्रह्म गुण धार, करें तपस्या जग हितकार।
महा अघोर-बह्म विज्ञान, जय-जय महावीर भगवान॥
ॐ ह्रीं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥
जिनका तन छूकर के लोग, स्वस्थ मस्त हों शीघ्र निरोग।
आमर्ष-औषधि ऋद्धि महान, जय-जय महावीर भगवान॥
ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३३॥

जिनके लार थूक कफ आदि, हरें रोग काया की व्याधि।
खेल्ल-औषधि ऋद्धि महान, जय-जय महावीर भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

जिनका पाकर तप संयोग, बूँद पसीना हरले रोग।
जल्ल-औषधि ऋद्धि महान, जय-जय महावीर भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३५॥

जिनका पाकर तपो प्रभाव, रोग हरे मल मूत्र स्वभाव।
विप्रुष-औषधि ऋद्धि महान, जय-जय महावीर भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

छूकर जिनकी देह समीर, बहकर करती स्वस्थ शरीर।
सर्वौषधि है ऋद्धि महान, जय-जय महावीर भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३७॥

बिना थके मुहूर्त में पूर्ण, श्रुत चिंतन मन से सम्पूर्ण।
पूज्य मनोबल ऋद्धि महान, जय-जय महावीर भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

बिना थके मुहूर्त में पूर्ण, श्रुत वाचन कर लें संपूर्ण।
पूज्य वचनबल ऋद्धि महान, जय-जय महावीर भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो वचिबलीणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(विष्णु)

लोक कनिष्ठा पर रखने का, जिसमें सम्बल है।
कायोत्सर्ग करें विध-विध के, वही कायबल है॥
मिले कायबल कायबली को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

रूखा भोजन भी हाथों में, बने दुग्ध जैसा।
देख तपोबल के प्रभाव को, अचरज हो ऐसा॥
सबको क्षमा क्षीरस्रावी दें, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

वश कर रसना षट्-रस त्यागें, लें नीरस आहार।
फिर भी हाथों में घृत जैसा, बने शक्ति दातार॥
प्रेम दया दे सर्पिस्रावी, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

रूखा सूखा भोजन भी तो, हाथों में आकर।
मधुर मिष्ठ मधु जैसा होता, तप प्रभाव पाकर॥
मधुस्रावी से सरस धर्म हो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

जिस प्रभाव से विष भी अमृत, जैसा हो जाता।
शत्रु-वर्ग का कपट-जाल भी, सफल न हो पाता॥
ज्ञानामृत सी अमृतस्रावी, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

ऋषि के शेष भोज्य से चक्री, सेना पेट भरे।
पड़े न कम वा चार हाथ में, सुख से वास करे॥
यह अक्षीण-महानस-आलय, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

हीयमान अवगुण जो करके, वर्धमान होते।
उनके चरण जहाँ भी पड़ते, खुद अतिशय होते॥
अतिशयकारी वर्धमान गुण, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

ढाईद्वीप से सिद्धशिला तक, क्षेत्र सिद्ध निर्वाण।
कृत्रिमाकृत्रिम सिद्ध-आयतन, स्वस्थ रखें तन प्राण॥
तन मन चेतन स्वस्थ बनाने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

महावीर शासन में गौतम- गणधर से लेकर।
विद्यागुरु तक आचार्यों की, परम्परा भजकर॥
ऋद्धि-सिद्धि प्रभु करुणा पाने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप वीरा, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' संभालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

महावीर जिनवर प्रभु, रखते सबका ध्यान।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय पूर्णार्घं...।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(ज्ञानोदय)

जिनशासन की अनादिधारा, तीर्थंकर प्रभु चला रहे।
भव्य-जीव तो इस धारा में, निज को धुला रहे॥
तीर्थंकर चौबीस जिनेश्वर, समय-समय पर जन्म धरें।
वृषभनाथ से महावीर तक, जिनशासन को धन्य करें॥१॥
अंतिम प्रभु श्री वर्धमान जी, वर्तमान जिननायक हैं।
जिनके शासन तीर्थकाल में, आज तत्त्व सुख दायक हैं॥
आओ! उनकी कथा कहें जो, पंचम बालयतीश रहे।
माँ त्रिशला सिद्धार्थ राज के, श्री नंदन जगदीश रहे॥२॥
जी हाँ! ये वो ही स्वामी जो, पुत्र भरत चक्री के थे।
जीव भील का बना मरीचि, नाती वृषभनाथ के थे॥
गुरु-भक्ति से वृषभनाथ के, साथ बने मुनि दीक्षा ली।
लेकिन परिषह सह न सके सो, मिथ्यामत की शिक्षा ली॥३॥
परिव्राजक की दीक्षा लेकर, मिथ्यापथ आसीन हुए।
कल्पित आदिक तत्त्व रचाकर, जन्म-मरण लवलीन हुए॥
किन्तु सिंह के जीवन में, जब मुनियों का उपदेश सुना।
सिंह प्राप्त कर सम्यग्दर्शन, सिंहकेतु सुरदेव बना॥४॥
कनकोज्ज्वल सुर हरिषेण सुर, प्रियमित्र सुर नंद हुआ।
जो तीर्थंकर प्रकृति बाँध के, सल्लेखन कर इन्द्र हुआ॥
सोलह सपने देकर जिनके, गर्भ जन्म कल्याण हुए।
शचि ने सम्यग्दर्शन पाया, जन्मों के अभिषेक हुए॥५॥

नाम **वीर** श्री **वर्धमान** रख, देवराज के नृत्य हुए।
संजय विजय वीर दर्शन कर, मुनि जब निःसंदेह हुए॥
तो फिर **सन्मति** नामकरण कर, बाल्यकाल के खेल हुए।
संगम सुर से **महावीर** का, नाम प्राप्त कर ख्यात हुए॥६॥
तीस वर्ष के कुमारकाल को, व्यतीत कर भव भोग तजे।
नहीं सुहाई हल्दी मेंहदी, विवाह मण्डप भी न सजे॥
ज्यों वैराग्य हुआ त्यों ही तो, तप कल्याणक पर्व हुआ।
कूलग्राम के कूलराज के, खीर पारणा हर्ष हुआ॥७॥
उज्जयिनी में महारुद्र ने, महा घोर उपसर्ग किए।
हार मानकर **अतिवीर** वा, **महतिपूज्य** दो नाम दिए॥
साँकल बँधी चंदना ने फिर, किया वीर का ज्यों दर्शन।
बन्धन टूटे तो वीरा का, करे चंदना पड़गाहन॥८॥
विधिपूर्वक आहार दान दे, पर्व चंदना ने पाए।
बारह वय छद्मस्थ विताकर, केवलज्ञान प्रभु पाए॥
किन्तु हुई ना दिव्यदेशना, तब गौतम को ज्ञान मिला।
मुनि बन प्रथम बने गणधर जो, कुल ग्यारह का साथ मिला॥९॥
बनी चंदना प्रथम आर्यिका, समवसरण की सभा सजी।
विपुलाचल पर दिव्यध्वनि दे, समवसरण की सभा तजी॥
तीस वर्ष कैवल्यकाल फिर, योगनिरोध किए स्वामी।
पावापुर के सरवर से फिर, मोक्ष गए अंतर्यामी॥१०॥
कार्तिक कृष्ण आमवस प्रातः, प्रभु निर्वाण पधारे थे।
हुआ मोक्ष कलयाणक उत्सव, लाडू भक्त चढ़ाए थे॥
उसी शाम को गौतम गणधर, केवलज्ञान प्रकट करते।

सो संध्या में दीप जलाकर, घर-घर दीपोत्सव करते॥११॥
तब से चले वीरशासन यह, हम सबका उद्धार करे।
भव-भव तक हम ऋणी रहेंगे, हम पर प्रभु उपकार करें॥
ऋद्धि-सिद्धि-समृद्धि पाएँ, पर्व दशहरा दीवाली।
'विद्या' के 'सुव्रत' यह चाहें, मिले सभी को खुशहाली॥१२॥

(सोरठा)

महावीर भगवान, हम भक्तों के प्राण हैं।
करते नमोऽस्तु ध्यान, होते निज कल्याण हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

महावीर स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, महावीर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय—श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री महावीर का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
१. श्री महावीर जिनराजा जी, हम सबके हो महाराजा जी।
हो वर्तमान के शासननायक स्वामी, जय-जय हो अंतर्यामी॥
श्री महावीर का पाठ...।
२. सिद्धार्थ कुँवर तुम वीरा हो, माँ त्रिशला के तुम हीरा हो।
प्रभु पावापुर से दिए दिवाली दानी, हम चंदन सम प्रणमामि॥

श्री महावीर का पाठ...।
३. प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता हैं, संसार मोक्षसुख कर्त्ता हैं।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥
श्री महावीर का पाठ...।
४. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥
श्री महावीर का पाठ...।
५. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥
श्री महावीर का पाठ...।

आरती

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
१. महावीर जिनशासन स्वामी, केवलज्ञानी अंतर्यामी-२
दीवाली वरदानी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
२. सिद्धारथ के राज दुलारे, त्रिशला की आँखों के तारे-२
कुण्डलपुर अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ-२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

श्री बाहुबली दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४

(जोगीरासा)

चौबीसी में नहीं हैं किंतु, बड़भागी हैं न्यारे।
तीर्थंकर भी नहीं है किंतु, सबके नयन सितारे॥
सकल विश्व में सादर जिनको, भक्त नमोऽस्तु गूँजें।
सो श्रद्धालु भाव भक्ति से, बाहुबली को पूजें॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः...।

नगर अयोध्या जन्म लिए तो, वृषभनाथ हर्षाए।
मात सुनंदा की गोदी में, बाहुबली जब आए॥
निज अधिकार माँगने हेतु, बने विरागी नेता।
वार्षिक कायोत्सर्ग किए फिर, मुनि उपसर्ग विजेता॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः...।

नख से शिख तक चढ़ी लताएँ, बने घोंसले बाँमी।
कामदेव के तन पर खेलें, साँप बने विश्रामी॥
बाहुबली जी खड्गासन में, हुए सुशोभित स्वामी।
अष्टापद से मोक्ष गए सो, 'सुव्रत' करें नमामि॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः...।

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
बाहुबली को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः...।

(पुष्पांजलिं...)

श्री बाहुबली पूजन

स्थापना (दोहा)

बाहुबली कामदेव हैं, जिनशासन के धाम।
सबसे ऊँची मूर्ति को, नमोऽस्तु करें प्रणाम॥

(शंभु)

जय बाहुबली! जय गोम्मटेश!, जय कायोत्सर्ग प्रणेता की।
जय वृषभ सुनन्दा नन्दन की, परिषह उपसर्ग विजेता की॥
जैनासन में हे निर्मोही!, तुम सबको मोहित खूब करो।
हम मोहित तेरी मुद्रा पर, तुम हम पर दया जरूर करो॥
माँ पिता भाई बन्धु छोड़े, धन राज्य प्रजा से मुख मोड़े।
प्रभु अर्जी हमारी सुनकर के, चित् ज्ञान छींटे मारो थोड़े॥
तो आत्म हमारी जाग उठे, फिर तजे मोह की निद्रा को।
अब करके नमोऽस्तु पूज रहे, प्रभु बाहुबली की मुद्रा को॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

इस दुनियाँ के रिश्ते नाते, हैं कच्ची माटी के कलशा।
ये साथ दूर तक दे देंगे, विश्वास नहीं इनका पलका॥
ये मतलब के रिश्ते तजने, प्रासुक जल सादर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जब चक्र चला अपने मारें, तो किन पर हम विश्वास करें।
इसलिए त्यागकर दुनियाँ को, वैराग्य धरें संन्यास धरें॥
हम बनें तपस्वी तुम जैसे, सो चंदन सादर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

तुम किए तपस्या ऐसी कि, पग से सिर तक लिपटी बेलें।
तब बने घौंसले बांबी भी, तब तन पर सर्पादिक खेलें॥
तुम डरे नहीं हम डरें नहीं, सो अक्षत सादर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्री श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

धन दौलत नारी के खातिर, जब भाई-भाई को मार रहा।
यह अहं ब्रह्म की शल्य रही, किसको अर्हम् से प्यार यहाँ॥
हम ब्रह्म-विहारी तुम सम हों, सो पुष्पांजलि ये अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

उपवास वर्षभर कर तुमने, आहार किया न पिया पानी।
जो तीर्थंकर भी कर न सके, वो किए साधना तूफानी॥
हम भूख-प्यास तुम सम त्यागें, नैवेद्य तभी तो अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

जल मल्ल नेत्र युद्धों में भी, अग्रज चक्रेश्वर टिक न सके।
यह घोर स्वार्थ का अँधियारा, जिसमें निज पर कुछ दिख न सके॥
तज स्वार्थ जलाएँ निज ज्योति, सो दीप आरती अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

अपनों ने सगा बना करके, फिर दगा दिया फिर दाग दिया।
उपसर्ग परीषह सहकर भी, तुमने अपने से राग किया॥
संकल्प आप सम डिग न सके, सो धूप दशांगी अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

उपकार करोगे ना जब तक, तब तक तो चरण न हम छोड़ें।
तुम ठुकराओ या अपनाओ, विश्वास कभी न हम तोड़ें॥
हम चलें आपके कदमों पर, सो श्रीफल सादर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(अर्द्ध हरिगीतिका)

जय कर्म इन्द्री जो करें जिन, धर्म के वो प्राण हैं।
बाहुबली को कर नमोऽस्तु, हो रहे कल्याण हैं॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १॥

जो अवधिज्ञानी आतमा, मृत्युंजयी भगवान हैं।
बाहुबली को कर नमोऽस्तु, हो रहे कल्याण हैं॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि के नाथ हैं जो, चेतना विज्ञान हैं।
बाहुबली को कर नमोऽस्तु, हो रहे कल्याण हैं॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि सर्वज्ञ जो, सर्वार्थसिद्धि यान हैं।
बाहुबली को कर नमोऽस्तु, हो रहे कल्याण हैं॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

जो हैं अनन्तावधि विधाता, मुक्ति के वरदान हैं।
बाहुबली को कर नमोऽस्तु, हो रहे कल्याण हैं॥

ॐ ह्रीं णमोअणंतोहिजिणाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

जो कोष्ठबुद्धि के सहारे, नासते अज्ञान हैं।
बाहुबली को कर नमोऽस्तु, हो रहे कल्याण हैं॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

(सखी)

जो बीज बुद्धि के स्वामी, हम उनके हैं अनुगामी।
श्री बाहुबली जिनंदा, लो नमोऽस्तु दो आनंदा॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

दो पदानुसारी शिक्षा, हम शीघ्र धरें जिनदीक्षा।
श्री बाहुबली जिनंदा, लो नमोऽस्तु दो आनंदा॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

संभिन्नश्रोतृ की ज्योति, दो धार्मिक हीरा मोती।
श्री बाहुबली जिनंदा, लो नमोऽस्तु दो आनंदा॥

ॐ ह्रीं णमोसंभिण्णसोदाराणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

हे! स्वयंबुद्ध परमेष्ठी, दो क्षायिक सम्यग्दृष्टि।
श्री बाहुबली जिनंदा, लो नमोऽस्तु दो आनंदा॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१०॥

प्रत्येकबुद्ध परमात्मा, भक्तों को करो महात्मा।
श्री बाहुबली जिनंदा, लो नमोऽस्तु दो आनंदा॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

हे! बोधितबुद्ध विरागी, हम चरणों के अनुरागी।
श्री बाहुबली जिनंदा, लो नमोऽस्तु दो आनंदा॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

(चौपाई)

ज्ञान मनःपर्यय ऋजुमति जो, हमें दान दे अभय विजय को।
कामदेव श्री बाहुबली जी, तुम्हें नमोऽस्तु भली-भली सी॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

ज्ञान विपुलमति मनपर्यय का, झंडा दे संकेत विजय का।
कामदेव श्री बाहुबली जी, तुम्हें नमोऽस्तु भली-भली सी॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्री महावीरजिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

दसपूर्वों के ज्ञायक जैसा, हुआ न होगा उनके जैसा।
कामदेव श्री बाहुबली जी, तुम्हें नमोऽस्तु भली-भली सी॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥१५॥

चौदहपूर्वों के विज्ञानी, रचें मोक्ष का नगर निशानी।
कामदेव श्री बाहुबली जी, तुम्हें नमोऽस्तु भली-भली सी॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्रायदीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

प्रभु अष्टांगनिमित्तक मानो, उनके जैसा कोई न जानो।
कामदेव श्री बाहुबली जी, तुम्हें नमोऽस्तु भली-भली सी॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

ऋद्धिविक्रिया के ऋषियों ने, जग कल्याण किया मुनियों ने।
कामदेव श्री बाहुबली जी, तुम्हें नमोऽस्तु भली-भली सी॥

ॐ ह्रीं णमोविउव्वणपत्ताणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

(अर्द्ध ज्ञानोदय)

सुव्रतधर नर विद्याधर जो, पाप कर्म संहार करें।
कामदेव श्री बाहुबली को, नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

चारण ऋद्धीश्वर के चेतन, विघ्न विनाशक प्यार करें।
कामदेव श्री बाहुबली को, नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

प्रज्ञाश्रमण महादेवा जी, विजय कर्म संग्राम करें।
कामदेव श्री बाहुबली को, नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

गगन-विहारी कमल-विहारी, अपनी ओर विहार करें।
कामदेव श्री बाहुबली को, नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

धारी आशीर्विष अनगारी, सुखी सभी परिवार करें।
कामदेव श्री बाहुबली को, नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२३॥

दृष्टिर्विष के महा देवता, भक्त तुम्हें जोहार करें।
कामदेव श्री बाहुबली को, नमोऽस्तु बारम्बार करें॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(अर्द्ध शंभू)

जो उग्र तपस्या ऋषि करते, वो कर्म शत्रु पर विजय करें।
हे! मात सुनंदा के नंदन, श्री बाहुबली को नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

प्रभु दीप्त तपों के साधन से, हम भक्तों का उद्धार करें।
हे! मात सुनंदा के नंदन, श्री बाहुबली को नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२६॥

जिन तप्ततपों की ज्वाला से, तुम सम निज शृंगार करें।
हे! मात सुनंदा के नंदन, श्री बाहुबली को नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२७॥

दो महातपों की आहूती, हम कर्म हवन का यज्ञ करें।
हे! मात सुनंदा के नंदन, श्री बाहुबली को नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥२८॥

प्रभु घोरतपों की घोर घटा, उमड़ा-घुमड़ा बौछार करें।
हे! मात सुनंदा के नंदन, श्री बाहुबली को नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

हे! घोरगुणों के भण्डारी, हम पर भी कुछ उपकार करें।
हे! मात सुनंदा के नंदन, श्री बाहुबली को नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

(दोहा)

घोरपराक्रम के धनी, खड़गासन के धाम।
हम सबके हैं लाड़ले, बाहुबली भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

घोरब्रह्मगुण धारकर, बने ब्रह्म-विज्ञान।
हम सबके हैं लाड़ले, बाहुबली भगवान॥

ॐ ह्रीं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

आमर्ष-औषध की दवा, फूँकें धार्मिक प्राण।
हम सबके हैं लाड़ले, बाहुबली भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३३॥

बने खेल्ल-औषध गुणी, करते स्वस्थ जहान।
हम सबके हैं लाड़ले, बाहुबली भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

जल्ल-औषधी धार के, धर्मों के धनवान।
हम सबके हैं लाड़ले, बाहुबली भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३५॥

विप्रुष-औषध से सुखी, होकर करो विधान।
हम सबके हैं लाड़ले, बाहुबली भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

(अर्द्ध शुद्धगीता)

धरें जो सर्व-औषध को, हमें नीरोग करते हैं।
वही बाहुबली उनको, नमोऽस्तु भक्त करते हैं॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥३७॥

सकल धारे मनोबल जो, हमें जयवंत करते हैं।
वही बाहुबली उनको, नमोऽस्तु भक्त करते हैं॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

वचनबल की महा शक्ति, हमें भी दान करते हैं।
वही बाहुबली उनको, नमोऽस्तु भक्त करते हैं॥

ॐ ह्रीं णमो वचिबलीणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

बाहुबली सम कायबली बन, कर्म हरें आहा।
ओम् ह्रीं बाहुबली जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

क्षीरस्रावि से क्षमा दान लें, उत्तम हों आहा।
ओम् ह्रीं बाहुबली जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

सर्पिस्रावि सर्वज्ञ बनाते, सर्व सुखी आहा।
ओम् ह्रीं बाहुबली जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

मधुरस्रावि मन मैल मिटाओ, मुक्त करो आहा।
ओम् ह्रीं बाहुबली जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

अमृतस्रावी अमर बनाते, अजर करें आहा।
ओम् ह्रीं बाहुबली जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

पा अक्षीण-महानस-आलय, दें आलय आहा।
ओम् ह्रीं बाहुबली जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

वर्धमान गुण बाँट रहे हैं, वीर गुणी आहा।
ओम् ह्रीं बाहुबली जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

सिद्ध-आयतन सिद्ध बनाते, सिद्धालय आहा।
ओम् ह्रीं बाहुबली जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

णमो लोए सव्वसाहूणं के, दर्शन हों आहा।
ओम् ह्रीं बाहुबली जिनेन्द्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

बाहुबली हैं कामदेवा, केवली जिननाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' संभालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

बाहुबली स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीबाहुबली-जिनेन्द्राय पूर्णार्घं...।

जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

तीर्थंकर से पूर्व जो, पाए पद निर्वाण।
दुनियाँ में यशवान हैं, बाहुबली भगवान॥

(ज्ञानोदय)

आदि प्रवर्तक आदिनाथ की, यशस्वती पटरानी थी।
तथा दूसरी रही सुनन्दा, सुन्दर बड़ी सयानी थी॥
दिया भरत को जन्म प्रथम ने, पहले हुए चक्रवर्ती।
तथा सुनन्दा बाहुबली को, जन्मीं तो पूजे धरती॥१॥
राज्य भरत को दिया प्रभु ने, बाहुबली युवराज बने।
आदिनाथ ने दीक्षा ली फिर, मुक्तिवधू के राज बने॥
चक्ररत्न पा भरतेश्वर फिर, करने को दिग्विजय चले।
जब लौटे तो नगर द्वार पर, चक्र रुका जो खूब खले॥२॥
जिसका मतलब शेष रहा है, वश करना भ्राताओं को।
उनको आज्ञा मान्य नहीं सो, तजें सभी बाधाओं को॥
सबने ले ली जिन दीक्षा पर, बाहुबली प्रतिकार किए।
हम परतन्त्र बनें क्यों अब जब, पिता बराबर राज्य दिए॥३॥
दूतों को फटकारा ज्यों ही, तभी युद्ध की हवा चली।
एक तरफ तो भरत सैन्य था, एक तरफ थे बाहुबली॥
तभी मंत्रियों ने समझाया, लड़ते हो क्यों आपस में।
बिगड़ेगा तो कुछ न तुम्हारा, प्रजा पड़ेगी आफत में॥४॥
श्रेष्ठ यही कि युद्ध टालकर, बचिए जन-धन हानि से।
या फिर नेत्र मल्ल जल वाले, युद्ध करो आसानी से॥

विजय सुनिश्चित हो जाने पर, होगी फिर टकरार नहीं।
हुआ फैसला युद्ध देखने, मंत्र मुग्ध तैयार सभी॥५॥
तब जल मल्ल नेत्र युद्धों में, बाहुबली जब विजित हुए।
तभी उन्हीं पर चक्रेश्वर जी, चक्र चलाकर कुपित हुए॥
हुआ चक्र से बाल न बाँका, बाहुबली पर आहत थे।
हाय! हाय! यह दुनियाँ जिसमें, रिश्ते नाते स्वारथ के॥६॥
भैया का व्यवहार देख यों, बने विरागी बाहुबली।
दीक्षा लेकर बने तपस्वी, खड़े हुए मुनि बाहुबली॥
लता घौंसले सर्पादिक से, सत्कारे मुनि बाहुबली।
एक वर्ष उपवास देखकर, चक्री पूजे बाहुबली॥७॥
ज्यों भरतेश्वर ने पूजा तो, शल्य मिटाए बाहुबली।
मुझसे भैया दुखी हुआ ये, बात भुलाए बाहुबली॥
जैसे ही निशल्य हुए तो, बने केवली बाहुबली।
कर विहार कैलाश अचल से, मोक्ष गए प्रभु बाहुबली॥८॥
भले मोक्ष प्रभु चले गए पर, दिखें सामने बाहुबली।
इसीलिए तो जग मंदिर में, खूब पुजें प्रभु बाहुबली॥
गोम्मट राजा ने बनवाए, सबसे ऊँचे बाहुबली।
तभी गोम्मटेश्वर कहलाए, सबसे सुन्दर बाहुबली॥९॥
मुक्तिवधू संग मस्त हुए वो, दृश्य हमें कब झलकेंगे।
तुम बिन हम ना रह पाएंगे, सो चरणों में धमकेंगे॥
हमें बुला लो या आ जाओ, अर्जी यही हमारी है।
हमने अपना फर्ज निभाया, अब तो आपकी बारी है॥१०॥
फर्ज निभाते हैं हम अपना, चरणों में सर रखने का।

क्या तेरा भी फर्ज नहीं है, हाथ शीश पर रखने का॥
सदा रहे आशीष शीश पर, रात दिना बस बाहुबली।
बाहुबली बनने को 'सुव्रत', पूज रहे प्रभु बाहुबली॥११॥

(दोहा)

सवा पाँच सौ धनुष की, बाहुबली की देह।
महा बिम्ब के गीत गा, हमको मिले विदेह॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

बाहुबली स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, बाहुबली जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा

(लय-श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री बाहुबली का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥

१. श्री बाहुबली उपसर्गजयी, जिनके अनुयायी हों विजयी।
हैं कामदेव खड्गासन वाले स्वामी, अध्यात्म भेद विज्ञानी॥श्री..

२. जो नगर अयोध्या जन्म लिए, फिर पोदनपुर के योग हुए।
पर भरत भ्रात से युद्ध विजय कर स्वामी, झट हुए विरागी ज्ञानी॥श्री..

३. जब खड्गासन में लीन रहे, तब एक वर्ष उपसर्ग सहे।
सो बने घोंसले बाँमी बेलें तन पर, उपसर्ग विजेता जिनवर॥श्री..

४. सामान्य-केवली मुक्त हुए, श्री अष्टापद को भक्त छुए।
प्रभु मात सुनंदा आदिनाथ के बेटे, हम जिन चरणों में बैठे॥श्री..

५. प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता हैं, संसार मोक्षसुख कर्त्ता हैं।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥श्री..
६. आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..
७. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

आरती

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
१. बाहुबली भगवान हमारे, खड्गासन में सबसे प्यारे। -२
जैनासन के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया ॥ करूँ...
२. वृषभनाथ के राज दुलारे, मात सुनंदा नयन सितारे।-२
अयोध्या में अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. भाई भरत की शल्य मिटाए, फिर अपना चैतन्य सजाए।-२
अष्टापद के ब्रह्मा, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
५. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

महासमुच्चय जयमाला

(दोहा)

वीतराग विज्ञानमय, जिनका निज संन्यास।
सूर्य चाँद से पूज्य है, जिनका ज्ञान प्रकाश॥
विश्व विभूति की बढ़े, जिन चरणों से लाज।
तीर्थंकर चौबीस वे, हम भी पूजें आज॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! **वृषभनाथ** की, हुए प्रथम जो तीर्थंकर।
सागर तक वसुधा को तजकर, बने स्वयंभू क्षेमंकर॥
परम दयालु निर्दय बनकर, किए भस्म मोहादिक को।
निकट आपके आने हम भी, करें नमोऽस्तु चरणादिक को॥ १॥

जय हो! जय हो! **अजितनाथ** की, रिपु-विजयी मृत्युंजय की।
जिन-प्रभाव से बन्धुवर्ग ने, शत्रु धरा निज-पर जय की॥
सार्थक नाम अमंगल हर्त्ता, भव्य कमल विकसित करते।
अपराजित! अपराजित बनने, तुमको नमोऽस्तु हम करते॥ २॥

जय हो! जय हो! **शम्भव प्रभु** की, दुखहारक सुखकारक की।
भोग-विषय तृष्णा रोगों के, हर्त्ता आत्म चिकित्सक की॥
गुण गाने में दक्ष न कोई, तो गुणगान करें क्या हम?
अहंकार ममकार मिटाने, करते नमोऽस्तु फिर भी हम॥ ३॥

जय हो! जय हो! **अभिनन्दन प्रभु**, अंतर-बाह्य निरम्बर की।
क्षमा सखी सह दया-वधू ले, चुन ली राह दिगम्बर की॥
नश्वर तन में कुछ ना अपना, आसक्ति तज हित होता।
तत्त्वज्ञान को शाश्वत सुख को, नमोऽस्तु करने मन होता॥ ४॥

जय हो! जय हो! **सुमतिनाथ** की, ऋद्धि-सिद्ध के दायक की।
परम भेद-विज्ञानी सार्थक, आत्म ज्योति के नायक की॥
तजे अपेक्षा और उपेक्षा, दिशा-दशा को जो बदलें।
अन्तर दीप जलाने हम तो, जिनको नमोऽस्तु भी कर लें॥ ५॥

जय हो! जय हो! **पद्मनाथ** की, सुन्दर निर्मल सूरत की।
हुए भव्य कमलों में शोभित, सूरज सी चिन्मूरत की॥
सरस्वती लक्ष्मी शान्ति के, योग सर्व हित जो धरते।
चरण कमल भज, मोक्षमहल को, पल पल नमोऽस्तु हम करते॥ ६॥

जय हो! जय हो! **सुपार्श्वनाथ** की, जो अविनाशी स्वस्थ हुए।
भोग प्रयोजन नहीं हमारा, भोगों से तो कष्ट हुए॥
सभी मृत्यु से डरते लेकिन, माँ सी तुम करते रक्षा।
निजी प्रयोजन सिद्ध करें हम, इससे नमोऽस्तु की इच्छा॥ ७॥

जय हो! जय हो! **चंद्रनाथ** की, जिनसा तप-धन त्याग नहीं।
चंदा जैसे शीतल हैं पर, चंदा जैसा दाग नहीं॥
रहे सूर्य से बहु तेजस्वी, पर सूरज सम आग नहीं।
आग दाग हर वीतराग को, नमोऽस्तु करना राग नहीं॥ ८॥

जय हो! जय हो! **सुविधिनाथ** की, सुविधि कहें जो शिवपथ की।
अनेकान्त का दया धर्म दे, शुद्धातम उद्घाटित की॥
क्रोध वैर एकान्त धर्म तज, जिन-शासन जीवंत किया।
शत्रु विरोध त्यागने हमने, नमोऽस्तु जय-जयवंत किया॥ ९॥

जय हो! जय हो! **शीतल प्रभु** की, करें चराचर शीतल जो।
जो शीतलता प्रभु से मिलती, चंदन चंदा में ना वो॥
विषय काम धन सुत तृष्णा की, ज्वाला गंगाजल न हरे।

सम्यक् श्रम से आत्मप्रीति को, नमोऽस्तु कर भी मन न भरे॥ १०॥
जय हो! जय हो! **श्रेयनाथ** की, विघ्न हरें जो राह करें।
मधुर वचन से मोक्षमार्ग दें, ज्ञानावरणी आह हरें॥
न्याय-बाण के ब्रह्म-अस्त्र से, आतम के सम्राट हुए।
कष्ट विघ्न बाधाएँ हरने, नमोऽस्तु कर निज ठाठ हुए॥ ११॥
जय हो! जय हो! **वासुपूज्य** की, इन्द्र-पूज्य जग नायक की।
जिन्हें न पूजा निन्दा से कुछ, किन्तु शुद्धि हो पूजक की॥
सिन्धु पुण्य में बिन्दु पाप सम, पूजक की सावद्य क्रिया।
फिर भी 'पुण्यफला' बनने को, नमोऽस्तु बारम्बार किया॥ १२॥
जय हो! जय हो! **विमलनाथ** की, जो निज-पर उपकारक हैं।
अंतरंग बहिरंग दोष के, जो निष्पृह हो हारक हैं॥
विमल ज्योति से कर्म पटल को, पूर्ण हटाने के अवसर।
आत्म सूर्य को उदित कराने, करते नमोऽस्तु हम झुककर॥ १३॥
जय हो! जय हो! **अनन्तनाथ** की, अनन्त गुण भण्डार भरे।
तन की श्रम जल भोग नदी को, तप रवि से परिहार करे॥
भक्त-पुरुष भव पार उतरते, अभक्त जन भव दुखी हुए।
दुखी न हों भव पार उतरने, कर नमोऽस्तु हम सुखी हुए॥ १४॥
जय हो! जय हो! **धर्मनाथ** की, धर्म-तीर्थ प्रतिपादक की।
भव्य सितारों के जो चंदा, कर्म-भर्म संहारक की॥
नाथ! आपकी चेष्टाओं के, दर्शन हुए प्रसन्न हुए।
देही हम भी बनें विदेही, अतः नमोऽस्तु कर धन्य हुए॥ १५॥
जय हो! जय हो! शान्तिनाथ की, प्रजा सुरक्षक राज हुए।
धार सुदर्शन चक्र विजय कर, चक्रवर्ति अधिराज हुए॥

धर्मचक्र धर समाधिचक्र से, कर्मचक्र हर शुद्ध हुए।
विश्वशान्ति को आत्मशान्ति को, हम नमोऽस्तु करबद्ध हुए॥ १६॥
जय हो! जय हो! कुन्थुनाथ की, तीन-तीन पद धारी की।
विषयाशा तज बने तपस्वी, लोकालोक निहारी की॥
जीव मात्र के परम हितैषी, कष्ट निवारक शिवधामी।
करुणा कर करुणाकर! बनने, है नमोऽस्तु है प्रणमामि॥ १७॥
जय हो! जय हो! अरहनाथ की, तृष्णा जल जो सुखा दिए।
मोह पाप यम गर्व सैन्य का, डमरू बाजा बजा दिए॥
कामदेव चक्री तीर्थंकर, रत्नत्रय धर मुक्त हुए।
विद्यारथ से मुक्तिपथ को, हम नमोऽस्तु में युक्त हुए॥ १८॥
जय हो! जय हो! मल्लिनाथ की, चमत्कार उद्धार किए।
कर्मेन्धन को ध्यान अग्नि से, जला आत्म श्रृंगार किए॥
सर्व जगत् सर्वज्ञ-भक्त बन, नम्रीभूत शरण आगम।
मोहमल्ल की शल्य हरण को, करें चरण में नमोऽस्तु हम॥ १९॥
जय हो! जय हो! मुनिसुव्रत प्रभु, नाथ अनाथों के स्वामी।
मुनिपुंगव जो नक्षत्रों के, बीच चाँद सम कल्याणी॥
मोरकण्ठ सम देह सुगंधित, गए मोक्ष शाश्वत सुख में।
मोह शनीश्चर संकट हरने, नमोऽस्तु करके हम खुश हैं॥ २०॥
जय हो! जय हो! नमिनाथ की, भक्तों के आराध्य रहे।
चित्परिणाम शुद्ध करने को, साधक के शिव साध्य रहे॥
श्रायस पथ पर बने दयालु, निःश्रेयस निर्वाण रहे।
आप सुनो या नहीं सुनो पर, हम तो नमोऽस्तु कर हि रहे॥ २१॥
जय हो! जय हो! नेमिनाथ की, नीलकमल से नैन रहे।

णमो जिणाणं, णमो जिणाणं, चरण ताकते जैन रहे॥
राजुल राज-रमा के त्यागी, आत्म रसिक गिरनार चढ़े।
निज अर्हंत अवस्था पाने, कर नमोऽस्तु हम पाँव पड़ें॥ २२॥
जय हो! जय हो! पार्श्वनाथ की, अद्वितीय पौरुष जिनका।
वज्रपात आधी तूफां से, बाल न बाँका हो जिनका॥
लोहा स्वर्ण बनाते पारस, पर पारस पारस करते।
कर्म कीच हर पारस बनने, नमोऽस्तु सादर हम करते॥ २३॥
जय हो! जय हो! महावीर की, जो जग में विख्यात हुए।
जिनके सूत्र जियो जीने दो, अब भी तो जयवंत हुए॥
प्रातिहार्य पा जिनशासन का, शंख फूँक ऐलान करें।
आप रहो या नहीं रहो हम, कर नमोऽस्तु सम्मान करें॥ २४॥
ये चौबीसों तीर्थंकर प्रभु, मुक्ति वल्लभा कहलाते।
नवग्रह उनका क्या कर लें जो, कर्म परिग्रह नशवाते॥
अतः सभी जग कार्य छोड़कर, चौबीसी को नमन करो।
अब तक जो शुभ कार्य किया ना, वो करके निज रमण करो॥ २५॥
दीप आपका ज्योति आपकी, हम तो बस जलते जाएँ।
राह आपकी शरण आपकी, हम तो बस चलते जाएँ॥
शब्द आपके भाव आपके, हम लिखते पढ़ते जाएँ।
फूल आपका बाग आपका, हम खिलते महके जाएँ॥ २६॥
गीत तुम्हीं संगीत तुम्हीं हो, हमें बाँसुरी बन बजना।
भक्ति समर्पण के रत्नों से, चिदानन्द से अब सजना॥
यही भावना बस 'सुव्रत' की, सिर पर प्रभु आशीष रहे।
प्राण भले ही निकल जाएँ पर, प्रभु चरणों में शीश रहे॥ २७॥

(सोरठा)

श्वांस-श्वांस में वास, चौबीसों जिनराज हों।
यही भक्त संन्यास, निज स्वभाव से काज हों।
होगी अपनी जयोऽस्तु, चौबीसों के नाम भज।
सादर करके नमोऽस्तु, निज शृंगारित साज सज॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो महा-अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

चौबीसों स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
विद्या गुरु के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य (हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-खंदारजी-चंदेरी-हाटकापुरा-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारणऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे-भरतक्षेत्रे-आर्यखण्डे-भारतदेशे-मध्यप्रदेशे-......जिलान्तर्गते.....मासोत्तममासे.....मासे.....पक्षे....तिथौ....वासरे..मुनि-आर्यकाणां-श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ (हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादि-परमेष्ठिनः पूजाविधिं विसर्जनं करोमि। अपराध-क्षमापणं भवतु। यः यः यः।

(उक्त मंत्र पढ़कर ठोने पर पुष्प क्षेपण कर विसर्जन करें।)

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप)

===

गुणालय में
एकाध दोष कभी
तिल सा लगे

जाकर आते हैं (भजन-स्तुति)

जाकर आते हैं, भगवन! जाकर आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥

सदा आपके चरणों में हम, रहना तो चाहें।
किन्तु पाप की मजबूरी से, हम ना रह पाएँ॥
पाप घटाने पुण्य बढ़ाने, फिर से आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥१॥
दुनियाँ हमें कभी ना रुचती, इसे छोड़ना हैं।
माया ममता के हर बंधन, हमें तोड़ना है॥
सदा आपके साथ रहें ये, भाव बनाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥२॥
यह आना-जाना भगवन् अब, हमें न करना है।
सदा आपकी छत्र-छाँव में, अब तो रहना है॥
जीते मरते हरदम 'सुव्रत', भूल न पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥३॥
दर्शन बिना आपके प्रभु हम, चैन न पाएँगे।
बिना आपके नयन हमारे, आँसु बहाएँगे॥
बिन माता के बच्चे जैसे, रह ना पाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥४॥
सदा आपके दर्शन पाएँ, यही भावना है।
चरणों में स्थान मिले बस, यही प्रार्थना है॥
अपने जैसा हमें बना लो, आश लगाते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥५॥

===